THE CITIZEN OF INDIA

BY

SIR W. LEE-WARNER, K.C.S.I., M.A.,

FELLOW OF THE UNIVERSITY OF BOMBAY, AND FORMERLY ACTING DIRECTOR OF PUBLIC INSTRUCTION IN BERAR AND BOMBAY, AND MEMBER OF THE EDUCATION COMMISSION, 1882-83.

Hindi Edition.

MACMILLAN & Co., LIMITED,

LONDON, BOMBAY AND CALCUTTA.

1901.

Price 10 Annas.

हिन्दुस्थान की प्रजा के कर्त्तव्य कर्म.

अर्थात्

सर डब्ल्यू ली-वार्नर के अङ्गरेजी ग्रंथ का

अनुवाद.

प्रयाग के विश्वविद्यालय के फ़ेलो,

ग्रेटब्रिटन और आयर्लैण्ड की रायल एशियाटिक सोसाइटी के मेम्बर,

बङ्गाल की एशियाटिक सोसाइटी के मेम्बर.

श्री अवधबासी भूप उपनाम लाला सीताराम बी. ए.

का रचा हुआ.

मैकमिलन एण्ड को, लिमिटेड,

लण्डन, बम्बई, और कलकत्ता.

सन् १९०२.

मूल्य प्रति पुस्तक ॥=) आना

भूमिका

महारानि श्रीजानकी, महाराज श्रीराम।
भक्त प्रजा मोहि जानि निज, कीजिय पूरन काम॥

सन् १८९९ ई० के फ़रवरी महीने में श्रीमान टामस क्राम्पटन लिविस बहादुर एम. ए. डैरेक्टर, पबलिक इंस्ट्रक्शन का एक आज्ञापत्र इस बिषय का मुझे मिला कि सर ली-वार्नर की अंग्रेज़ी पुस्तक "सिटीज़न आफ़ इण्डिया" का सरल हिन्दी भाषा में ऐसा अनुवाद होना चाहिये जिसे सब लोग समझ सकें। उस समय तक मैं ने इस अनोखे ग्रंथ को नहीं देखा था। मेरी प्रार्थना पर श्रीमान ने एक प्रति भी भेज दी। यद्यपि उन दिनों मेरे पास काम इतना था कि दम मारने की छुट्टी न थी तौ भी इस ग्रंथ को एकही बार में आद्योपान्त पढ़ गया। उस समय हर्ष और ग्लानि का पार न रहा। हर्ष का कारण लिखने की आवश्यकता नहीं। जो लोग इस ग्रंथ को पढ़ेंगे उनको भी ऐसाही अनुभव न हो तो मुझे बड़ा आश्चर्य्य होगा और यही अनुमान होगा कि या तो ऐसे लोग मूढ़ हैं या हठधर्म्मी हैं और उर्दू कवि के इस वाक्य को अपने उदाहरण से पुष्ट करते हैं:—

मसहफ़ी सूद नसीहत क नहीं आशिक़ को।
मैं न समझूं तो भला क्या कोइ समझाये मुझे॥

ग्लानि इस बात की हुई कि सुख का वर्णन उसी के मुंह से अच्छा लगता है जो इसका अनुभव करता हो। उपकृत जन आप अपनी कृतज्ञता न जनावैं तो उनका दोष है

पर वाहरे! हमारा देश और हम कि जब बम्बई के एक अंग्रेज़ी अफ़सर ने हम को सुझाया तो हमने देखा कि अंग्रेज़ी राज्य कैसी उचित रीति से इस देश में स्थापित हुआ है और उस से हम को क्या लाभ हुए हैं और आज दिन हो रहे हैं ॥

इस अनुवाद के विषय में इतना और कहना चाहता हूं, मैं ने भाषा गद्य पद्य में कुछ ग्रंथ और भी लिखे हैं जिन महाशयों ने वे ग्रंथ देखे हैं उन्हें इस ग्रंथ की भाषा देखने से कदाचित यह अनुमान होगा कि इसका लेखक कोई और ही है। परन्तु भेद जान बूझकर रक्खा गया है ॥

पहिला कारण श्रीमान् डाइरेक्टर की आज्ञा है और वह यह है कि भाषा ऐसी हो जिसे सब लोग समझ सकें। हिन्दुस्थान में मुसलमानी राज को आए इतने दिन हो गये कि अब जिन देशों में हिन्दू राजा भी हैं वहां भी नाजिम, फौजदार, हाकिम, अदालत आदि को छोड़ पुराने संस्कृत शब्द कोई जानताही नहीं। अधिकरणिक किस चिड़िया का नाम है बहुधा वह लोग भी न बता सकेंगे जो पंडित बने फिरते हैं ॥

चन्दवर्दाई ने अपने पृथिराज चौहान रासौ में सिपाही को बग्गी लिखा है (करै कुण्डली तेग (تیغ) बग्गी प्रमानम्) आज दिन सारे देश में घोड़े गाड़ी के सिवाय बग्गी का दूसरा अर्थ न समझा जायगा। इसी बिचार से प्रचलित उर्दू शब्दों की जगह संस्कृत शब्द नहीं रक्खे गये। इस ग्रन्थ का विषय भी अपूर्व है। इस बिषय में भाषा में यह पहिलाही ग्रन्थ हो तो अचरज नहीं। और यद्यपि इस में मूल के भाव बदलकर आशयही प्रगट करने का यत्न किया गया है फिर भी यह अनुबाद मात्रही है। समझदार पाठकजन इसको पढ़ते समय इस बात का ध्यान रक्खेंगे ॥

विषयानुक्रमणिका।

पहिला अध्याय।

दूसरा अध्याय।

तीसरा अध्याय।

चौथा अध्याय।

पांचवां अध्याय ।

छठवां अध्याय ।

सातवां अध्याय ।

आठवां अध्याय ।

नवां अध्याय ।

दसवां अध्याय ।

ग्यारहवां अध्याय ।

बारहवां अध्याय ।

चित्र सूची ।

शुद्धिपत्र ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
भूमिका	२३	। है	है । ... ...
४	१९	जिसकी	जिनकी ... ...
६	१७	उनके	उनकी ... ...
,,	१९	गांवँ में, कुल ...	गांवँ में कुल ...
८	,,	चौकीदार ...	और चौकीदार ..
१३	७	थे	थीं ... ...
१४	१९	गांव	गावों ... ...
१७	१	कहा जाय। अगले ...	कहा जाय अगले ...
२३	५	जायगे	जायँगे ... ...
,,	१२	नित्त	नित ... ...
,,	१३	जेसे	जैसे ... ...
२५	६	के	की ... ...
२७	११	आबादी बहुत ... कम है	आबादी भी बहुत कम है
३८	५	कमेटियां के ...	कमेटियों को ...
४५	१६	कलपान	कल्यान.. ...
४७	१७	के शरण	की शरण ...
५८	१२	के समझ	की समक्ष ..
५९	३	पर	और ... ...
,,	४	बीते ज़िलों ...	बीते पर जिलों ...
,,	१३	सूबे के या राज्य के ...	सूबेकी या राज्यकी

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६०	१८	उठाना	उठानी ... ...
६४	५	जहां तक	पर जहां तक ..
६५	३	येह	ये ... ...
६७	१२	के	की ... ...
,,	१३	क़नून	क़ानून .. ...
६८	१२	चलाना	चलानी ..
७०	५	त्रिटिश	ब्रिटिश ..
७३	९	राजा	राज्य .. ...
८४	१९	बेटे के	बेटे टीपू सुल्तान के
८८	७	कैरा	किरकी .. ...
९५	२	पराना	पुराना ... ..
१००	१४	क्रिसब्रोर्न... ...	फ़िशब्रोर्न ..
१०२	२	चीफ़ कमिश्नर ..	लेफ़्टिनेंट गवर्नर ..
१०३	११	२८७९००००.. ...	२८७९०.०
१०४	७	क्षत्रफल	क्षेत्रफल ..
,,	१३	पार्ट ब्लेयर ..	पोर्ट ब्लेयर ...
१०९	६	करैं	करे ... ...
११३	१	के	की ... ...
,,	१०	हेस्टिङ्गस जो ... लार्ड म्वायरा ...	लार्ड म्वायरा जो मार्क्विस आफ़हेस्टिङ्गस
१२०	१	५१-मध्य हिन्दुस्थान	मध्य हिन्दुस्थान ...
१२१	८	वुदेलखण्ड ..	बुंदेलखण्ड ...
१३२	८	के	की ... ...

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३२	११	जितने	जितनी ... ...
,,	१२	बड़े	बड़ी ... ...
,,	१३	बड़ा	बड़ी ... ...
१३३	८	देनेवाले ...	देने वाली लोकल गवर्नमेंटों के
१३४	७	य ांकागवर्नमेंटरोका	यहांकीगवर्नमेंट रोकी
,,	१५	का	की ... ...
१३६	६	यह लोग	ये ... ...
,,	७	जानते हैं और उसी के	जानतीहै और उसीकी
१३८	१	करता है	करती है ... ...
,,	११	करते हैं	करती हैं ... ...
,,	१२	करता है	करती है ... ...
,,	१४	रखते हैं	रखती हैं ...
१४१	१	करता	करती ... ...
१४१	२	मिलता जुलता रहता है	मिलती जुलतीरहती है
१४२	३	यूरोपियन ड्रेम.शिमला	चायका बगीचा ...
१४३	६	टंढो	ठंढी ... ...
१४६	१	जनाता	जनाती है ...
१४७	४	आदि	आदि का ...
१४८	१०	देता	देती ... ...
,,	११	बनाता	बनाती ... ...
,,	१२	जांचता	जांचती ... ...
,,	१३	देता	देती ... ...

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४९	५	करता	करती .. ...
,,	८	सकता	सकती ... ...
,,	१०	देखता	देखती ... ...
,,	१२	मगाता	मँगाती ... ...
,,	१३	बताता	बताती ... ...
,,	१९	करता	करती .. ...
१५०	५	मूबे अपने ...	मूबे जो अपने ...
,,	१०	करता	करती ... ...
,,	१३	देता	देती ... ...
१५१	१	करते	करती ...
,,	२	पूछे नही जाते थे ...	पूछी नहीं जाती थीं
,,	९	स्टाम – ...	स्टाम्प ... ..
१५२	१८	का ... का	की .. की .. ..
१५३	१९	पड़ता	पड़ती ... ..
१५५	१०	औषधी	औषधि .. ...
१५६	९	का	की ... ...
१५७	,,	"पेश"	पेश ... ...
१६३	१६	और उन ...	और ये उन ..
१६५	१	के साखी... ...	की साक्षी ...
१८०	२	... ...	हिन्दुस्थान का व्यापार और उद्यम
	३	१२–हिन्दुस्थान ... उद्यम	१२-भिन्नभिन्नलोगोंका भिन्नभिन्न काम करना

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८१	९	गाड़ी या रेलमें और वे	और वे गाड़ी या रेल में
१८४	१९	८ अरब ...	५० करोड़ ...
१९०	१७	एक लाख ८७ हजार	एक करोड़ ८७ लाख
२००	२	शांति रखने वाली शक्तियां .. .	देश की शांति ...
,,	३	८०—देश की शांति...	८०-शांति रखनेवाली शक्तियां ...
२०१	१२	अति वृष्टिहा ..	अति वृष्टि ही ...
२०९	७	देखा	देखी ... ...
२१८	१६	के	की ... ...
२२५	५	विहिस्त	विहिस्त – ...
२३१	३	मारक्वीसआफ आया	लेडी डफरिन ..
२३८	१	खच	खर्च ... ...
२६५	१	काल	अकाल .. ...
२७२	५	ठीक २	ठीक ठीक न ...
२७८	७	है "	है ... ...
,,	१३	सकता है ...	सकता है " ...
२८०	१६	कुलिसियें ..	कुलियों ... ...
२८८	१९	भाग्य कभी ...	भाग्य में कभी ...
२९२	३	१० लाख ...	पचास लाख ...
२९३	८	है	हैं ... ..
२९८	१७	पर	और ..
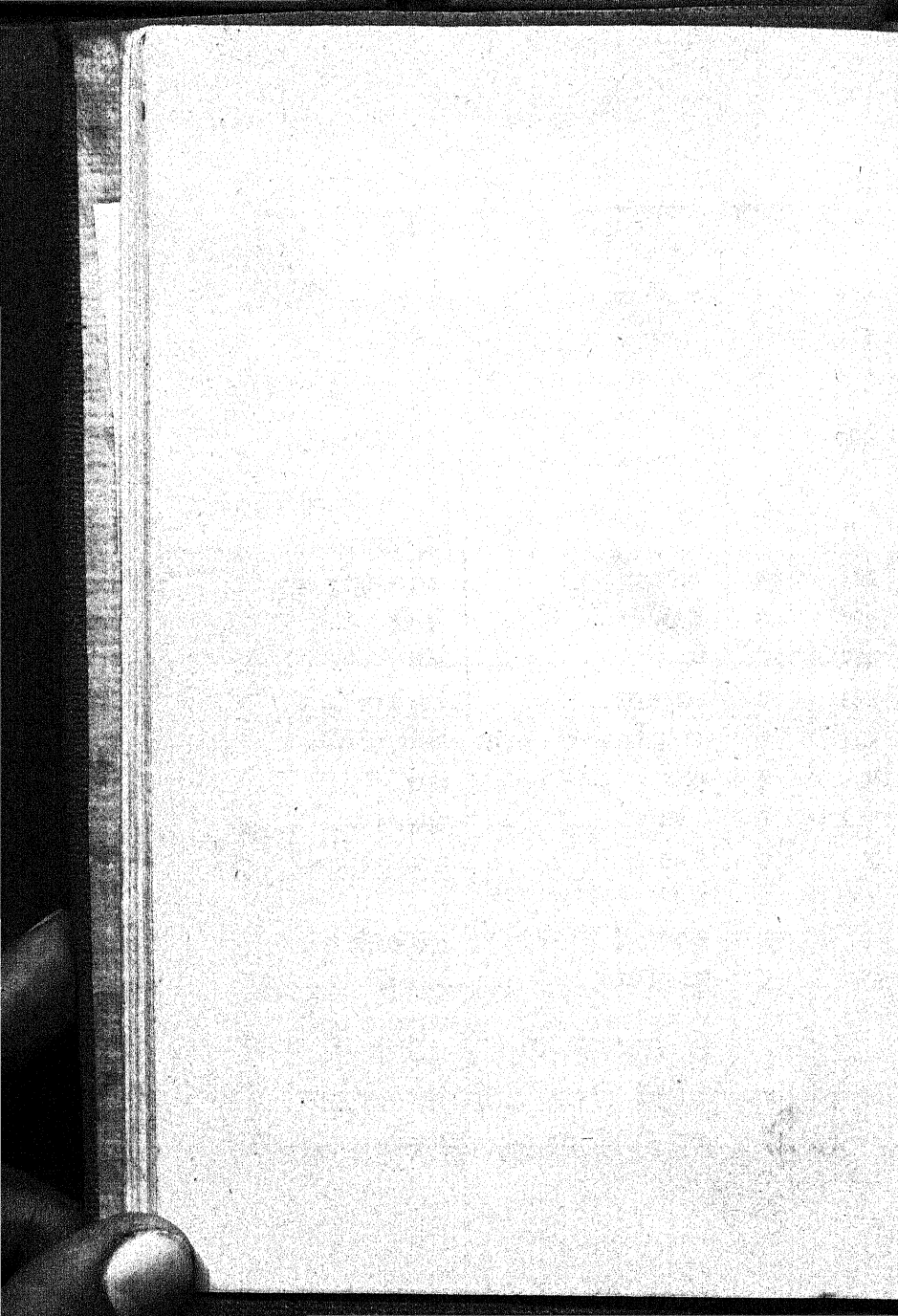
हिन्दुस्थान की प्रजा के कर्त्तव्य कर्म॥

पहिला अध्याय।

गांवँ।

सब का हित।

हमारे देश का एक एक बच्चा जिसने इतनी भी विद्या सीखी है कि इस किताब को पढ़ सकै, ये दो मोटी बातें समझ सकता है। पहिली यह है कि एकही देश की प्रजा होने के लिये जो नाता है वह मत में भेद या रहन सहन चाल चलन में अन्तर के कारणों से टूट नहीं सकता और न घट सकता है। दूसरी यह है कि जिस समाज में कई तरह के लोग रहते हों उसमें मेल जोल तभी बढ़ सकता है जब लोग अपने पड़ोसियों के साथ अपने

कर्त्तव्य कर्म समझें और उनके दुख सुख के साझी हों और एकही देश की प्रजा होने के जो कर्त्तव्य हैं उनके समझने का यत्न करैं।

जो लोग एकही देश में रहते हैं उन्हें चाहिये कि सब मिलकर सब के हित के लिये काम किया करैं। बहुतसी बातें ऐसी हैं जिनमें सब का हित है और जो कोई यह पूछे कि सब का हित किसे कहते हैं तो उसे चाहिये कि पहिले अपनी देह को ध्यान से देखै॥

ईसा से ४०० बरस पहिले यूनान देश में सुक्रतु नामी एक विद्वान हुआ था उसने इस बात को भली भांति समझाया है। उसने कहा है "सब से अच्छा राज्य वह है जिसमें सब से अधिक लोग एकही बात के लिये ऐसे बचन बोला करें "यह मेरा है" और "यह मेरा नहीं है"। और फिर उन्हों ने इस विषय को यह उदाहरण देकर समझाया है। "देखो जब किसी की अंगुली में चोट लगती है तो सारी देह आत्मा को मुख्य मानकर एक राजा के

अधिकार में मिले हुए कई राज्यों की तरह उस चोट को सहती है और उसका दुख बांट लेती है और हम सब लोग कहते हैं कि उस आदमी की अंगुली में दर्द है"। मनुष्य सारे अङ्गों का साथ देता है और किसी अङ्ग को दुख हो तो आप भी दुखी हो जाता है। जो लोग एकही देश में एकही राजा के राज्य में रहते हैं उन की गति भी ऐसीही है अगर एक गांव को दुख हो तो सारे सूबे को दुखी होना चाहिये और एक सूबे के दुख में सारे देश को दुख मानना चाहिये। जिसमें एक समाज का हित अनहित है उसी में सब का है। और सब से सम्हला हुआ राज्य वही है जिसमें सब से अधिक प्रजा एक दूसरे की भलाई बुराई को अपनी भलाई बुराई मानैं॥

२—हिन्दुस्थान की सब प्रजा में परस्पर मेल की सामग्री॥

जैसे शरीर के अङ्ग अलग अलग काम करते हैं और रूप में और गुण में भिन्न भिन्न

हैं तो भी सब मिलकर शरीर के सुख और शरीर के बचाव का उपाय करते हैं, इसी रीति से जिस देश में बहुत से लोग रहते हैं वहां मत भेद और रहन सहन के भेद के साथ ही साथ मन का मेल भी रह सकता है। यूरप के देशों में शरीर और चित्त की स्वतंत्रता का बड़ा बिचार है जिनका गुण यह है कि बड़े २ समाजही नहीं बरन कुल और एक एक मनुष्य अपने पड़ोसी से फटका फिरै। पर इस अलग होने के स्वभाव को रोकने के दो हेतु हैं एक देस की ममता और दूसरा आईन क़ानून की मर्यादा रखने का बिचार जो सब के मन में व्याप रहा है। हिन्दुस्थान में यह दोनों बन्धन (देश की ममता और क़ानून की मर्यादा) पहिले न कोई सीखता था न किसी को सिखाता था पर इन दोनों की जगह यहां के रहनेवालों में युग युगान्तर से ऐसे ऐसे आचार व्यवहार और ऐसा स्वभाव है जो मेल की जड़ है और जिसकी पच्छिमवालों में कसर

है। अपने राजा या गांवँ के ठाकुर से भक्ति रखना, कुल के बड़े बूढ़े की आज्ञा मानना, धर्म में दृढ़ता और गांव की समाज, इन बातों ने हिन्दुस्थान में अपना धर्म समझनेवाली प्रजा बनाने की नेव डाली है॥

बहुत दिनों से लोगों ने समझ रक्खा है कि अपने कुल में, धर्म की समाज में और गांवँ में मिल जुलकर काम करने में बड़े गुण हैं। बहुधा लोगों की यह बान पड़ गई है कि अपने से आगे बढ़कर भी देखा करें और यह समझें कि अपने कुल के बाहर भी एक बड़ी समाज है जिसके हम लोग अङ्ग हैं। जाति और गांवँ की समाज ने लोगों के काम काज में परस्पर सहायता की रीति चला दी है और उनको यह समझा दिया है कि अगर गांवँ में एक जाति के लोग एक ऐसी वस्तु बनावें या ऐसा काम करैं जिसके बिना और जातियों का काम नहीं चल सकता, तो दूसरी जातियों को भी चाहिये कि ऐसा यत्न करैं जिसमें पहिली जाति

का कोई काम बन्द न रहे, और सब बातों से उस जाति का निर्वाह होता जाय और इसी विचार से जिसके बिना पहिली जातिवालों का निर्वाह नहीं हो सकता वह उनको दें या उनके लिये करते रहैं॥

एक दूसरे की सहायता करने का स्वभाव और सब लोगों का यह विचार कि देश के राजा और परमेश्वर के आश्रित रहना और उन पर भरोसा करना चाहिये यह ऐसी बातें हैं जो आज के दिन हिन्दुस्थान के रहनेवालों को आपस में मेल करने के लिये प्रवृत्त करती हैं। पर कुल जाति और धर्म के मेल में यह अवगुण है कि मेल मिलाप बहुत दूर फैलने नहीं पाता। हिन्दुस्थान के लोग दान पुण्य के लिये प्रसिद्ध हैं, पर यह दान पुण्य यूरपवालों का सा नहीं है और जाति और धर्म के बीच ही में सिमिट कर रह जाता है। देश की प्रजा के कर्त्तव्य और अधिकार उनके समाज या जाति से बहुत आगे बढ़ा हुआ होना चाहिये. जैसे गांवँ में, कुल वैसेही सूबे में गांवँ और

राज्य में सूबे समा जाते हैं और प्रजा होने का अर्थ यह है, कि "वह सारे राज्य का एक अङ्ग है और इस अङ्ग होने के जो कर्त्तव्य और अधिकार हैं वह उसके साथ लगे हुये हैं." अगर कोई प्रजा यह जानना चाहे कि हमारे देशी भाइयों के साथ हमको कैसा बर्ताव करना चाहिये तो उसको उचित है कि पहिले वैर विरोध छोड़ दे और यह समझे कि कुल जाति और गांवँ के साथ उसके जो कर्त्तव्य हैं उनके सिवाय उस सारे देश का भी ऋण उसके ऊपर है जिसकी प्रजा कहलाने का अधिकार उसको मिला है ॥

३—गांवँ की समाज ॥

जैसे निरोग शरीर में चारों ओर लोहू दौड़ता है वैसेही जब समाज सुधरी हुई है तो लोगों के रहन सहन काम काज की धारा कुल से गांवँ में, गांवँ से सूबे में और सारे राज्य में चलती रहनी चाहिये । अगले समय में हिन्दुस्थान में एक गांवँ को दूसरे गांवँ से कुछ

सम्बन्ध न था और उनके रहनेवालों के व्यवहार ताल के पानी की तरह बंधे हुए थे। गांवँ की समाज में राज्य का पूरा सामान थोड़ा थोड़ा सा रहा करता था। एक गांवँ के भीतर भिन्न भिन्न जाति और धर्म के लोग रहते थे। ये नित्य के काम काज में एक दूसरे की सहायता करते और जो कभी किसी दूसरे गांवँ या सूबे से बैरी आ जाता तो सब मिलकर अपने घरों के बचाने का यत्न करते थे। राज्य और राजा के कर्त्तव्य जो कुछ ये जानते थे सब उनकी आंखों के आगे था। गांवँ का ठाकुर या मुखिया हाकिम हुआ करता था वही सर्कारी मालगुज़ारी तहसील करता, पुलिस का काम करता, फ़ौजदारी का फ़ैसला करता, और दीवानी का जज भी बन जाता था। गांवँ का पटवारी और एक और कोई इन कामों में उसकी सहायता करता था। इस राज्यप्रवन्ध में और अधिकारी ये थे. सोनार जो रुपया परखता, चौकीदार या गुड़इत जो चोरों का पता

लगाता, चिट्ठी पत्री ले जाता, गांवँ की हद्द की रखवाली करता, और अपराधियों को पकड़ लाता। ये तो उहदेदार हुए इनके सिवाय और गृहस्थ थे जो समाज का काम करते, पड़ोसियों की भलाई बुराई में अपनी भलाई बुराई समझते, और जो काम करते उसके बदले खेतों से अनाज पाते। यह लोग लोहार, बढ़ई, कुम्हार, कहार, भङ्गी, नाई, धोबी, कञ्जड़ और चमार थे। गांवँ और मन्दिर का ख़र्च चलाने के लिये खेत या घरों पर एक टैक्स लगा दिया जाता था जिसे कहीं कहीं बाछ कहते हैं। गांवँ के छोटे राज्य का यह ब्यौरा एक ऐसे ग्रन्थकार ने लिखा है जो सन् १८२० ई० में दक्खिन देश के रहनेवालों के रहन सहन को भली भांति जानता था॥

४—पुरानी और आज कल की दशा॥

पिछले सौ बरस में हिन्दुस्थान में ऐसे अदल बदल हुये हैं जिनसे हिन्दुस्थानियों के चलन ब्यौहार में बड़ा अन्तर हो गया है। गांवँ का

रूप तक बदल गया है। जिन नियमों के कारण लोग गांवँ से अलग नहीं हो सकते थे वे नियमही उठा दिये गये और गांवँ के हाकिमों के हाथ में जो बड़े बड़े अख़्तियार थे वह सब बंट गये। अगर एक गांवँ की उस दशा पर विचार करो जो सन् १८२० ई० में थी तो तुम देखोगे कि उसके चारों ओर या तो कोट बना हुआ है या कांटेदार पेड़ों की झाड़ी है। देशी रजवाड़े और हिन्दुस्थान के सिवाने के देशों में गांवँ अब भी इसी भांति रक्षित हैं मानों उन्हें रात को शत्रु के धावे का डर है। इसमें सन्देह नहीं कि कोट और बारी से चोरों की रोक हो जाती है पर उनसे हवा का आना जाना भी रुकता है और गांवँ की सफ़ाई में बाधा पड़ती है। इसी सफ़ाई और रहनेवालों की तन्दुरुस्ती के विचार से अहमदाबाद का कोट गिरा दिया गया, फाटक अभी तक खड़े हैं। गांवँ के भीतर का प्रबन्ध भी बाहर के प्रबन्ध के समान था। कारीगरों को अपना
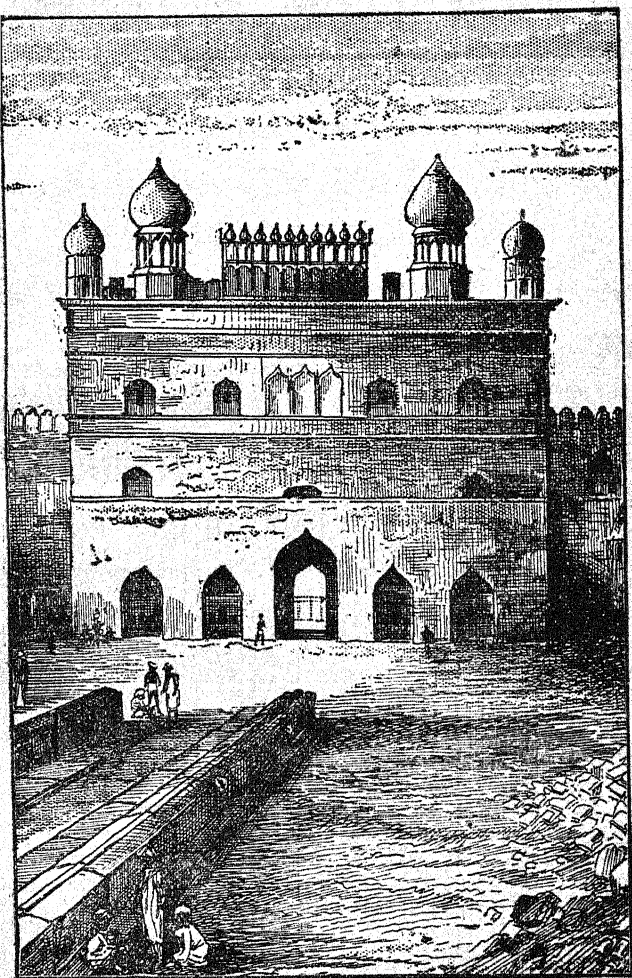
दिल्ली के राजभवन का फाटक ।

घर छोड़ना कठिन था। घर पर गांवँ के हाकिमों की बेगार किया करते थे और जब किसी और ने काम लिया तो उस काम के बदले उन्हें फ़सल के पीछे कुछ अनाज दे दिया करता था। एक गांवँ को छोड़कर दूसरे गांवँ को तभी जा सकते थे, जब कभी अकाल पड़ता और खेती से अनाज मिलने की आशा न रहती। गांवँ के हाकिम लोग गांवँवालों पर बड़ी हुकूमत दिखाया करते थे। गांवँवालों को अपना और अपने खेतोंही का ध्यान रहता था और मुखिया जैसा न्याय करता वही न्याय समझा जाता था। देश से गांवँ कई प्रकार से अलग था। आज दीवारें गिरा दी गई हैं और झांखड़ काट डाले गये हैं। डाकिया सूबे की राजधानी से पत्र लाता है और गांवँवाले नौकरी और व्यौपार के लिये जहां चाहैं जा सकते हैं। ज़िले की और क़िस्मत की कचहरियां खुली हुई हैं, और छोटा से छोटा आदमी उन में जाकर नालिश कर सकता है॥

५—पुरानी रीति के गुण ॥

एलफिन्स्टन साहब जिनके नाम का बड़ा कालिज और मदर्सा बम्बई में अब तक जारी है और जो इस देश के गांवों की समाज के गुणों को बहुत मानते थे, यह लिख गये हैं. "गांवँ की समाज अच्छे राज्यप्रबन्ध के योग्य न थे" पर उन्हों ने यह भी लिखा है, कि "राज्यप्रबन्ध बुरा हो तो उसके दोष मिटाने के लिये इस से बढ़कर दूसरा उपाय भी नहीं है बुरे राज्य प्रबन्ध की बे परवाही और कमज़ोरी से गांव को हानि नहीं पहुंच सकती और ज़ुल्म की भी रोक हो सकती है"। इसे सब मानेंगे कि गांव की समाज का जो चित्र हमने खींचा है वह देखने में सोहावना मालूम होता है। इस से गांववाले परस्पर सहायता करना सीखते थे, अपनी अपनी जाति और धन्धे के अनुसार एक दूसरे का काम करते, एक दूसरे के आश्रित बने रहते और विपत्ति में एक दूसरे का साथ देते थे। जब देश में

गड़बड़ मचा हुआ था और राजा अपनी प्रजा के बचाने के लिये पुलिस नहीं रखता था तो लोग अपनी रक्षा का प्रबन्ध आप कर लेते थे। माल के हाकिम रैअत से अनुचित कर मांगते तो गांवँ के लोग सब बिगड़ जाते थे। गृहस्थों में लड़ाई होती तो गांवँ के लोग समझा बुझाकर उनको शान्त कर देते थे और मुखिया को यद्यपि सब कुछ अधिकार था तौ भी गांवँ के सब लोग मिलकर उसको अनुचित कर्मों से रोकते और उस से काम लेते थे। सूबे एक राजा के हाथ से दूसरे राजा के हाथ में चले गये, पर गांवँ ज्यों के त्यों बने रहे। कभी कभी राजा के कर्मचारी जितना बन पड़ता था उनका अनाज उठा ले जाते और लूट लेते थे. पर गांवँवालों का बोना काटना बन्द न होता था॥

६—पुरानी रीति के दोष॥

इस चित्र का एक पक्ष और भी है जो ऐसा सोहावना नहीं है। राजा से गांव की कोई रक्षा

नहीं होती थी और विपत्ति में उनको सहा-
यता न मिलती थी। गांवँवालें में न कोई स्वार्थ
की भावना थी न एक दूसरे से होड़ाहोड़ी से
बढ़ने का कोई बिचार था जिस से उनको
उत्साह होता, या वे अपनी दशा सम्हालने की
इच्छा करते। अगले दिनों में हिन्दुस्थान के
गांवँ की जो दशा थी उसको इन बिषयों पर
ध्यान देकर बिचार करके देखना चाहिये।
राजा का यह धर्म है कि भीतर के उपद्रव
और बाहर के धावे से अपनी प्रजा की रक्षा
करे। पर यह बात तभी हो सकती है जब
राजा सारे देश की सामग्री अपनी सहायता
के लिये इकट्ठी रक्खै। अलग अलग गांवँ अपने
अपने उद्योग से किसी बड़े वैरी को हरा नहीं
सकते। यह बात हिन्दुस्थान ने खोकर सीखी
है, जब तैमूर या नादिरशाह ऐसे लोग आये
और राजधानियां मिट्टी में मिल गईं और
गलियों में लोहू की नदी बह चली। जब पर-
देशी सेना ने दिल्ली या और किसी बड़े शहर

पर धावा मारा तो राह में जितने गांवँ पड़े उनको भी लूटती मारती चली। माल और खेतों का नाश किया और जोती बोई धरती को ऊसर बना दिया। देशी राजाओं की पलटनें राजधानी के बचाने में लगी रहीं पर गांवँ उनके नाम को रोते रहे। जब लड़ाई दंगे के दिन न थे तब भी घर का रुपया दिल्ली, आगरा, फतेहपुर सीकरी, बीजापुर और और बड़े बड़े शहरों के संवारने में खर्च किया जाता था, और सड़क नहर और ऐसे काम जिन से प्रजा को लाभ होता. उन में एक पैसा भी न लगता था। कभी कभी परदेशी बैरी न रहता था तो पिंडारी या इसी देश के रहनेवाले पक्के लुटेरे गांवँ को दुःख देते थे। गंटूर की दशा जो पिंडारियों के हाथ से बचने के लिये रहनेवालोंही के हाथों से भस्म कर दिया गया था, दक्खिन के और गांवों की भी हुई थी। अकाल या महामारी के दिनों में दुखी प्रजा के जान माल बचाने के लिये राज्य से कोई प्रबन्ध न होता था। कहां तक

कहा जाय। अगले दिनों के राज्यों में गांवँ की न रक्षा होती न सहायता होती थी और इसी कारण देश की ममता किस चिड़िया का नाम है कोई जानता भी न था। देश के राजा लोग अपनी प्रजा को अपने बाल बच्चे न समझते थे तो इसका परिणाम यही था कि लोग अपने गांवँ के ठाकुर और अगुआ को ऐसा मानते और देश की परवाह न करते थे॥

गांवँ के भीतर मिहनत करने या अपनी दशा सुधारने की आवश्यकता नहीं समझी जाती थी। किसान लोग देखते थे कि उनकी फसल दूसरा कोई काट ले गया, उनके खाने को थोड़ा सा छोड़ गया चाहे उन्हों ने कितनीही मिहनत खेती में क्यों न की हो। कारीगरों को अपने काम के बदले राजा से कुछ पाने की आशा न थी, आपस में एक दूसरे के लिये काम करते तो थोड़ा सा कुछ पा जाते थे। व्यौपार करनेवालों को बहुधा अपना माल बंधे भाव पर बेचना होता था और देश में

बन्दोबस्त न होने और राहों में लूट मार के भय से ब्यौपारी घर से दूर नहीं जा सकते थे। यह सब कुछ था तौ भी गांवँवाले मिले रहते थे और जब कभी कोई बिपत्ति पड़ती तो सब हवा के आगे छोटे पेड़ों की तरह अपना सिर झुका देते थे। नाते और परस्पर बचाव के बिचार से गांवँ की समाज कड़े बन्धन से बंधी रहती थी, अलग रहती थी तौ भी आपत्ति में पड़कर सम्हल सकती थी। गांवँवालों की जैसी दशा ऊपर लिखी गई उस से समझोगे कि यह लोग मानों सदा बैरी से घिरे रहते थे। पर जो उलट फेर देश में हुये उन से गांवँ बचा रहा। देश के जो नाम को राजा थे वह बदलते रहे पर गांवँ की रहन सहन स्थिर रही और उस में उलट फेर न हुआ। हिन्दुस्थान के गांवँ के झोपड़ों में सब से दरिद्री रहनेवाला इस बात पर घमगड कर सक्ता था कि "सैकड़ों बरस पहिले जिस अमराई को हमारे पुरखों ने अपने रहने के लिये लगाया था उसी के तले अब हम भी रहते हैं"॥

७—हिन्दुस्थान का गांवँ ॥

हिन्दुस्थान का गांवँ भीत और बारी से घिरा हुआ अब छोटा राज्य सरीखा न रहा। अब यह सूबे और राज्य का एक टुकड़ा है। इसके बाहरी बंधन टूट गये और रहनेवाले अब संसार को देख रहे हैं क्योंकि अब उनको बिस्वास है कि गांवँ की रक्षा की चिन्ता का काम न रहा। जहां जिसका जी चाहे चला जाता है और जहां जाता है वहीं उसको राजा का प्रबन्ध देख पड़ता है। एक एक किसान जानता है कि कितना पोत देना चाहिये और मिहनत से जो लाभ होगा वह उसी का धन है। नाज की बटाई में झगड़ा बखेड़ा नहीं होता और बटाई और कनकूत के लिये सर्कारी नौकर को कुछ घूस देने का काम नहीं। ज़मींदार और किसान सब जानते हैं कि इतना रुपया उन से लिया जायगा और सर्कार भी उतनाही रुपया लेती है जो कागज़ में लिखा हुआ है। जो लोग खेती नहीं करते और मज़-

हिन्दुस्थानी गाँव।
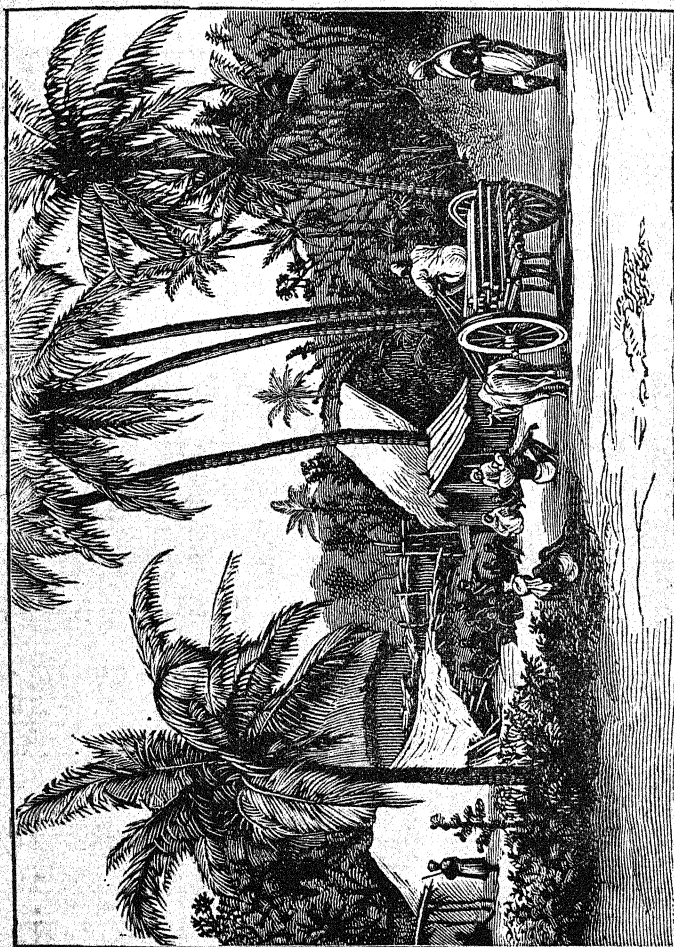
दूरी से अपना पेट पालते हैं और जो गांवँ में बढ़ई या लोहार का काम करते हैं उनका जहां जी चाहे वहां चले जायँ और उन में से बहुतेरे ऐसे हैं जो बड़े बड़े शहरों में महीनों काम करते हैं और बरसात में अपने घर लौट आते हैं। गांवँ के बनियें बड़े बड़े महाजनों के पास अपना माल पहुंचाते हैं और ये महाजन लोग जहां दाम ज़ियादा मिला वहीं बेचते हैं। सब लोग समझते हैं कि सर्कार हमारी रक्षा कर रही है और झोपड़ियों के बदले अब लोग ईंट पत्थर के मकानों में रहते हैं। गांवँवालों के घरों को अब न चोर लूटते हैं और न बाहर के बैरी की सेना उजाड़ती है। जब यह लोग किसी काम काज से बाहर जाते हैं तो पक्की सड़कों या रेलगाड़ी से बड़े बड़े शहरों में पहुंच जाते हैं। पहिले लोग कुओं से पानी भरा करते थे। अब कहीं कहीं उनका भी काम नहीं। बहुतेरे गावों में नहरें और बम्बे निकले हैं और नहरों के द्वारा बड़े बड़े शहरों को राह

लगी है। गांवँ के मुखिया श्रौर पटवारी का श्रधिकार घट गया। सदर में दीवानी श्रौर फ़ौजदारी की कचहरियां सब के लिये खुली हैं। लड़के गांवँ के मदरसे में पढ़कर तहसीली मदरसों में श्राते हैं श्रौर यहां से ज़िला स्कूलों में पहुंच सकते हैं। गांवँ में जो लोग पैदा होते श्रौर मरते हैं उनका भी नक़शा बनकर सदर में पहुंचा करता है। जितना हिन्दुस्थान सर्कारी राज में है उस में ५३७९०१ गांवँ श्रौर शहर हैं श्रौर उन में २२१०००००० श्रादमी बसते हैं। एक एक गांवँ श्रलग है पर साथही श्रपने को एक बड़े राज्य का टुकड़ा भी समझता है॥

८—समझने की बात॥

जब यह समझ में श्रा गया कि किसी गांवँ की बुराई या भलाई दूसरे की बुराई या भलाई से लगी हुई है तो जो लोग लिख पढ़ सकते हैं वे यह जानना चाहेंगे कि इस बड़े राज्य की कल कैसे चलती है। यह तो जानतेही

हैं कि गांवँ ज़िले का एक टुकड़ा है और ज़िला सूबे का। अब यह समझना है कि सूबे कैसे बने हैं और सूबों का राज से क्या सम्बन्ध है। देश में घूमने से कभी ऐसा अवसर पड़ेगा जब हम किसी देशी रजवाड़े में चले जायँगे और वहां सर्कारी कचहरी और अदालत के अधिकार के बाहर हो जायँगे। यहां भी हम को भिन्न २ धर्म और जाति के लोगों के बीच में रहना है और जब हम यह समझ जांयगे कि इन लोगों के पुरखे हमारे देश में कैसे पहुंचे और इनके आने से क्या २ गुण आ गये तो हम लोगों का अपने पड़ोसियों से मेल बढ़ जायगा॥

और भी अनेक बातें नित्त की देखाभाली से बिचारने के योग्य समझी जायँगी, जेसे वह कल कहां से आई जो खान खोद रही है? या जिस से शहरों में कपड़े के पुतलीघर चलते हैं? इतने बड़े देश में दंगा बखेड़ा रोक कर सुख चैन कैसे रक्खा गया है? लोगों की आरोग्यता के लिये क्या उपाय किये गये हैं? ऐसे

ऐसे प्रश्न सब के मन में उठ सकते हैं और पढ़ने लिखने का लाभ यही है कि इन प्रश्नों का पूरा उत्तर मिले ॥

९—हमारा धर्म ॥

यह कोई न समझे कि इन प्रश्नों का उत्तर लेके हम क्या करेंगे। हमारी भलाई बुराई हमारेही उद्योग के आसरे है। हम लोगों की देह तन्दुरुस्त नहीं रह सकती जो सब अङ्ग मिलकर इसके सम्हालने का उद्योग न करें। ऐसेही राज्य भी नहीं चल सकता जब तक कि अपना कर्तव्य समझनेवाली प्रजा उसकी सहायता न करे। राजा के साथ अपना कर्तव्य निबाहने के लिये यह बात आवश्यक नहीं है कि हम लोग उसके नौकर हों। हम लोग कभी २ सुनते हैं कि पुलीस ने घूस लिया, किसी हाकिम ने न्याय न किया, कोई रोग ऐसा फैला जिस को रोकते तो रुक जाता। पर घूस न दिया जाता तो कौन लेता? झूठी गवाही न दी जाती तो इंसाफ क्यों न होता, रोग क्यों फैलता

जो उसके न होने और रोकने के उपाय में भूल न की जाती? यह देश अपने समझदार रहनेवालों का कर्तव्य समझता है कि इंसाफ करने और कराने रोग का फैलाव रोकने में सब लोग अपने भरसक उद्योग करें॥

पुरानी रीति की गांवँ के समाज में लोग परस्पर सहायता करना और सब की भलाई के लिये यत्न करना उचित जानते थे। अब हमारा कर्तव्य गांवँ की हद से बढ़ गया है। परदेश या सूबे के रहनेवाले हम लोग अपना वही कर्तव्य अब भी क्यों न समझें। आनरेबिल पं० रानडे सी. आई. ई. जज हाईकोर्ट बम्बई ने दिसम्बर सन् १८९६ ई० में जो व्याख्यान कलकत्ते में दिया था उस में यह बातें कहीं थीं "राज्य इसी लिये होता है कि जो उसकी प्रजा है उसके आचार ठीक करे उसके सुख और धन को बढ़ावे और जो जो अच्छे गुण हम लोगों में हैं उन में एक एक को पक्का कर दे। बाहरी प्रबन्ध कैसाही अच्छा क्यों न हो

हम लोगों को यह सिद्धि नहीं दे सकता जब तक कि हम लोग आप अपनेही धर्म कर्म में अपनी भलाई के लिये उपाय करने का यत्न न करेंगे" ॥

१०—आगम ॥

अगर रानडे जी का उपदेश माना जाय तो हमको आशा है कि वह दिन आ जायगा जिसका वर्णन अंगरेज़ी कवि लिविस मारिस ने यों किया है। (अनुवाद)

मिटि है स्वारथभावना सकल कलह को मूल।
देशवासि रहि हैं नहीं इक इक के प्रतिकूल ॥
ह्वै है आपन-पौ जनित फूट-बैरतम नाश।
फैले सारे देश में मेल दिनेश प्रकाश ॥
जनक जानि जगदीश निज देशभूमि निज माय।
हिलमिलि सब रहि हैं सदा ज्यों भाई से भाय ॥

दूसरा अध्याय।

११—शहर ॥

गांवँ की दशा समझकर ज़िले का ब्यौरा जानने के लिये पहिले शहरों का कुछ हाल जानना चाहिये। गांवँ के रहनेवाले गंवइँये और शहरवाले क़स्बाती कहलाते हैं। शहरों की बस्ती के बिचार में दो बातों पर ध्यान देना चाहिये, पहिली यह है यूरोप के देशों में शहर भी बहुत हैं और उन में बहुत से लोग बसते हैं। पर हिन्दुस्थान में शहर भी कम हैं और उनकी आबादी बहुत कम है। और दूसरी यह है कि अङ्गरेज़ी राज्य में यह आबादी बहुत बढ़ गई है। इङ्गलिस्तान और वेल्स का क्षेत्रफल ५८३०९ बर्ग मील है और इन में २९००००००० आदमी बसते हैं। इन में १८५ ऐसे शहर हैं जिनकी आबादी

२० हज़ार से अधिक है और कुल नगरों में सब मिलाकर एक करोड़ पचपन लाख (१५५०००००) आदमी बसते हैं। देशी रजवाड़ों समेत सारे हिन्दुस्थान का क्षेत्रफल १५६०१६० बर्ग मील है पर इस में ऐसे नगर कुल २२५ हैं और इन में से रजवाड़ों में ३८ ही हैं। सन् १८९१ ई० की मरदुमशुमारी में इन २२५ नगरों की एक करोड़ चालीस लाख से भी कम आबादी थी। इसको हम इस तरह कह सक्ते हैं कि इंगलैगड और आयरलैगड दोनों टापुओं के एक भाग में आधे लोग ऐसे नगरों में रहते हैं जिनकी आबादी २०००० से अधिक है और हिन्दुस्थान की आबादी का बीसवां हिस्सा भी नगरों में नहीं रहता। यहीं हमको यह भी कह देना चाहिये कि सर्कारी राज्य में पिछले ५० बरस के भीतर नगरों की आबादी बहुत बढ़ गई है और रजवाड़ों के नगरों से यहां की आबादी घनी है॥

१२-शहरों से लाभ ॥

हिन्दुस्थान में शहरों के कम होने से किसी को अचरज हो तो अङ्गरेज़ों के आने से पहिले इस देश की दशा पर बिचार करने से उसका सन्देह दूर हो जायगा। तीन कारण ऐसे हैं जिन से लोग गांवँ छोड़कर शहरों में आकर बसते हैं और वे ये हैं, (१) अपनी रक्षा (२) ब्यापार और (३) अपने नगर के प्रबन्ध का अधिकार जो बड़े बड़े शहरों में लोगों को मिल जाता है। हिन्दुस्थान पर सैकड़ों बरस तक लगातार परदेसियों की चढ़ाइयां हुईं और घरू लड़ाइयां होती रहीं। इसका यह परिणाम हो सकता था कि लोग रक्षा के बिचार से गांवँ छोड़कर शहरोंही में रहते। पर लोगों ने दिल्ली और और शहरों की दुर्दशा देखी और यह समझ लिया कि "परदेसी धावा करनेवाले यहां राज करने को नहीं बरन लूटने को आते हैं। और वे कङ्गाल गांवँ को छोड़कर धनी नगरोंही पर गिरते हैं"। बड़े नगर बाहर के बैरी को तो

बुला लेतेही थे हाकिम भी उन्हीं पर ताक लगाये रहते थे श्रौर एक बादशाह की इच्छा या सनक के अनुसार उन्हें एक जगह छोड़कर दूसरी जगह बसना भी पड़ता था। दिल्ली को देखो कि कै जगह उजड़कर बस चुकी है। रक्षा का बिचार शहर के बसाने में श्रौर देशों में बहुत प्रबल रहा है पर यहां इस अस्थिरता के कारण लोगों के चित्त से उतर गया॥

बाहरी चढ़ाई श्रौर भीतर के लड़ाई झगड़ों में ब्यापार की बढ़ती कैसे हो सकती थी। रहने वाले इतनेही थे कि गांवँ बसाते श्रौर खेत जोतते। ऐसे शहर थे जिनके तांबे के बर्तन, रेशमी कपड़े, मलमल श्रौर रङ्ग बरङ्ग का काम हिन्दुस्थान के बाहर भी प्रसिद्ध था। पर न देश में उनकी मांग थी श्रौर न बाहर ले जाने का सुभीता था। श्राज कल इङ्गलिस्तान में किसी शहर की श्राबादी घटे तो तुरन्त यह मालूम हो जाय कि यहां का ब्यापार घट रहा है। अङ्गरेज़ी राज्य से पहिले श्रौर देशों के साथ हिन्दुस्थान का ब्यापार घर

की और बन की पैदावार का था न कि कारीगरी का। हिन्दुस्थान से मिर्च, लाख, सूत, सोंठ और लकड़ी बाहर जाया करती थी। इस से व्यापार का उद्यम करना गांवँवालों का काम था न कि शहरवालों का। सन् १७८७ ई० में ढाके की मलमल तीस लाख रुपये की बाहर गई। पर सन् १८१३ ई० में चार लाख से भी कम का माल गया। तीसरा कारण जिस से गांवँवाले आकर शहर में रहते हैं उसे अङ्ग्रेज़ी राज्य से पहिले यहांवाले जानतेही न थे। सैल्फ़ गवर्नमेण्ट (अपने आप राज्यप्रबन्ध का अधिकार) गांवँ के रहनेवाले कुछ पाये हुये थे जैसा हम ने पिछले अध्याय में लिखा है। आज कल म्यूनिसिपिल कामों में उन्नति धीरे धीरे हो रही है और जब तक धन और विद्या और अवकाश में लोगों की बढ़ती न होगी तब तक यही दशा रहेगी। तब भी ज्यों ज्यों व्यापार और सुख चैन से शहर बढ़ते जाते हैं उनके रहनेवालों को यह अधिकार मिलता जाता है॥

१३—म्यूनिसिपिल के शहर ॥

जो लोग राज्य की कल के समझने की
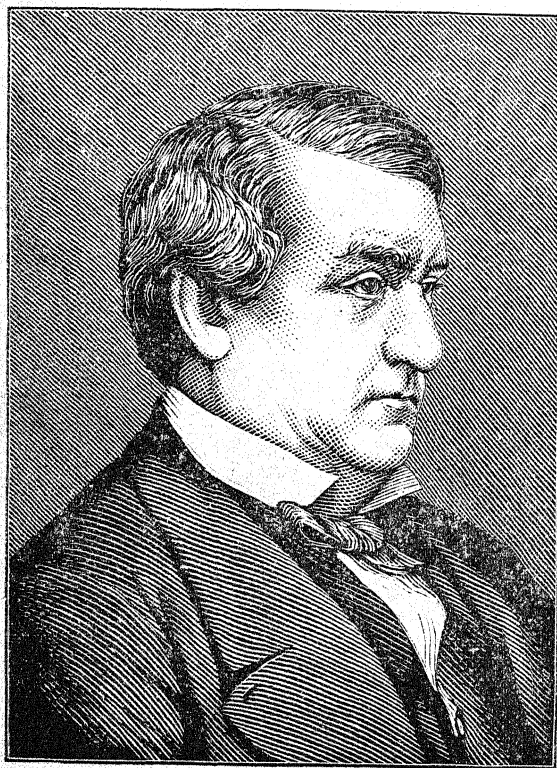
लार्ड मेयो ।

इच्छा रखते हैं उन्हें चाहिये कि इन्हीं शहरों
को ध्यान से देखें। कलकत्ता, मदरास, बम्बई,

और रंगून जो ब्रह्मा की राजधानी है, इनको छोड़कर सन् १८९६ ई० में ७२३ म्यूनिसिपलटियां थीं जिन में १३२९८६१३ आदमी रहते थे। बम्बई हाते में १७० पंजाब में १४९ बङ्गाल में १४६ पश्चिमोत्तर देश में १०३ मदरास में ५६ मध्यदेश में ५३ और बाक़ी देश भर में इधर उधर फैली हुईं थीं॥

१४—स्वल्फ़ गवर्नमेण्ट॥

म्यूनिसिपल बोर्ड बनाने में सर्कार अङ्गरेज़ी के दो अर्थ हैं. पहिला यह है कि शिक्षा, सफ़ाई, ख़ैराती दवा और सड़क पुल ऐसे कामों के लिये जो कर लगाया जाता है और उस से रुपया जमा होता है उसके प्रबन्ध में उस जगह के रहनेवाले हाथ लगावें. और दूसरा यह कि लोगों को राज काज करने की रीति सिखा दी जाय। पहिला अभिप्राय लार्ड मेयो ने १८७० ई० में ११ फ़रवरी के रिज़ोल्युशन (आज्ञापत्र) में जनाया था और दूसरे को लार्ड रिपन ने

१८८१–८२ ई० में दिखा दिया था। लार्ड रिपन के पीछे जितने गवर्नर जेनरल (बड़े लाट) हुये सब इन दोनों अभिप्रायों को मिलाने का यत्न करते चले आये हैं। सन् १८५८ ई० में हिन्दुस्थान राजराजेश्वरी के अधिकार में आया उसके पहिलेही से बड़े बड़े शहरों को ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने म्यूनिसिपिल इख़्तियार दे रक्खे थे। पर सन् १८७१–७२ ई० तक इस बिषय में और कोई बिशेष बात न हुई। इन बरसों में कई ऐक्ट जारी हुये और सन् १८८३–८४ ई० में यही ऐक्ट और बढ़ा दिये गये। सन् १८८३ ई० से पहिले म्यूनिसिपलटियों की स्वतंत्रता थोड़ीही थी। और वे सर्कारी हाकिमों की आधीनता में रहतीं थीं। इस से सर्कार का यह मतलब था कि म्यूनिसिपिल मेम्बर अधिकार पाकर अनुचित काम न कर बैठें और आमदनी बेठिकाने न ख़र्च कर डालें। इस साल के पीछे कहीं कहीं से सर्कारी दबाव बिलकुल उठा दिया गया और कहीं सर्कारी अधिकार

की हद बांध दी गई और यह जना दिया गया कि लोग अपने नगरों के प्रबन्ध और उनके काम काज में जी लगाकर काम करें और जितनी चिन्ता उन्हें अपने कामों की रहती है उतनीही चिन्ता और सावधानता से म्यूनिसिपिल का काम भी करें। इसका अर्थ यह है कि सर्कार ने कुछ लोगों को थोड़े से प्रजापालन और शासन के अधिकार दिये हैं जो अधिकार इन लोगों को न मिलते तो सर्कारी हाकिमोंही के हाथ में रहते॥

१५-प्रजा की थाती सम्हालनेवाले॥

भूल बेपरवाही या और किसी दोष से स्यल्फ़ गवर्नमेण्ट न बिगड़े इस बिचार से सर्कार ने इन लोगों को कुछ अधिकार देने पर भी इतना अपने हाथ में रक्खा है कि जब कोई महामारी की तरह का भयानक रोग या आपत्ति आ पड़े तो म्यूनिसिपलटियों को उसका उचित प्रबन्ध करने के लिये दबावे। सर्कार

ने यह भी नियत कर दिया है कि कौन कौन से टिकस लिये जा सकते हैं और किन किन कामों में आमदनी लगाई जा सकती है। सन् १८९५ ई० में कुल ७३३ म्यूनिसिपालिटियों की आमदनी २४९ लाख थी और यह सारा रुपया लोगों ने अपनेही कामों में अपनी म्यूनिसिपलटियों के द्वारा ख़र्च किया। सर्कार ने टिकस लगाने का जो नियम बांध दिया है उसको समझाने के लिये दो उदाहरण दिये जाते हैं। हिन्दुस्थान में खाने पहिनने की चीज़ों पर जो टिकस लगाया जाता है वह लोगों को बहुत कम खलता है क्योंकि यह किसी को जान नहीं पड़ता। यह उचित है कि म्यूनिसिपलटियों के रहनेवाले जिनकी गिनती १३२९८६१३ है अपनी जगह के आवश्यक कामों के लिये टिकस दें पर यह उचित नहीं है कि और लोग जो म्यूनिसिपिल के हद के भीतर नहीं रहते वह ऐसी बातों के लिये टिकस दें जो उनके काम की नहीं हैं। कुछ दिन हुए सिन्ध

सूबे की सब से धनी म्यूनिसिपलटी सिन्ध नदी के किनारे एक गांवँ की थी जहां से अनाज लदकर देसावर को भेजा जाता था। इस नाज के ऊपर चुंगी देनेवाले उस गांवँ के न थे बरन परदेसी ब्यौपारी थे। इसका परिणाम यह होता था इस देश के अनाज का दाम बढ़ गया और देसावर में उसकी मांग घट गई। इस बात को रोकने के लिये शहर में जितना अनाज ख़र्च होता है उसे आंक लेते हैं और जब यह देखा कि उस अनाज की चुंगी से म्यूनिसिपलटी की कुल आमदनी लोगों के ख़र्च में जितना अनाज आता है उतने पर जितनी चुङ्गी लगनी चाहिये उस से बहुत बढ़कर है तो सर्कार उसके घटाने का प्रयत्न करती है। दूसरा उदाहरण उस नियम में है जिसके अनुसार यह बांध दिया गया है कि म्यूनिसिपलटी के टिकसों से सारे देश के टिकसों को हानि न पहुंचे। किसी चीज़ पर सर्कार की ओर से महसूल लगै तो म्यूनि-

सिपलटी को उचित है कि उस पर चुङ्गी न लगावे क्योंकि इस से उन चीज़ों की हानि होती है और सर्कारी आमदनी घटने की सम्भावना हो जाती है ॥

ख़र्च के बिषय में म्यूनीसिपिल कमेटियों के ख़ास काम के लिये जो रुपया सर्कार ने दिया है उसे बहुत सम्हाल कर उठाना चाहिये। इनका काम यही है कि शहर की सफ़ाई और तन्दुरुस्ती का प्रबन्ध करैं—अस्पताल, दवाई-ख़ाने चलावें जिसमें रोगियों को दवा मिले-पानी का बन्दोबस्त हो, सड़कें ठीक रहें और लड़के पढ़ाये जायँ। शहर के रहनेवाले म्यूनी-सिपिल टिकस के सिवाय सर्कार को अनेक रीति से टिकस देते हैं इसके बदले सर्कार का यह धर्म है कि देश में शान्ति रक्खे, न्याय, सेना और पुलीस का प्रबन्ध करे और सर्कार को अपनी प्रजा के लिये जो जो उपाय करना चाहिये उसके प्रबन्ध का ख़र्चा दे ॥

१६—राजनीति की शिक्षा ॥

जो बातें हमने ऊपर लिखी हैं उनका समझना कठिन नहीं है । शहर के भीतरवालों को रोशनी चाहिये पानी चाहिये—मैला पानी बहने का सुभीता होना चाहिये दवा चाहिये—इन्हीं बातों के लिये वह लोग अपने ऊपर टिकस लगाते हैं । उनके प्रतिनिधियों को सर्कार ने यह अधिकार दिया है कि अपने शहर की आमदनी अपने शहर में ख़र्च कर दें । म्यूनीसिपलटी के भीतर मेम्बर लोग जिन में से कुछ लोग चुने हुए होते हैं राज्य की ओर से अधिकार पाकर लोकल स्यल्फ़ गवर्नमेण्ट करते हैं । इस प्रकार के राज्यशासन से लाभ तभी हो सकता है जब मेम्बर लोग लिखे पढ़े हों और अपना काम समझें और साधारण लोगों के कहने सुनने का कुछ प्रभाव हो । लोग सब मिलकर चाहें कि जो लोग राज्य अधिकारी हैं और अपने अधिकार का बर्ताव उचित नहीं करते उनको रोकें और सुधार की

[illegible] बतलावें तो यह हो नहीं सकता कि उन की न चले। इसी को लार्ड रिपन राजनीतिक शिक्षा का साधन कहा करते थे। म्यूनीसिपल मेम्बरों को प्रजा की थाती का प्रबन्ध करना सिखाया जाता है और प्रजा सैकड़ों ऐसी बातें सीखती है जिनको इसके बिना उसे सुध भी न होती। म्यूनीसिपलटी के रहनेवाले धीरे धीरे इस बात को सीखते जाते हैं कि उनकी सम्मति मिलकर ऐसी शक्ति बन सकती है जिसका प्रभाव हाकिमों पर हो जाता है। इस प्रकार से एक एक प्रजा समझ सक्ती है कि हम अपने शहर के शासन करनेवाली समाज के एक अङ्ग हैं। प्रजा को नये अधिकार मिलते हैं और नये धर्म उसकी समझ में आने लगते हैं और शहर के रहनेवाले शहर की बढ़ती में अपनी बड़ाई समझते हैं ॥

१७—कलकत्ता ॥

सन् १७०० ई० में कलकत्ता एक छोटा सा गावँ था। उस समय औरङ्गज़ेब के लड़के से अंगरेजों

ने इसे मोल लिया। अब इसकी दशा देखिये, यह "महलों का शहर" कहलाता है और हिन्दुस्थान की राजधानी है। इसकी बढ़ती के कारण वही तीन बातें हैं जो हम ऊपर लिख चुके हैं रक्षा, ब्यौपार, और म्यूनीसिपल के अधिकार। इसकी उन्नति का मूल कारण यही है कि यहां सब लोग सुख चैन से रहते हैं और विज्ञान शास्त्र बे रोक टोक अपना प्रभाव दिखलाता जाता है। जब इस नगर को ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने लिया तो पहिले उसका काम यह था कि मरहटों की चढ़ाई से रोकने का प्रबन्ध करे क्योंकि मरहटे हिन्दुस्थान के पच्छिम से बङ्गाले में घुसे आते थे। सन् १७५६ ई० में कलकत्ते का क़िला सिराजुद्दौला ने घेर लिया था और काली कोठरी की हत्या के पीछे कुछ दिनों के लिये अङ्गरेज़ी बस्ती का नाम तक मिटा दिया गया। २३ जून सन् १७५७ ई० को पलासी की लड़ाई और क्लाइव की जीत से कलकत्ते की बढ़ती की नीव पड़ी, और सन्

१७७३ ई० से यह हिन्दुस्थान में अङ्गरेज़ी राज्य की राजधानी बना दिया गया। उस दिन से कोई ऐसा उपद्रव नहीं हुआ जिस से इसकी बढ़ती में बाधा पड़ती॥

कलकत्ता–ब्यौपार के कामों की बहुत अच्छी जगह है और मनुष्य की चतुराई और विज्ञान ने जैसा प्रभाव अपना यहां दिखलाया है बम्बई में वैसा नहीं है। सन् १८५३ ई० में हुगली में रेत भरने लगी इस से लोग बहुत घबड़ाये क्योंकि इसी राह कलकत्ते का माल जहाजों पर लदकर ४० कोस चलकर समुद्र में जाता था। उस समय ऐसा जान पड़ा कि कलकत्ते की दशा वही हुआ चाहती है जो बम्बई हाते में ठाणां की हुई थी। पर लगातार देखभाल करने, चतुराई से नाव खेने और बड़े भारी भारी झाम चलाने से उस हानि का प्रतिकार हो गया। यद्यपि कभी २ आंधी आ जाती है तो भी कलकत्ते का बन्दर सर्कारी हिन्दुस्थान में सब से बढ़कर बना हुआ है। सन् १८९५-९६ ई०

में ७२ करोड़ का माल यहां आया गया। नदी के तीर सैकड़ों घाट और माल गोदाम हैं। और कहां तो इस में थोड़े मछुये रहते थे और कहां सन् १८२२ ई० में १८०००० और सन् १८५० ई० में ३६१३७० और अब आठ लाख से ऊपर आदमी इस में बसते हैं ॥

म्यूनिसिपल अधिकार और प्रतिष्ठा से इसकी उन्नति और शोभा और भी बढ़ गई है। इस शहर का प्रबन्ध ५० मेम्बर करते हैं जिन में से २५ यहीं के रहनेवालों के और १० समाजों और कमेटियों के चुने हुये होते हैं। और १५ मेम्बर सर्कार मुक़र्रर करती है। मेम्बर का उहदा बड़ी प्रतिष्ठा का है और इस से और भी भारी उहदे मिलते हैं। म्यूनीसिपलटी की साल की आमदनी ४५०००००) है जो मेम्बरों के हाथ से ख़र्च होती है। और २३८००००० रुपया उधार भी इस म्यूनीसिपलटी के ऊपर है ॥

१८—बम्बई ॥

बम्बई का शहर ब्यौपार में हिन्दुस्थान की राजधानी से दूसरे नम्बर पर है और आबादी और धन में अव्वल गिना जाता है। जब से यह अङ्गरेज़ी सर्कार के हाथ में आया इस पर वह आपत्तियां नहीं पड़ीं जो कलकत्ता और मदरास के सिर पर बीती हैं पर पड़ोसी मरहटे और समुद्र के डाकू जिन से हिन्दुस्थान के हिन्दू और मुसलमान राजा सदा घबड़ातेही रहे, दोनों से इसकी बड़ी चौकसी करनी पड़ी है। चार्लस दूसरे की रानी कैथरिन ब्रगेंज़ा के जहेज़ में मिलने से यह शहर अङ्गरेज़ों के हाथ में आया उस समय इसकी आमदनी ५१५४२ रु० साल की थी और दश हज़ार भगेड़ू और बहेतू लोग इस में बसते थे। सन् १७१६ ई० में इसकी आबादी १६००० हुई और सन् १८१६ ई० में १६१५५० हो गई पर सन् १८७२ ई० में ६४४४०५ इस में आदमी गिने गये। पिछली मर्दुमशुमारी में ८२१७६४ आदमी इस में रहते थे। मछुओं के

एक छोटे से गांव से जो रेतीले ऊसर और दल दल पर बसा था सुन्दर महलों और बागों का शहर बन जाना कैसा विचित्र है। जब अङ्ग्रेज़ पहले पहल इस में बसे थे तब इसकी आब हवा ऐसी बुरी थी कि ३० बरस के भीतर ७ गवर्नर मर गये और अङ्गरेज़ों के बच्चे तो यहां बचतेही न थे। इस में अब भी कभी कभी महामारी और कठिन रोग उभड़ पड़ते हैं तो भी यहां का पानी बुरा नहीं। प्राकृतिक शोभा में इसके टक्कर के शहर संसार में बहुत कम हैं। इस विचित्र बढ़ती का कारण केवल सर्कार की रक्षा है। अगले दिनों में जो जहाज़ हिन्दुस्थान के पश्चिम किनारे पर आते थे वह बम्बई के बन्दर में ठहरते हुये डरते थे। इस कारण छोटी छोटी गढ़ियों के पीछे ठांणे की खाड़ी या कल्यान में चले जाते थे। सन् १६७१ ई० में यहां जहाज़ ठहरने की जगह बनाई गई तब भी यहां डाकू लगते थे। इन डाकुओं के गढ़ और मवास १७५६ ई० तक रहे। कुछ दिन
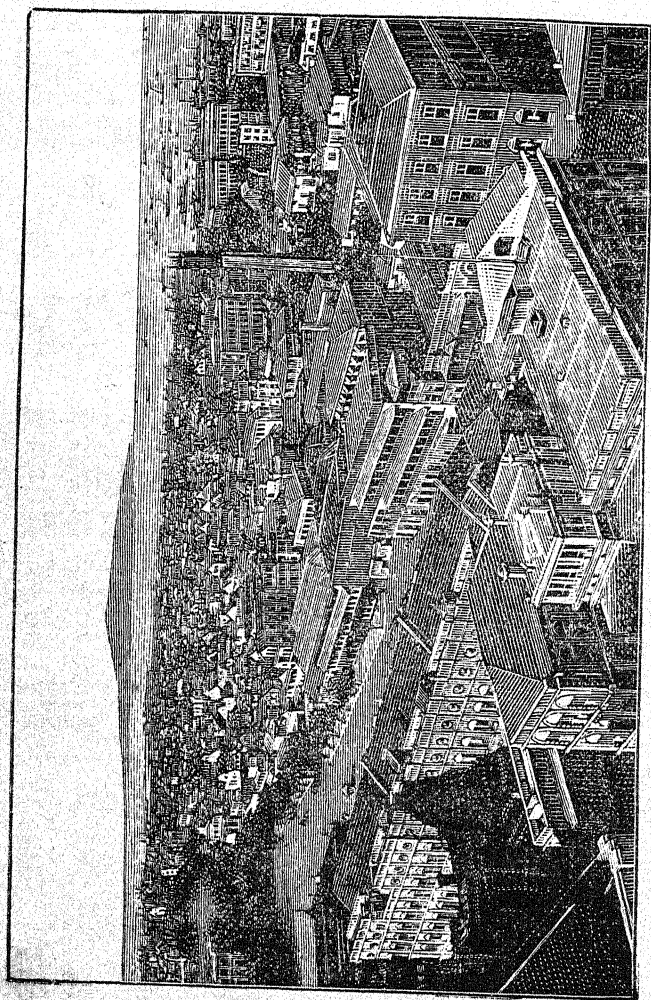
शहर बम्बई।

पीछे तक मरहटों के धावों का डर लगा रहा। अन्त को सन् १८१७ ई० में किरकी की जीत से शांति स्थापित हुई और बम्बई हाता बन गया। इस बस्ती की बढ़ती में और भी प्रतिबन्धक हुये क्योंकि टापू पर बसने के कारण यह शहर बढ़ नहीं सकता था। सन् १७७१ ई० में वेलार्ड भीत बनी और समुद्र का पानी मैदान पर आने से रोक दिया गया। इस से रक्षित होकर बम्बई की आबादी और ब्यौपार दोनों बढ़ने लगे। गोवा में धर्मसम्बन्धीयातना से डरकर कुछ लोग यहां आकर बसे और जिस समय मरहटे राज्य पाने के लिये लड़ाई करते फिरते थे और दक्खिन और गुजरात का नाश होता जाता था सैकड़ों आदमी नित्य सर्कारी झगडे की शरण आते थे। अप्रैल सन् १८०४ ई० में डूक आफ़ वेलिंगटन ने इस शहर को "सताये हुओं के शरण की जगह" लिखा है। उन्हों ने यह भी लिखा है कि "हिन्दुस्थान के इस भाग में उन लोगों के जान और माल की

रक्षा होती है जो पेशवा के बैरी हैं या जिन से पेशवा बदला लेना चाहता है। इस से सिद्ध होता है कि हमारी राजनीति और हमारे क़ानून के न्याय पर हिन्दुस्थानियों को बड़ा भरोसा है"। अंगरेजी सर्कार की अदालतें लोगों को ऐसी अच्छी लगीं कि ख़र्चा बढ़ गया और मेयर की कचहरी रिक्वेस्ट की कचहरी और रिकार्ड की कचहरी से काम न निकला। अन्त को चौथे जार्ज के राज्य में सुप्रीम कोर्ट स्थापित किया गया। आज दिन ज़ंजीवार और अदन तक के मुकद्दमें इस में आते हैं। बम्बई का सा बन्दर अंगरेजी सर्कार की रक्षा में रहा, इस से बम्बई की बढ़ती न होती तो अचरज था। सन् १८०२ ई० में सूरत का ब्यौपार मिलाकर यहां डेढ़ करोड़ से भी कम का माल आता जाता था। सन् १८९५—९६ ई० में ६६ करोड़ का माल आया गया। अठारवीं शताब्दी के अन्त में यहां से चीन को रूई भेजी जाती थी, पर अब यहां के लोग अपनी रूई से आप

कपड़ा बनाते हैं और रूई के बदले चीन में कपड़ा भेजते हैं। रूई कातने और कपड़ा बीनने का पहिला पुतलीघर सन् १८५४ ई० में खोला गया, अब हाते और शहर में सब मिलाकर १०१ पुतलीघर चलते हैं। सब तरह के कारखाने मिलाकर अकेले शहर में १२४ हैं और इन में एक लाख आदमी काम करते हैं॥

बम्बई की आबादी और ब्यौपार पर बिचार करने में हम लोगों को अपने धर्म और गौरव का ध्यान होना चाहिये। म्यूनिसिपल प्रबन्ध में ७१ मेम्बर हैं इस में ३६ प्रजा के चुने हुये २० समाजों के चुने हुये और १५ सर्कार के मुक़र्रर किये हुये होते हैं। मेम्बरों के चुनाव में जाति का भी बिचार रहता है। २४ पारसी होते हैं १७ अंगरेज़ १६ हिन्दू १२ मुसलमान और २ पुर्तगाली मेम्बर किये जाते हैं। साल की आमदनी ६७ लाख रुपया है। इतने बड़े धन का इतनी बड़ी आबादी की भलाई के लिये ख़र्च का प्रबन्ध करना राजनीति की

शिक्षा देने के लिये थोड़ा प्रभाव नहीं रखता। म्यूनीसिपिल की शोभा देखनेही से बम्बई में स्यल्फ़गवर्नमेण्ट की महिमा समझ में आ सकती है ॥

१९—मद्रास ॥

मद्रास का शहर पहिले बम्बई से भी छोटा था। इस में हुगली और पच्छिमी बन्दर दोनों में से किसी के भी गुण नहीं हैं। जिस जगह यह बसा हुआ है वह सन् १६३९ ई० में कम्पनी को एक राजा से मिली थी और शहर और क़िला दोनों पर जल और थल दोनों ओर से बैरी का डर था। सन् १७४१ ई० में मरहटों ने इस पर चढ़ाई की और पांच बरस पीछे फरासीसियों ने इसे छीन लिया। जब मद्रास अंगरेज़ों को फेर दिया गया तो फिर सन् १७५८ ई० में इसे फरासीसियों ने घेरा। उस दिन से इस में शान्ति रही है। कभी कभी आंधी आने से घाट उड़ जाता है और विज्ञान की चतुराई ने जो बात कलकत्ते के लिये की है वह मद-

मद्रास।
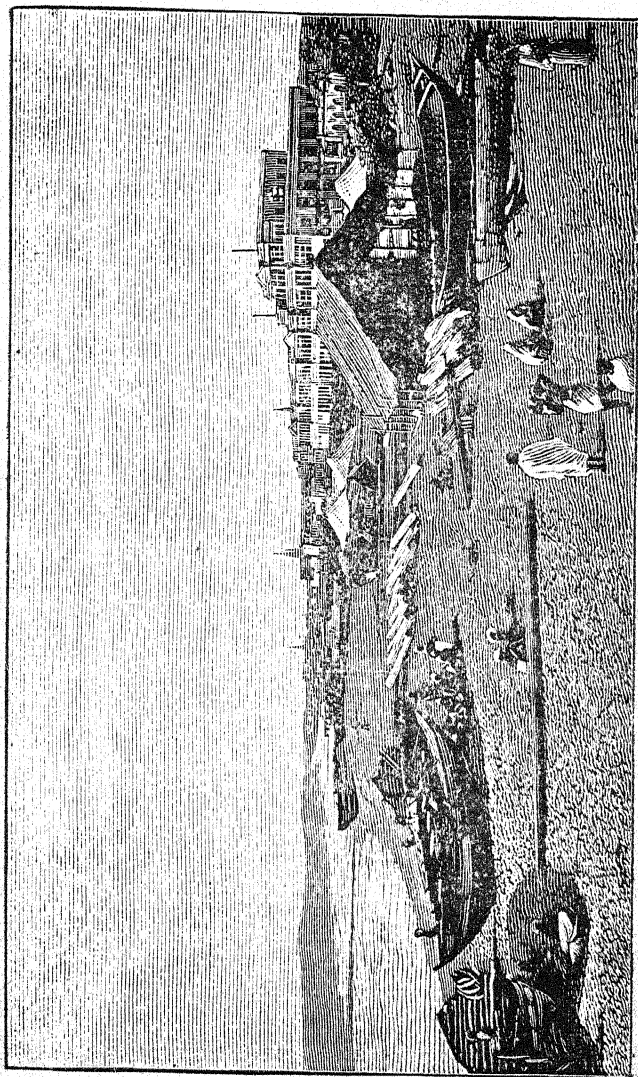
रास के लिये करने में हार गई। रेल की सड़कों और वकिंघम नहर के बन जाने से इस शहर के कुछ दोष दूर किये गये हैं और सर्कार की रक्षा में इसकी आबादी, आमदनी और इस के ब्यौपार तीनों की बृद्धि हुई है। सन् १८७१ ई० में म्यूनीसिपल के भीतर ३९७५५२ आदमी रहते थे और ५५००००) साल की आमदनी थी अब ४५२५१८ की मर्दुमशुमारी और १३०००००) की आमदनी हो गई है। ११ करोड़ का माल आता जाता है। म्यूनीसिपलटी में ४० मेम्बर हैं जिन में ३० प्रजा के चुने हुये होते हैं॥

२०—रंगून॥

इस होनहार शहर का इतिहास नया है। ब्रह्मा की पहिली लड़ाई में रंगून सन् १८२४ ई० में अंगरेज़ों के हाथ लगा पर लड़ाई के पीछे फेर दिया गया। सन् १८५२ ई० में फिर अंगरेज़ों ने इसे पाया। पर थोड़ेही दिन पीछे आग लगने से यह शहर नष्ट हो गया। इस

में एक नदी ऐसी बहती है जिस पर जहाज़ चल सकता है इस लिये सन् १८८० ई० में इस को शहर की पदवी दी गई। अब इस में १२ करोड़ साल का ब्यौपार होता है। इसकी आबादी १८०३२४ है और २४ मेम्बर म्यूनीसिपल इसका प्रबन्ध करते हैं। म्यूनीसिपलटी की आमदनी २१ लाख है और आशा की जाती है कि यह शहर केवल ब्यौपार ही में नहीं बरन आबादी में भी ब्रह्मा की राजधानी मांडले से बढ़ जायगा॥

२१—राजधानियां॥

जिन चार शहरों का ब्यौरा ऊपर लिखा गया है वे हिन्दुस्थान के ब्यौपार के मुख्य स्थान हैं और गवर्नमेण्ट के शासन की रीति को अच्छी तरह प्रकाश करते हैं। और भी शहर हैं जिनका कुछ वर्णन करना उचित है। किरांची की आबादी १०५१९९ है और इस में मदरास के बराबर ब्यौपार चलता है। लाहौर (आबादी १७६८५४)

पंजाब की राजधानी है इलाहाबाद (आबादी १७६२४६) पश्चिमोत्तर देश का मुख्य स्थान है—नागपुर (आबादी ११७०१४) मध्यप्रदेश की राजधानी है। इनके सिवाय आबादी में इन से भी बढ़कर लखनऊ, बनारस, दिल्ली आदि और भी नगर हैं पर ये किसी सर्कारी सूबे की राजधानी नहीं हैं। इन में और और अनेक नगरों में सर्कार अंगरेज़ ने म्यूनीसिपिल अधिकार दिया है जिस से यहां के रहनेवाले उस राज्य में जिसके कि वे अंग हैं अपनी बुद्धि से शासन करके सर्कार अंगरेज़ के शासन का भार घटाते हैं और उसकी बड़ाई के अधिकारी होते हैं॥

२२—पिछली दशा॥

पिछली दशा देखने से पढ़नेवाले समझ जायँगे कि पहिले क्या था और अब क्या हो गया है। पहिले राजाओं की राजधानियां दिल्ली, मंडले, हैदराबाद, सिन्ध, लाहौर,

पूना, बीजापूर आदि चारों ओर कोटों से घिरी रहती थीं और देश के बीचोंबीच स्थापित की गई थीं। जहां राजा चाहते थे वहीं राजधानी उठा ले जाते थे। कभी उन पर कृपा की दृष्टि रहती थी कभी उनके साथ निठुराई का बर्ताव होता था। रहनेवाले कभी सर्कारी रुपया उड़ाकर कभी बरजोरी से बुलाकर बसाये जाते थे और किसी को बाहर जाने की आज्ञा न थी। अङ्गरेज़ी राज्य में जहां लोग चाहैं वहीं शहर बस सकता है और रहनेवालों को बाहर जाने के लिये कोई रोक टोक नहीं है। गांवँवालों से महसूल लेकर शहरों में उड़ाया नहीं जाता। शहर के रहनेवाले म्यूनीसिपल टिकस भी देते हैं और सर्कारी टिकस भी देते हैं और म्यूनीसिपलटी की आमदनी का ख़र्च लोगों की प्रतिनिधि समाज के अधिकार में रहता है। यह भी बिचार करने की बात है कि अंगरेज़ी राज्य की राजधानियां समुद्र के किनारे या ऐसी

नदियों के किनारे बसी हैं जिन में जहाज़ चल सकता है और जहां ब्यौपार का सुभीता है और अङ्गरेज़ी सर्कार की भुजा उनकी रक्षा कर सकती है। कैंबिल नामी कबीश्वर ने इस प्रकार शहर बसने का कारण यों लिखा है। (भाषा अनुवाद)

बली ब्रिटन को है नहीं, गढ़ कोटन को काज।
गिरि से तुङ्ग तरङ्ग पै, धावत ब्रिटिशजहाज़॥
घर सम बासी ब्रिटन के, बिचरत उदधि गँभीर।
देस राज रक्षा करैं, निज भुज बल सो बीर॥
लोह काठ के गेह सों, घन सम गरज सुनाय।
उठत उपद्रव की लहर, तुरतहिं देत दबाय॥

तीसरा अध्याय ।

ज़िला ।

२३—लोगों के कामकाज के मुख्य स्थान ॥

हिन्दुस्थान का एक एक गांवँ और शहर किसी न किसी ज़िले का भाग है और ऐसा कोई समझदार रहनेवाला न होगा जो अपने ज़िले का नाम न बतला सके। जब अपने देश के बिषय में इतनी बातें समझ में आ गईं तो समझदार लोगों को अपने ज़िले के शासन का ब्यौरा जानने की चाह होगी। जब यह कोई सुनेगा कि अङ्गरेज़ी राज्य में ५२७६०१ गांवँ और शहर हैं तब एक गांवँ के लिये यह समझना कि यह भी इस बड़े राज्य का अंश है कुछ कठिन जान पड़ेगा। इतनी बड़ी संख्या सुनतेही लोग घबरा जायँगे और उनको यही ध्यान होगा कि एक छोटा सा

गांवँ इतने बड़े राज्य में क्या कर सकता है? पर ज़िलों की यह दशा नहीं। अदन और बरार के ६ ज़िले मिलाकर, जिनकी कई कारणों से हिन्दुस्थान में गिनती नहीं होती, सन् १८९१ ई० की मर्दुमशुमारी के अनुसार सारे सर्कारी हिन्दुस्थान में २५० ज़िले हैं। पर कलकत्ता इस गिनती में नहीं है। ज़िलों की गिनती २४४ मानों या २५१—भेद कुछ भी नहीं है। ज़िले का गौरव उसी दम समझ में आ जायगा जब यह देखोगे कि रजवाड़े के बाहर २५० ज़िलों के मिलने से सारा सर्कारी हिन्दुस्थान बन जाता है। हां, यह बात सब के समझ में आ सकती है कि ज़िला राज्य का एक हिस्सा है और इसी कारण ज़िले को हिन्दुस्थानी राज्य में लोकव्यवहार का केन्द्र कहते हैं। ज़िलेही में राज्यप्रबन्ध की कल चलती देख पड़ती है और इसी का परिणाम देखने से इस प्रबन्ध के उत्तम होने का अनुमान हो सकता है। इस केन्द्र पर कल का अच्छी तरह चलना सिद्ध हो जाय तो यह भी

सिद्ध होगा कि सारे देश में राज्यप्रबन्ध अच्छा है। शहर और सूबे नक़शे से मिटते और बनते रहे पर हिन्दुस्थान में कितने राज्य बीते ज़िलों का नाम अचलही रहा है ॥

२४—सूबे के हिस्से ॥

हिन्दुस्थान का ज़िला फिर भी सूबे का और राज्य का एक हिस्साही है और उसी की हानि लाभ में इसकी भी हानि लाभ है। इस कारण किसी विशेष जगह के बिचार करने में यह भी ध्यान रखना चाहिये कि कभी कभी एक ज़िले की हानि लाभ में दूसरे ज़िले या सूबे से विरोध भी जान पड़ता है। जब कभी ऐसा अवसर आ पड़े सूबे के या राज्य के गवर्नमेण्ट का यह काम है कि दोनों को सम्हाले। किसी ज़िले में नुक़सान हो जाय तो तुरन्तही गवर्नमेण्ट को दोष न देना चाहिये। कभी ऐसी भी आवश्यकता आ पड़ती है कि एक बड़ी हानि या सारे राज्य को बचाने के लिये किसी विशेष

जगह को हानि पहुंचा देना उचित समझा जाता है। जैसे अगले दिनों में राजा और बादशाह लोग सिवाने के जिलों में लूट मार इस विचार से होने देते थे कि और देशवाले यहां घुस न आवें। भीतर शांति रखने के लिये राज्य का सिवाना बिगाड़ दिया जाता था। पंजाब के एक कोने में सिक्खों ने २० आफ़रीदी सिरों के बदले चमकन्नी के ख़ान को एक जागीर दे रक्खी थी। हिन्दुस्थान के निपट पूरबी सिवाने पर अब भी उन लोगों की एक बस्ती है जिनका काम सिर काटनाही है और जिनके डर के मारे ब्रह्मा के राज्य में शान देश में चीन के लोग आ नहीं सकते थे। लुटेरों और बैरियों की चढ़ाई से हिन्दुस्थान को बचाने के लिये सर्कार अङ्गरेज़ ऐसे काम नहीं करती। पर जब ऐसा अवसर आ पड़ता है तब एक जगह के रहनेवालों को दूसरी जगह के लाभ के लिये हानि उठाना पड़तीही है। जब जेकोबाबाद और ज़िला सक्कर के कुछ

हिस्सों को बचाने के लिये कुशमोर का बांध बनाया गया था तब जेकोबाबाद के बहुत से खेतों पर पानी पहुंचना बन्द हो गया। सिन्ध के सिवाने में खेती की बड़ी हानि हुई। पर पच्छिम के रहनेवालों को जो लाभ हुआ उसके सामने यह हानि बहुत थोड़ी थी। बहुतों के लाभ के लिये थोड़ों की हानि करना नीति है। इस से सिद्ध है कि ज़िला लोक व्यवहार का केन्द्र है और देश की बढ़ती ज़िलेही के देखने से समझ में आ सकती है। पर यह भी भूलना न चाहिये कि कभी एक ज़िले की भलाई के लिये दूसरे ज़िले को हानि पहुंचाना आवश्यक हो जाता है॥

२५—ज़िले का क्षेत्र फल॥

राज्य को जिलों में बांटने से अच्छे राजा को ऐसा प्रबन्ध करना चाहिये कि हर ज़िले के हाकिम को राज्य का भार बराबर उठाना पड़े; पर यह भी प्रगट है कि भिन्न भिन्न सूबों में आबादी और लम्बाई चौड़ाई के विचार से

ज़िले भी छोटे बड़े हो जाते हैं। दूसरे अध्याय में जिन चार शहरों का ब्यौरा लिखा गया उनको छोड़कर सर्कारी ज़िले का औसत क्षेत्रफल ३८७५ बर्गमील और आबादी ८८०९६५ है। पर मदरास में यह संख्या बहुत बढ़ी हुई है। वहां इसका औसत ५८८२ बर्ग मील क्षेत्रफल और १४६६००० आबादी है। सिन्ध के बाहर बम्बई हाते का औसत क्षेत्रफल ४२९२ बर्ग मील और सिन्ध में ९५५८ बर्ग मील है। पश्चिमोत्तर देश में क्षेत्रफल २१९४ बर्ग मील का औसत सब से छोटा है पर आबादी का औसत १० लाख है। बङ्गाल में १५ लाख तक आबादी का औसत हो जाता है। इस भेद का क्या कारण है? आबादी और क्षेत्रफल जो ऊपर लिखे गये उन्हीं दोनों बातों का बिचार बिशेषकर रहता है। यह नियत है कि ज़िले का एकही अफ़सर रहे जिस के ऊपर उसके शासन का भार है और एक अकेला आदमी थोड़ेही से क्षेत्रफल तक सम्हाल सकता है और उसे देख भाल सकता है।

ऐसेही क्षेत्रफल कम हो और आबादी बहुत हो तब भी काम बढ़ जाता है। ज़िले के रहनेवालों के स्वभाव उनके पड़ोसी और माल के मुकद्दमों की संख्या का भी विचार किया जाता है। लोग झगड़ालू हों, पड़ोसी जङ्गली हों या उनका शासन ठीक न हो तो ज़िले के हाकिमों को बदमाशों के सुधारने या पड़ोसियों के दबाने की चिन्ता हो जाती है। पुलीस का काम बहुत समझ बूझ कर किया जाता है। और इस में बड़ी देर लगती है। ऐसेही माल का काम भी ज़िमींदारों के थोड़े होने से कम रहता है। पश्चिमोत्तर देश में बनारस की क़िस्मत, आगरे की क़िस्मत से क्षेत्रफल और आबादी दोनों में बढ़ी हुई है पर बनारस में ५ ज़िले और २९ तहसील हैं और आगरे का काम ६ ज़िलों और ४८ तहसीलों से चलता है। बनारस की मालगुजारी ५० लाख से कम है पर आगरे की ८० लाख से भी बढ़ी हुई है। बनारस में बहुतसी मालगुज़ारी सदर में बड़े बड़े

ज़िमींदार जमा करते हैं आगरे में छोटे छोटे काश्तकार बहुत हैं। इसी लिये आगरे के ज़िलों में बहुत बड़ा अमला रखना पड़ता है। इन्हीं कारणों से सर्कारी हिन्दुस्थान के ज़िलों के क्षेत्र-फल और आबादी में भेद है जहां तक हो सकता है ज़िले ज़िले में हाकिम के ऊपर भार बराबर रक्खा जाता है॥

२६—इकज़्यक्युटिव (अमिलाना)

ज़िले के हाकिम सर्कार के सब से बड़े इकज़्क्युटिव अफ़सर कहलाते हैं। इनका काम यह है कि सर्कार और कानून के हुकुम को अमल में लावें। इनके ऊपर वह हाकिम होते हैं जो इनकी निगरानी करते और इनको हुकुम देते हैं। पर ज़िले के हाकिम कलक्टर और उनके मातहत डिपटी कलक्टर, जज और मुंसिफ़, पुलिस का सुपरिण्टेण्डेण्ट, इकज़्क्-टिव इञ्जिनियर और उनके नीचे काम करने-वाले, और सिविल-सर्जन, यह वह लोग हैं

जिन पर सर्कार भरोसा करती है कि उसकी आज्ञा पाली जाय और कानून के विरुद्ध कोई काम न हो। गवर्नमेंट की कल के येह मुख्य अङ्ग हैं और ज़िले में इनका नाम गांवँ गांवँ में प्रसिद्ध है। इन्हीं की ईमानदारी इन्हीं के परिश्रम और इन्हीं की बुद्धिमानी पर गवर्नमेंट का उत्तम होना आश्रित है। प्रधान गवर्नमेंट की रीति बहुत अच्छी हो पर ज़िले के हाकिम योग्य न हों तो गवर्नमेंट से ज़िले के रहनेवालों को लाभ नहीं होता। ज़िले की इकज़क्युटिव का काम अनेक प्रकार का होता है। यह लोग ज़िले में शांति रखते, दीवानी और फ़ौजदारी का न्याय करते, सर्कारी माल-गुज़ारी तहसीलते, माल के झगड़ों का फ़ैसला करते और सड़क, पुल आदि बनाते, अकाल में लोगों की सहायता करते और रोग का फैलना रोकते हैं। और इतनाही नहीं, यही लोग म्यूनीसिपल और लोकल बोर्डों की निगरानी भी करते हैं। ज़िले के रहनेवालों को कोई

दुःख पड़े तो वह इन्हीं के पास दौड़ते हैं और इन्हीं से सूबे के लाट और बड़े लाट की मरज़ी जानी जाती है। ये लोग गवर्नमेण्ट के मुंह ही नहीं उसके आंख कान भी हैं। कानून बनाने का अधिकार इन लोगों को नहीं है पर इन्हीं लोगों की रिपोर्टों से गवर्नमेण्ट क़ानून बनाने की आज्ञा देती है। सर्कारी रुपया ख़र्च करना इन्हीं के अधिकार में है। जेलख़ाना और मद्सा भी यह लोग देखते हैं और कोई दोष हुआ तो मुहकमें के अफ़सरों को लिख भेजते हैं॥

२७—कलक्टर॥

ज़िले के कुल अमले का मालिक कलक्टर होता है पर ज़िला जज अपने काम में उसके अधीन नहीं है। ज़िले के शासन में सब कामों के प्रबन्ध में दो बातों का विचार किया जाता है। एक एकता दूसरे थोड़े ख़र्च में सब काम निकालना। जब सर्कार अंगरेज ने इस देस के शासन का भार अपने ऊपर लिया उस

समय इकज़क्युटिव और अदालत में कोई भेद न था। हिन्दू मुसलमान राजा स्वतंत्र थे और ज़िले के हाकिमों को जो इख़्तियार देते थे उस में किसी तरह की बाधा न थी। म्यूनीसिपलटियों के बनाने, मालगुज़ारी तहसील करने या अदालत स्थापित करने के कोई क़ानून न थे। आज दिन हिन्दुस्थानी रजवाड़ों में ऐसी कोई समाज नहीं है जो इकज़क्युटिव से अलग रहकर कानून बना सकै। राजा जो आज्ञा देता है वही क़ानून है। अङ्गरेजी सर्कार ने पहिले पहिल इकज़क्युटिव को क़ानून के आधीन किया और सूबे के गवर्नमेण्ट से अलग एक समाज को ऐसे क़नून बनाने का अधिकार दिया जिन्हें गवर्नमेण्ट और उसके हाकिमों को भी मानना पड़ता है। देश में जब शान्ति हो गई और राजशासन का कामकाज चलने लगा तभी इकज़क्युटिव के मुख्य हाकिम और जज का उहदा अलग कर दिया गया। इसी कारण हर एक ज़िले में एक कलक्टर और एक जज

होता है। पर इस भेद को छोड़ एकता के बिचार से कलक्टर ज़िले के सारे मुहकमों का अफ़सर है। कलक्टर ज़िले की मालगुज़ारी तहसील करता है और ज़िले का मजिस्ट्रेट भी है। पुलीस की कारवाई की देखभाल जांच परताल करता है और काम पड़ने पर जङ्गी पलटन को भी बुला सकता है। उसका धर्म्म है कि शान्ति रक्खे, सब की भलाई और सब के सुख की चिन्ता करे। और इस बात के निश्चय करने में कि यहां पुल सड़क चाहिये यहां सफ़ाई का प्रबन्ध होना चाहिये और छोटे २ शहरों में स्यल्फ़गवर्नमेंट चलाना चाहिये उसी की बात प्रमाण मानी जाती है। कहीं २ दस्तावेजों की रजिस्टरी भी वही करता है और पुतलीघर और कारखानों को देखता है। कहां तक कहा जाय कलक्टर ही एक आधार है जिसके सहारे ज़िले का शासन होता है। कोई बात बिगड़ जाय तो कलक्टर का धर्म्म है कि उसके सुधारने का यत्न करे

और उसके किये न हो सके तो अपने ऊपर के अफ़सरों को रिपोर्ट कर दे ॥

२८—ज़िले के हिस्से (परगने) ॥

कलकृर के नीचे कई और हाकिम होते हैं, जो ज़िले के हिस्सों में जिनको यहां तहसील कहते हैं इसी रीति से शासन करते हैं। इनके क्षेत्रफल में ज़िलों से भी बढ़कर अन्तर होता है। आजकल २५० ज़िलों में १०५६ तहसीलें हैं इन्हीं के द्वारा सर्कारी हिन्दुस्थान के गांवँ २ में सर्कार अङ्गरेज़ का शासन होता है और एकता बनी रहती है। ज़िले के ऊपर निगरानी करनेवाला पांच छः ज़िलों का एक हाकिम होता है। उसको कमिश्नर कहते हैं और उसके अधिकार में जो ज़िले हैं उनको मिलाकर क़िस्मत कहते हैं। पिछली मर्दुमशुमारी के अनुसार ५४ क़िस्मतें हैं पर मदरास हाते में कमिश्नर नहीं होते। यहां कमिश्नर का काम बोर्ड माल करता है। कमिश्नर और कलकृरों में

यह बड़ा अन्तर है कि कमिश्नर केवल देखभाल और जांच परताल करते हैं, काम नहीं करते। काम करनेवाला हाकिम जिलेही में रहता है। इतना और जानना चाहिये कि पिछली मर्दुम-शुमारी के अनुसार ब्रिटिश इण्डिया में १२ सूबे हैं जिन में २५० ज़िले हैं। बरार और अदन इस गिनती में है पर कलकत्ता नहीं॥

२९—ज़िले के उहदे॥

यह प्रगट है कि हिन्दुस्थान में ज़िलों के शासन के लिये कलक्टर लोग बड़ी सावधानी से चुने जाते हैं। इनके अख्तियार बहुत हैं इस लिये अच्छे से अच्छा आदमी चुनने के लिये बड़ा यत्न किया जाता है। इन लोगों में तीन मुख्य गुण देखे जाते हैं और वह ये हैं चतुराई, अच्छा चालचलन, और उन बातों का विशेष ज्ञान जिन से अङ्गरेज़ीशासन और प्रजा का पालन होता है। कलक्टरी के उहदे के लिये सिविलसर्विस की परीक्षा होती है

श्रौर उस परीक्षा में राजराजेश्वरी की हिन्दु-
स्थानी प्रजा को उतनाही अधिकार है जितना
इङ्गलिस्तान या उसके आधीन किसी श्रौर
देश के रहनेवालों का है। यह परीक्षा हर
साल लन्दन में होती है जो इस राज्य का
केन्द्र है श्रौर इस परीक्षा में सर्कारी राज्य के
सब देशों के रहनेवाले जो उमर श्रौर जाति
श्रौर अच्छे चालचलन का प्रमाण दे चुके हैं,
हिन्दुस्थानी सिविलसर्विस के लिये होड़ कर
सकते हैं। सब को एकही प्रश्न पत्र दिया
जाता है श्रौर एकही समय में सब को उत्तर
लिखना पड़ता है। उत्तर के पत्र पर परीक्षा
देनेवाले का नाम नहीं लिखा रहता है; केवल
एक गिनती लिखी रहती है इस से परीक्षक
लोग नहीं जान सकते कि जिस ने यह उत्तर
लिखा है वह कैान है। जिनको सब से बढ़-
कर नम्बर मिलते हैं वही चुने जाते हैं। श्रौर
थोड़े दिन इङ्गलिस्तान में रहकर अपना काम
देखाने श्रौर एक श्रौर परीक्षा देने के पीछे

हिन्दुस्थान की सिविलसर्विस में भरती हो जाते हैं। इङ्गलिस्तान में रहने से परदेस के रहनेवाले उम्मेदवारों को उस देश के रहन सहन ओर व्यवहार का ज्ञान हो जाता है जिसकी ओर से वह हिन्दुस्थान में शासन करने के लिये भेजे जाते हैं। इस रीति से चुने हुए हिन्दुस्थानी ओर अङ्गरेज सब मिलाकर १००३ सिविलियन हैं। सिविलसर्विस में भरती होने के पीछे उनको कई मुहकमों का काम सिखाया जाता है ओर जब वह सब बातें सीख जाते हैं तो ज़िले के जज या कलकृर कर दिये जाते हैं। साधारण रीति से राजराजेश्वरी की किसी अङ्गरेज़ी प्रजा को यह अधिकार नहीं है कि बिना परीक्षा दिये कलकृर हो सके। पर हिन्दुस्थान के रहनेवालें के लिये पार्लीमेण्ट के एक क़ानून से यह अधिकार मिल गया है कि बिना परीक्षा दिये भी योग्यता ओर चतुराई का प्रमाण देने पर हिदुस्थानी लोग कुछ उहदे पा सकें।

राजराजेश्वरी के राज के तेंतीसवें साल में जो क़ानून बना था उस में हिन्दुस्थान का रहनेवाला कौन समझा जा सकता है स्पष्ट लिखा है ॥

३०—तहसील की नौकरियां ॥

तहसीलों में अङ्गरेज़ीशासन बहुधा हिन्दुस्थानियों के द्वारा होता है। और भी यूरुपवालों के, जैसे फ्रान्स और रूस के, एशिया में राजा हैं पर उनके यहां यह रीति नहीं। मध्य एशिया के ट्रंस कस्पियाना सूबे में जो रूस के आधीन है एक यात्री गया था उसने पहिली अप्रैल सन् १८९७ ई० को लन्दन की कला समाज में एक पत्र भेजा था उस में यह लिखा था कि "पुलीस की इन्स्पेक्टरी को छोड़कर तुरकिस्तान और ट्रन्स कस्पियाना में जितने उहदे जङ्गी या मुल्की हैं सब रूसियोंही के हाथ में हैं। हिन्दुस्थान में तहसीलदार या मामलतदार हिन्दुस्थानी होते हैं पर इन देशों में इस

उहदे पर देसी नहीं हो सकते। पेशकार और दो मुहर्रिर भी रूसी होते हैं। राज्यशासन में एक बड़ा उहदा है जो वहां के रहनेवालों को मिलता है और वह गवर्नमेण्ट के मुतरज्जिम का है और कहीं २ एक दो पृस्ताव भी हो गये हैं। शासन में रूसी उस देश के रहनेवालों को हाथ डालने नहीं देते। फ़ौज का भी यही हाल है। तुरकिस्तान और ट्रन्स कस्पियाना दोनों में एक भी पलटन देशियों की नहीं है और सारी रूसी पलटन में एक भी देसी देख नहीं पड़ता"। इसको देखिये कि २५ बरस के भीतर हिन्दुस्थान में देशियों को नौकर रखने में जितनी उन्नति हुई है उस पर विचार कीजिये तो कितना बड़ा अन्तर देख पड़ेगा? एक सूबे का उदाहरण इसको सिद्ध करेगा। सन् १८७१ ई० में बम्बई की सिविललिस्ट में ३७ डिपटी कलक्टर थे उन में ११ अङ्गरेज़ थे और ८३ सदर आला जिन में ५ अङ्गरेज़ थे। उसी हाते में सन् १८९७ ई० में ५१ डिपटी कलक्टर

लिखे हैं जिन में ४ अङ्गरेज़ रह गये हैं और १०३ सदर आलाओं में से एकही अङ्गरेज़ है। सन् १८९७ ई० में मामलतदार (तहसीलदार) सब हिन्दुस्थानीही थे। इसको देखने से सिद्ध होता है कि हिन्दुस्थान के शासन में थोड़े से अङ्गरेज़ केवल देख भाल करते हैं और सारे उहदे हिन्दुस्थानियों के हाथ में हैं। इस बात को और जाति के लोग अचरज से देखते हैं पर अङ्गरेज़ी गवर्नमेण्ट सदा से यह बात पुकार २ कर कह रही है कि हिन्दुस्थानियों को जैसा इंगलिस्तान में सम्मत है उसी धर्म और न्याय के विचार से अपने देश पर शासन करना सिखाना चाहिये और इस अर्थ को सिद्ध करने के लिये यह उपाय किया गया है कि परीक्षा में होड़ करके चुनकर दो चार सौ अङ्गरेज़ों को हज़ारों हिन्दुस्थानियों के साथ शासन का भार बांट दिया गया है॥

चौथा अध्याय।

सूबे॥

३१—अकबर के सूबे॥

हिन्दुस्थान में अनेक राजा हुये, धावा करनेवाले आये और चले गये, पर गांवों के नाम और उनके ठिकाने ज्यों के त्यों बने रहे। ज़िलों में भी राजा के अदल बदल से कुछ भेद न पड़ा। पर सूबों के विभाग में यह बात नहीं रही। १३ सूबे जिन में हिन्दुस्थान आज दिन बटा हुआ है और जो नकशों में दिखाये जाते हैं आजकल के बनाये हुये हैं। सैकड़ों बरस तक इस देश के दोही भाग माने जाते थे एक हिन्दुस्थान, दूसरा दक्खिन, और इन्हीं से काम चलता था। "हिन्दुस्थान" वह देश समझा जाता था जो सिन्ध और गङ्गा और इनकी सहायक नदियों के तट पर बसा हुआ है और "दक्खिन" सतपुड़ा पहाड़ के

दक्खिन के देश को कहते थे। जब अकबर के राज्य में उत्तर दक्खिन और पूरब पच्छिम
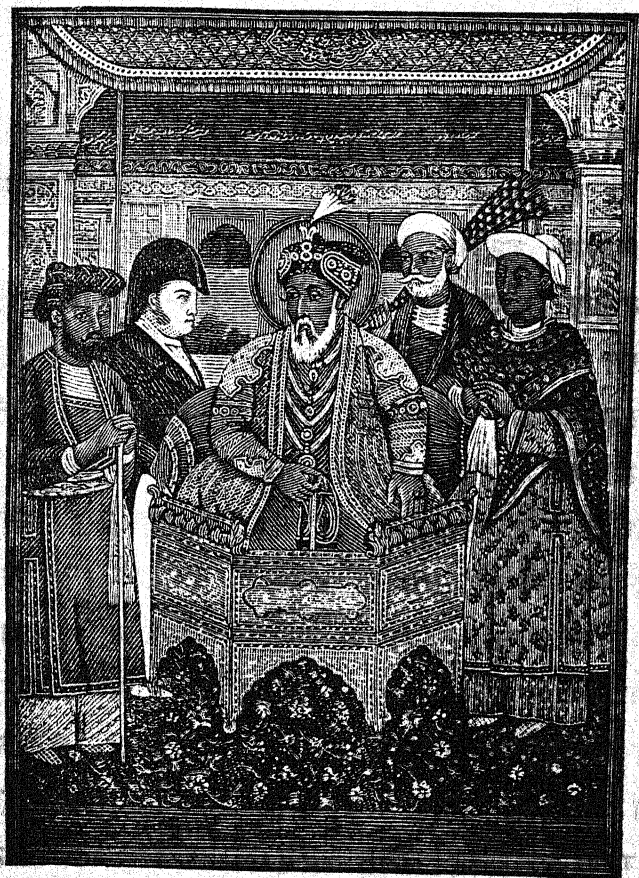
अकबर बादशाह का चित्र।

एक हो गये तब सूबों का बिस्तार निश्चित हुआ और हिन्दुस्थान के गांवँ और ज़िले सूबों के हाकिमों के नाम जानने लगे। किसी देश को सूबों में बटने के लिये इस बात की आवश्यकता है कि उसका बन्दोबस्त स्थिर हो जाय और लोग चारों ओर से एक राजा के आधीन रहना स्वीकार कर लें। शासन में गड़बड़ होने से गांवँ तो बच सकते हैं पर सूबों की सीमा का ठिकाना नहीं रहता। अकबर के राज्य में सूबे बनाने का अच्छा अवसर मिला। अबुलफ़ज़ल अल्लामी ने अपने रचे आईन अकबरी में इसका ब्योरा यों लिखा है "सन् जलूस के चालीसवें साल में बादशाह के राज्य में १०५ सर्कार या सूबों के भाग और २७३७ शहर थे। बादशाह ने अपने राज को १२ भागों में बांटा। हर एक भाग एक सूबा कहलाता था। जब बरार, खान्देश और अहमदनगर जीत लिये गये तो १५ सूबे हो गये"। इसके पीछे अबुलफ़ज़ल

ने बारहों सूबों का पूरा ब्यौरा लिखा है सूबों के नाम यह थे। (१) बङ्गाला (२) बिहार (३) इलाहाबाद (४) अवध (५) आगरा (६) मालवा (७) गुजरात (८) अजमेर (९) दिल्ली (१०) लाहौर (११) मुलतान और (१२) काबुल॥

३२—अङ्गरेज़ी राज्य के सूबे॥

अङ्गरेज़ी राज्य के हिन्दुस्थान में १३ सूबे हैं। इनके नामही से सूबों का अदल बदल जाना जाता है। अंगरेज़ी सूबे यह हैं (१) मदरास (२) बम्बई (३) बंगाल (४) पश्चिमोत्तर देश (५) पञ्जाब (६) मध्य देश (७) आसाम (८) ब्रम्हा (९) अजमेर (१०) बरार (११) कुर्ग (१२) बलोचिस्तान और (१३) अंडमान टापू। बादशाही और अंगरेज़ी रीति में जो भेद है वह विचारने से समझ में आ जायगा। अकबर ने हिन्दुस्थान में काबुल भी मिला रक्खा था जिस में कश्मीर स्वात बजौर और

कन्दहार मिले हुये थे। अंगरेज़ी राज्य में पच्छिम की ओर सीमा स्थिर है पर पूरबी सीमा कांग नदी तक चली गई है। सूबों के नाम पढ़नेही से यह प्रगट होता है कि हिन्दु-स्थान के दक्खिन और पच्छिम के भाग जैसे अब सर्कार के आधीन हैं वैसे चार सा बरस पहले न थे। पर अकबर के प्रबन्ध और आज कल के शासन में मुख्य भेद यह है कि हिंदु-स्थानी रजवाड़े अंगरेज़ी राज्य में गिने नहीं जाते। अकबर के राज्य में मेवाड़ और मार-वाड़ अजमेर के खण्ड थे और बड़ौदा गुजरात का "सर्कार" था। उदयपूर रतलाम और धार, मालवा के सूबों में गिने जाते थे और इन्दौर बरार का एक भाग था। दिल्ली के राज्य में राजवाड़े बादशाही अधिकार से अलग न थे। अंगरेज़ी राज्य में हिंदुस्थान का ⅓ भाग जिसका ६ लाख बर्गमील क्षेत्रफल है सर्कारी अमलदारी के बाहर रक्खा गया है। न वह रजवाड़े सर्कारी अमलदारी में मिलाये

जा सकते हैं और उनको काट छांट का डर है। अङ्गरेज़ी सूबे कैसे बन गये यह तुम को पीछे बताया जायगा पहले सूबों की गवर्नमेण्ट और जिलों के शासन का कुछ हाल जानना चाहिये॥

३३—सूबों के नाम॥

इस बात की सम्भावना है कि अङ्गरेजी सूबों की सीमा बदल जाय। इनकी लम्बाई चौड़ाई में बड़ा अन्तर है; कुर्ग का क्षेत्रफल १५८३ वर्गमील है और ब्रह्मा का क्षेत्रफल १७१४३० वर्गमील नापा गया है। आबादी में और भी बड़ा भेद है। सूबे का एक हाकिम होता है जिसको कहीं गवर्नर कहीं लेफ़्टिनेण्ट गवर्नर और कहीं चीफ़ कमिश्नर कहते हैं। मदरास और बम्बई के हाकिम गवर्नर कहलाते हैं। इन सूबों को अब भी प्रेसीडेंसी (हाता) कहते हैं क्योंकि इनका गवर्नर बिलायत में मुक़र्रर होता है और वह एक कौंसिल (सभा) का, जिस में दो मेम्बर (सभासद) और होते हैं,

प्रेसीडेण्ट (सभापति) होता है और उस सभ
की सहायता से राजकाज देखता है। चार सू
बङ्गाल, पश्चिमोत्तर देश, पंजाब और ब्रह्मा
लोकल (स्थानिक) गवर्नमेण्ट कहलाते हैं
इनके हाकिम लेफ़्टिनेण्ट गवर्नर कहलाते हैं और
यह लोग गवर्नर जनरल की तजवीज़ से मुक़र
होते हैं। इन छहों सूबों में दो बातें सब में पा
जाती हैं। प्रेसीडेन्सी और लोकल गवर्नमेण्टों
हाथ में कुछ रुपया ऐसा दे दिया जाता है जि
पर उनको बहुत कुछ अधिकार है और इन स
में कानून बनाने की कौंसिल (सभायें) हैं। बाक
७ सूबे लोकल ऐडमिनिस्ट्रेशन (स्थानिक शासन
कहे जाते हैं। तीन छोटे सूबे, बरार, अजमे
और कुर्ग, गवर्नर जनरल के आधीन हैं। मध
देश और आसाम के हाकिम चीफ कमिश्नर हैं
इन में और लोकल गवर्नमेण्टों में भेद बहु
कम है। बलोचिस्तान सिन्ध के पश्चिम है
अण्डमान जिसे काला पानी भी कहते हैं क़ैदिये
से बसाया गया है। यह बात प्रगट है वि

हिन्दुस्थान को बराबर बराबर सूबों में बांटने का कोई यत्न नहीं किया गया और उनकी सीमा नियत करने में कोई नियम नहीं रक्खा गया। इसका कारण यह है कि ज्यों ज्यों सर्कारी राज बढ़ता गया, सूबे बनते गये। जब अङ्गरेज़ी कम्पनी हिन्दुस्थान में ब्यौपार करने आई तो उसे कभी सपने में भी इस बात का ध्यान न हुआ था कि हम लोग कभी हिन्दुस्थान में राज करेंगे। जहां तक हो सका लड़ाई झगड़े से बचती रही पर बहुतसी बातें ऐसी आ पड़ीं जिन में उसका कुछ बस न चला और सूबे किसी नियम से नहीं बरन अपने बचाव के उद्योग में बन गये। सूबों का प्रबन्ध समझने के लिये पिछली बातों पर ध्यान देना चाहिये॥

३४—मदरास॥

हिन्दुस्थान के अङ्गरेज़ी सूबों में से मदरास सब से पुराना है। सन् १६३९ ई० में एक छोटे राजा ने अङ्गरेजी कम्पनी के हाथ वह धरती

बेची जिस पर अब किला सेण्टजार्ज बना है। क्योंकि उसको अङ्गरेजों के साथ ब्यापार करने में बड़े भारी लाभ की आशा थी। सन् १६५३ ई० में वह छोटी बस्ती जो ऐसी उचित रीति से अङ्गरेज़ों के हाथ आई थी प्रेसीडेन्सी बना दी गई पर १०० बरस पीछे इसे फ़रासीसियों ने छीन लिया। जब यह अङ्गरेज़ों को फेर दिया गया तो लड़ाई का परिणाम उलटा हो गया और सन् १७५७ ई० में फ्रांसवालों के हाथ से मछलीपट्टन भी जाता रहा। आठ बरस पीछे दिल्ली के बादशाह शाह आलम ने क्लइव को उत्तरी सर्कार दिया। कुछ दिन पीछे फ्रांसवालों ने पास पड़ोस के देशी राजाओं से मेल करना चाहा। उनको यह आशा थी कि सब मिल-कर अङ्गरेजों को निकाल देंगे। मैसूर राज्य के हिन्दू राजा का एक मुसलमान सेनापति हैदर अली जिसने अपने मालिक को हटाकर उसका राज्य छीन लिया था उनकी मदद को मिल गया। इस पर हैदर अली और उसके बेटे के

साथ अङ्गरेजी सर्कार की कई बरस लड़ाई रही और अन्त को मैसूर का राज्य फिर हिंदुओं

लार्ड क्लाइव ॥

के हाथ आया और मदरास हाते में और पांच

ज़िले भी मिला दिये गये। हैद टजार्ज बना है।
ने दो ज़िले और दिये और सं ब्यापार करने
कर्नूल इस में मिल गया। उस सा न १६५३ ई०
का सूबा पूरा हो गया। पर सन् १८६२ ई० से
मदरास की गवर्नमेण्ट ने उत्तरी कनारा दो
उत्तरी ज़िला बम्बई गवर्नमेण्ट को दे दिया ने
इसी रीति से मदरास ब्यापार की बस्ती से
फ्रांसवालों की लड़ाई, बादशाह के दान और
मैसूर के नवाब की हार के कारण हिन्दुस्थान
का एक पक्का सूबा बन गया जिस का
क्षेत्रफल १८११८१ वर्गमील और जिस में
३५५००००० आदमी बसते हैं ॥

३५—बम्बई ॥

जिस साल हिंदू राजा ने अंगरेजी ब्यापारियों
को मदरास में बुलाया उस से २६ ही बरस पहले
दिल्ली के बादशाह की आज्ञा से हिन्दुस्थान के
पच्छिम में अंगरेजों की एक दूकान खुली थी।
यह आज्ञा सन् १६१४ में दी गई थी और इस

से इङ्गलिस्तान के उस समय के बादशाह जेम्स के व्यापारियों को हिन्द के राज्य में बिना रोक टोक व्यौपार करने की आज्ञा मिल गई थी। जब बम्बई इङ्गलिस्तान के बादशाह को पुर्तगाल-वालों से मिला तो बीसही बरस में सूरत से सदर दूकान उठाकर बम्बई में लाई गई और सन् १७०८ ई० में यह बस्ती प्रेसीडेन्सी कहलाई। अङ्गरेजों का बम्बई में जाना परम उचित अधिकार से हुआ पर इनके चारों ओर मरहठे फैले हुये थे जिन्हों ने पीछे से पूना में अपना राज स्थापित किया। सूरत की दूकान खुलतेही शिवा जी की बढ़ती होने लगी और १०० बरस तक फ़र्मानशाही (आज्ञा पत्र) से अङ्गरेज़ी सौदा-गरों को कुछ विशेष लाभ न हुआ। पेशवा नारायण राव के मारे जाने और पूना में गड़-बड़ मचने पर राघोबा ने अङ्गरेजों से सहायता मांगी और बसीन, सालसट और बम्बई के पास पास के छोटे छोटे टापू अङ्गरेजों को दिये। राघोबा की ओर से अङ्गरेज़ लड़े पर वर्गाम

के खेत में दोनों हार गये और लड़ाई बढ़ती गई। जब तक एक पक्ष दूसरे को दबा न लेता तब तक यह कैसे हो सकता था कि दोनों में कोई चुप रहता? नई नई संधियों से नई नई लड़ाइयां होने लगीं। दूसरी मरहठा लड़ाई में बाहुबल से सूरत भड़ौंच और कैरा जीत लिये गये और सन् १८१७ ई० में कैरा की लड़ाई के पीछे कोंकण और दक्खिन देश बम्बई हाते में मिला लिये गये। सन् १८४३ ई० में सर चार्लस नेपियर ने सिंध को मिला लिया और अरब देश का अदन बन्दर जो १८३९ ई० में छीन लिया गया था बम्बई हाते का एक भाग बना दिया गया। बम्बई हाता पूरा हो गया। अब इसका क्षेत्रफल १२५१४४ वर्ग मील है और इस में १९००००० की आबादी है।

३६—बङ्गाला ॥

बङ्गाले की बढ़ती इन से भी जल्दी हुई। मदरास और बम्बई में पहले कम्पनी को थोड़ी

ही धरती पर अधिकार मिला था। दूकान से सूबा बनना उस झगड़े का परिणाम था जो अङ्गरेजों को उस छोटी सी बस्ती के बचाने के लिये करना पड़ा। दक्खिन में फ्रांसीसी हैदर अली और मरहठे अङ्गरेज़ों को देश से निकाल देने की धमकी दे रहे थे। इस पर अङ्गरेज़ों ने उनका सामना किया और जय पाने पर लड़ाई की लूट उनके हाथ लगी। बङ्गाले में लन्दन के सौदागरों की उसी कम्पनी को दिल्ली के बादशाह से मेदनीपुर ज़िले के पिपली नगर से व्यापार करने की आज्ञा मिली। पर सन् १६४२ ई० तक कोई दूकान या गोदाम नहीं बनाया गया। पीछे बालासोर में दूकान खुली। हिन्दुस्थानी हाकिम परदेसी व्यापारियों को दबाते थे और जब वह लोग अपने बचाव का यत्न करते तो उनकी दूकान छीन लेते थे। इस पर सन् १६९८ ई० में कम्पनी ने बङ्गाले के हाकिम से कलकत्ता मोल लेने की आज्ञा ली और कुछ दिन तक उनका काम अच्छा चला।

सन् १७५६ में बङ्गाले के सूबेदार सिराजुद्दौला ने कलकत्ते पर चढ़ाई की और ५ वीं अगस्त को १४६ अङ्गरेज़ काली कोठरी में भर दिये। रात भर में १२३ मर गये। दूसरी जनवरी सन् १७५७ ई० को जब क्लइव मद्रास से एक सेना लेकर आया तब फिर यह बस्ती अङ्गरेज़ों के हाथ लगी। इसके पीछे २३ जून को पलासी की लड़ाई में अङ्गरेज़ों की जीत हुई और सन् १७६५ ई० में शाह आलम बादशाह ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को बङ्गाल बिहार और उड़ीसा की दीवानी दे दी। इस एक चाल से कम्पनी को एक बड़ा राज मिला। सन् १८०३ ई० में मरहठों ने नाहक उड़ीसा पर चढ़ाई की पर वे हार गये और सर्कारी बङ्गाले का पूरा सूबा जिस में उन दिनों पश्चिमोत्तर देश के भी ज़िले मिले थे बङ्गाल के एक गवर्नर जनरल के अधिकार में कर दिया गया। सन् १८३४ ई० तक ऐसाही रहा। इस साल बङ्गाले के गवर्नर जनरल को हिन्दुस्थान के गवर्नर जनरल की पदवी मिली।
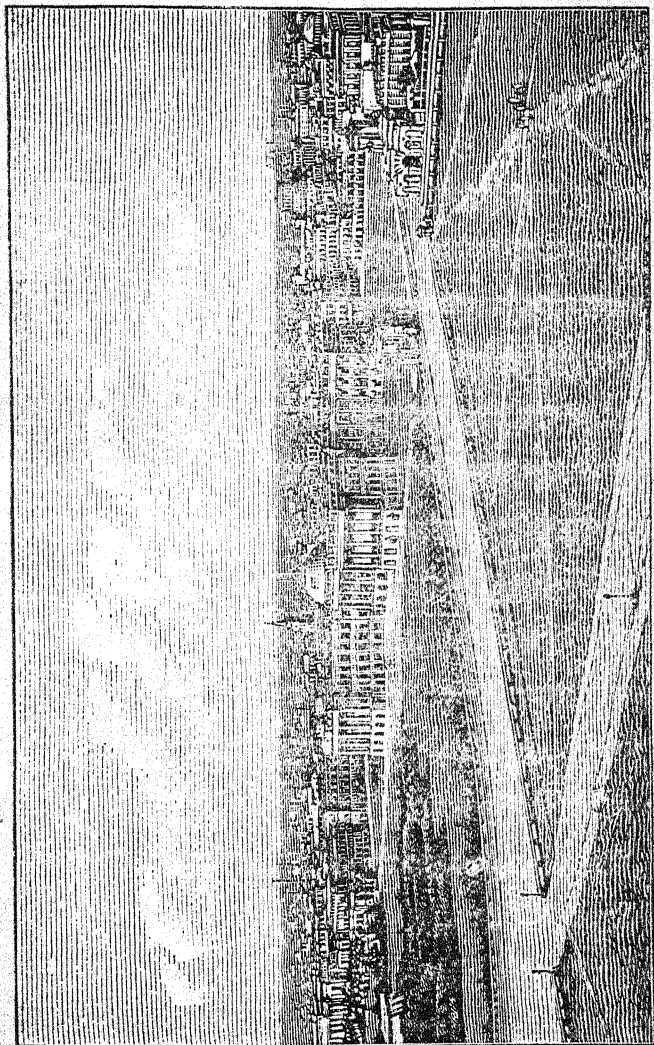
कलकत्ता ॥

सन् १८५४ ई० तक अकेला बङ्गाले का शासन वही करता रहा इसके पीछे बङ्गाले का एक लेफ़्टिनेण्ट गवर्नर भी मुकर्रर किया गया। सन् १८३६ ई० में पश्चिम के ज़िले बङ्गाले से निकाल लिये गये और एक नया सूबा पश्चिमोत्तर देश बना। सन् १८५० ई० में बङ्गाले में शिकम की और सन् १८६५ में भूटान की कुछ धरती मिल गई। सन् १८७४ ई० में बङ्गाले की लोकल गवर्नमेण्ट का काम भारी देखकर आसाम अलग कर दिया गया। फिर भी हिन्दुस्थान के सूबों में बङ्गाला आबादी में पहला और क्षेत्रफल में दूसरा है। इसका क्षेत्रफल १५१५४३ बर्ग मील और इस में ७ करोड़ १० लाख से ऊपर आदमी बसते हैं। इसकी राजधानी कलकत्ता है। अब तुम ने देखा कि बङ्गाले का राज्य भी कैसी उचित रीति से मिला है। पहले कलकत्ता बचाने का उपाय होता रहा पीछे कालीकोठरी की बिपत्ति पड़ने पर बदला लिया गया फिर अङ्गरेज़ी सौदागरों को सूबे

पर राज्य करने का अधिकार बादशाह से मिला। बादशाह के फ़र्मान में बहुत बड़ा देश दिया गया था जिस में बङ्गाला और आसाम हीं न थे बरन पड़ौस के उस सूबे के भी कुछ हिस्से थे जिनका ब्यौरा आगे लिखा जायगा ॥

३७—पश्चिमोत्तर देश ॥

इस सूबे के नामही से कम्पनी की नीति की चाल अब तक जानी जाती है। जब सूबा बङ्गाला अङ्गरेज़ों को मिला तो वहां के लोग थोड़ेही दिनों में धन सम्पत्ति से भरपूर हो गये। पर उसके आगे का देश लड़ाई झगड़े का घर बना रहा। जिन सौदागरों ने बङ्गाले का राज्य पाया था उनकी इच्छा यह कभी न थी कि अपना भार बढ़ाते। पर अपने राज्य को बचाने के लिये उनको मरहठों से और नैपा-लियों से लड़ना पड़ा। अवध के नवाब वज़ीर को बादशाह इसी आसरे से बनाया कि एक बड़ा राज्य पड़ोस में रहने से कम्पनी के राज्य

की भी रक्षा होगी। अवध के बादशाह से उनकी आशा पूरी न हुई और सेंधिया और हुल्कर की सेना लार्ड लेक से भिड़ गई। अवध से संधि हुई उस से और मरहठों की हार से कुछ ज़िले मिल गये और वह ज़िले "दिये हुये और जीते हुये" ज़िले कहलाये। नैपाल की लड़ाई से कुछ पहाड़ी देश मिल गया और दो बरस पीछे सीताबल्दी की छावनी पर चढ़ाई के कारण नागपुर का राजा गद्दी से उतार दिया गया और इन्हीं ज़िलों में कुछ दक्खिन के ज़िले भी मिला दिये गये। अवध का राज टूटने से वह भी इसी में जुड़ गया और गदर के पीछे सागर नर्बदा का देश मध्य देश में मिला दिया गया। दिल्ली पञ्जाब में चला गया। राजधानी आगरे से इलाहाबाद को उठ आई। बहुत दिनों तक यह सूबा जिसे अकबर के राज में इलाहाबाद कहते थे सिवाने के झगड़ों की मार सहता रहा और चारों ओर बैरियों के धावों के कारण बली हो गया था। अब

इस सूबे का हाकिम लेफ़्टिनेण्ट गवर्नर है इसका पुराना नाम भी नहीं बदला पर यह देश पश्चिमोत्तर देश की पुरानी हद से बहुत बढ़ा हुआ है। इसका क्षेत्रफल १०७५०३ वर्ग मील है और इस में ४७०००००० की आबादी है ॥

३८—पञ्जाब ॥

पंजाब का सूबा भी बङ्गाले की तरह एकही चाल में हाथ आ गया। इसके लिये पश्चिमोत्तर देश की तरह से बहुत दिनों तक लड़ाई बखेड़ा करना नहीं पड़ा। इसका कारण यह था कि बहुत दिनों तक अङ्गरेजी कम्पनी इस बात का उद्योग करती रही कि पच्छिम की ओर इसका राज्य न बढ़े। इसी कारण वही नीति जो अवध के साथ बर्ती गई थी पञ्जाब को देशी राज बनाने में काम में लाई गई। सन् १८०९ ई० में कम्पनी ने रंजीत सिंह के साथ एक संधि की जिस से सिक्खों के राजा को सतलज के पार का देश छोड़ दिया गया। रंजीत सिंह ने छोटे छोटे

राजों को मिलाकर और एक बड़ी सेना रखकर सारा पञ्जाब जीत लिया। पर सेना सेनापतियों के बस में न रही और सन् १८४५ ई० में उसमें ७२ हज़ार सिपाही और ३८१ तोपें थीं। इसी साल १३ दिसम्बर को गवर्नर जनरल ने एक इश्तिहार जारी किया और उस में यह कहा कि "सर्कार अङ्गरेज़ बड़ी सच्चाई से सन् १८०९ ई० की संधि पर स्थिर रही है और जी से चाहती है कि प्रबल सिक्ख राज पञ्जाब में स्थापित हो जो प्रजा की रक्षा करे और सेना को अपने बस में रक्खे" इस पर भी सिक्खों ने बिना किसी छेड़छाड़ के सर्कारी अमलदारी पर चढ़ाई की। संधि के तोड़ने के लिये दण्ड देने को सतलज के पच्छिम दलीपसिंह का राज छीन लिया गया और इसके पीछे जो लड़ाइयां हुईं उन में बचे बचाये ज़िले भी सरकार के हाथ सन् १८४९ ई० में आ गये। पहले इस देश पर तीन मेम्बरों का एक बोर्ड शासन करता था पीछे सन् १८५३ ई० में यह चीफ़ कमिश्नर

और फिर सन् १८५९ ई० में लेफ़्टिनेण्ट गवर्नर के आधीन किया गया। इसका क्षेत्रफल ११०६६७ वर्गमील और आबादी २१०००००० है और इसकी राजधानी लाहौर है॥

३९—मध्य प्रदेश॥

हम लिख चुके कि सागर का सूबा जो सेंधिया से जीता गया था और नर्बदा के ज़िले जो नागपुर के राजा से सन् १८१८ ई० में मिले थे पहले पश्चिमोत्तर देश से अलग कर दिये गये। जब नागपुर का राजा तीसरा राघव जी सन् १८५३ ई० में बे वारिस मर गया तो उसका राज्य इन्हीं सूबों में मिला दिया गया। सन् १८६० ई० में निज़ाम ने गोदावरी का ज़िला और सेंधिया ने नीमर का ज़िला और ज़िलों के बदले में सर्कार को दिया। यह भी मध्य के ज़िलों से मिला दिये गये और सन् १८६१ ई० में इन सब का एक सूबा बना कर एक चीफ़ कमिश्नर के आधीन किया गया।

इन १८ ज़िलों का क्षेत्रफल ८६५०१ वर्गमील है और इन में ११०००००० आदमी बसते हैं। इस सूबे का सदर नागपुर है ॥

४०—आसाम ॥

इस सूबे के कुछ हिस्से और दो ज़िले, सिलहट और ग्वालपाड़ा सन् १७६५ ई० की दीवानी के फर्मान से मिले थे। और ज़िले सन् १८२६ ई० में ब्रह्मावालों से छीन लिये गये थे। कुछ पहाड़ी हिस्से जिस में जङ्गली लोग बसते हैं समय समय पर इन लोगों के दण्ड देने के लिये मिला लिये गये क्योंकि जंगली लोग सर्कारी गांवों पर छापा मारते थे। यह सब ज़िले १८७४ ई० में बङ्गाल से अलग कर दिये गये और आसाम के नाम का एक सूबा बना कर चीफ़ कमिश्नर के आधीन किया गया। इसका क्षेत्रफल ४९००४ वर्गमील और इसकी आबादी ५५ लाख है। शिलांग इसका सदर है। आसाम भर में कोई शहर ऐसा नहीं जिस में २० हज़ार आदमी बसते हों ॥

४१—ब्रह्मा ॥

अङ्गरेज़ी सरकार को पंजाब और पश्चिमोत्तर देश में राज्य की सीमा न बढ़ने की चिन्ता थी ही पर पूरब में जाकर राज्य का भार अपने ऊपर लेना कभी यह चाहती ही न थी। संधि या लड़ाई का निपटारा अङ्गरेजों के हाथ होता तो आवा का दरबार अब भी ब्रह्मा का राज करता होता। पर ब्रह्मा के हाकिमों ने बारबार छेड़छाड़ की और इस से अङ्गरेजों को अपने अधिकार की रक्षा के लिये उन से लड़ना पड़ा। पहिली जनवरी सन् १८८६ ई० को ब्रह्मा के उत्तर और दक्खिन भाग मिला लिये गये। यह बात तुम लोग न भूले होगे कि बादशाह ने कम्पनी को जो दीवानी दी थी उस में आसाम और चटगांव के जिले अराकान से मिले थे। ब्रह्मा के राजा ने सन् १७८४ ई० में आराकान को जीत लिया और ४० वर्ष पीछे मुरशिदाबाद तक बंगाले पर दावा किया। कम्पनी के राज से छेड़छाड़ हुई इस पर गवर्नर

जनरल लार्ड एमहर्स्ट्र ने आवा के राजा को एक डांट की चिट्ठी लिखी। उस का वहां से यह उत्तर आया कि "सेत हाथी के राजा धरती और समुद्र के स्वामी की यह इच्छा है कि हमारे चरणों को और कोई चिट्ठी पत्री न भेजी जाय" झगड़े का निपटारा करने के लिये ऐसा उत्तर पाकर सर्कार और क्या कर सकती थी। लड़ाई छिड़ गई और सन् १८२६ ई० में आराकान टेवा और तनासिरम के सूबे कम्पनी ने अपने अधिकार में कर लिये और एक सन्धि पत्र लिखा गया जिस में ब्रह्मावालों ने कम्पनी के व्यापार की रक्षा करने की प्रतिज्ञा की। ब्रह्मा वाले इस संधि पर स्थिर न रहे और सन् १८५२ ई० में रंगून के हाकिम ने कप्तान क्रिसबोर्न को जान बूझकर छेड़ा। इस पर रंगून छीन लिया गया और पीगू राज में मिला लिया गया। इस के पीछे भी सर्कार के दूत के साथ बहुतही बुरा बर्ताव होता रहा और सन् १८८५ ई० में राजा थीबा ने दक्खिन ब्रह्मा पर चढ़ाई करनी

चाही। लड़ाई होने लगी और लार्ड डफ़रिन ने उत्तरी ब्रह्मा भी अपने आधीन कर लिया

लार्ड डफरिन।

सन १८६२ ई० से दक्खिन ब्रह्मा में चीफ कमिश्नर

रहता था पर सन् १८९७ ई० में उत्तर और दक्खिन ब्रह्मा मिलाकर एक चीफ़ कमिश्नर के आधीन कर दिये गये। सब का सदर रंगून है। आज दिन हिन्दुस्थान की पूर्वी सीमा उत्तर की ओर चीन से पूर्व फ्रांस के राज से मिली है। शान देश को छोड़कर इस का क्षेत्रफल १७१४३० वर्गमील और इस की आबादी ७५ लाख है। रक़बे में ब्रह्मा सब सूबों से बड़ा है। पहिले लड़ाई झगड़े के कारण इसकी आबादी बढ़ने न पाई थी पर अब आशा है कि शांति पाकर आबादी बढ़ जायगी। रंगून का बन्दरगाह सर्कार की रक्षा में अब भी व्यापार की बड़ी भारी जगह है॥

४२—बाकी पांच सूबे॥

बाक़ी सूबों का थोड़ाहीसा ब्यौरा लिखने से आज कल के अङ्गरेजी राज्य बनने का बर्णन पूरा हो जायगा। अजमेर और मेरवाड़ा राजपूताने में हैं। अजमेर सन् १८१८ ई० में उस देश के बदले में सेंधिया से मिला था जिसे अङ्गरेजों

ने पेशवा से पाया था। मेरवाड़ा, कम्पनी के हाथ उस समय लगा जब मेवाड़ और मारवाड़ को लुटेरों से बचाने के लिये अङ्गरेज़ी सेना भेजी गई थी। राजपूताने का राज्यप्रतिनिधि अजमेर का कमिश्नर भी है॥

बरार, बम्बई से नागपुर आते हुये दो पहाड़ियों के बीच में बसा हुआ है। निजाम ने एक संधि के अनुसार एक सेना के ख़र्च को यह देश अङ्गरेजों को दिया था। इस में ६ ज़िले हैं जिन का क्षेत्रफल १७७१८ वर्गमील और आबादी २८७९००० है। यह सर्कारी हिन्दुस्थान में इस लिये गिना गया है कि इस का शासन गवर्नर जनरल के हाथ में है पर कानून से यह अङ्गरेजी राज्य के बाहर है॥

कुड़ग—मैसूर राज्य के पच्छिम पहाड़ियों के बीच में यह छोटासा सूबा बसा है। यहां के राजा बीर राजेन्द्र बहादुर ने अपनी प्रजा को बड़ा दुख दिया तब लोग हारकर कम्पनी की सरन आये। सन् १८३४ ई० में लड़ाई हुई और

लार्ड विलियम विंटिङ्क ने प्रजा की सम्मति से इस को सर्कारी राज्य में मिला लिया। इस की राजधानी मरकरा है और मैसूर का रजीडेण्ट चीफ़ कमिश्नर के नाम से इस सूबे का शासन करता है क्योंकि कुड़गवालों ने चाहा था कि हमारा सूबा अलग रहे ॥

सर्कारी बिलोचिस्तान—इस का क्षत्रफल १८०२० वर्गमील है। यह हिन्दुस्थान में अङ्गरेजी राज की पच्छिमी हद्द है। इसका शासन एक चीफ़ कमिश्नर करता है जो क़ता में रहता है। क़ता सन् १८७९ ई० में, बेरी घाटी १८८४ ई० में, ज़ोब का ज़िला १८८९ ई० में अंगरेजों के हाथ आया है॥

अंडमान—इसका सदर पार्ट ब्लेयर है। सन् १८५८ ई० में हिन्दुस्थान के देशनिकाले के अपराधियों के रहने की यही जगह बनाई गई। यह रंगून से ४५० मील की दूरी पर है। इस में चार मुख्य टापू और कई और छोटे टापू हैं और इस में छोटे डील के काले आदमी बसते हैं। यह टापुओं का एक झुण्ड है जो बंगाले

के दक्खिन पूर्ब कोने पर हुगली के दहाने से १०० मील पर समुद्र में हैं ॥

४३— छोटे बीज ॥

अब तुमने देखा कि हिन्दुस्थान में अंगरेजी राज्य की बढ़ती कानून, शांति और ब्यापार के छोटे बीजों से हुई जो इस देश के किनारे सौदागरों की कम्पनी ने बोये थे। इन बीजों से जो पेड़ उगे उन्हीं की छांह में बम्बई सूरत कलकत्ता और मद्रास, बड़े बड़े शहर बन गये और आस पास के ज़िले और राज्य दिन रात के झगड़े बखेड़े से हलाकान होकर उन बली लोगों की सरन में आये जो समुद्र पार दूर देश से आये थे और जो ऐसे जान पड़ते थे कि हिन्दुस्थान के रहनेवालों को वह शांति और सुख देंगे जिसके लिये लोग तरस रहे थे। देश के बैरी जो गांव जलाते, ज़िले उजाड़ते, और लोगों को मारते फिरते थे उनको हिन्दुस्थानी बिना सहायता के दबा नहीं सकते थे। पंजाब में कर्नाल के बिषय में यह लिखा

है कि २२१ गांव में १९८ उजड़े पड़े थे। मध्य देश में भी ऐसे ज़िले बहुत से बताये जा सकते हैं। दिन रात की लड़ाई से लोगों की शांति में रहने और धर्म पालने की बान छूट गई थी। इस कारण डरे हुये लोगों ने ऐसे राज्य को अङ्गीकार किया जो प्रजा की रक्षा करै और देश में शांति लाये। अङ्गरेजी व्यापारियों को क्या किसी को न आस थी न इच्छा थी कि हिन्दुस्थान में राज किया जाय। पर जो लोग बम्बई को भाग गये थे और जो बात कुड़गवालों ने की उनकी देखा देखी और लोग भी सर्कार की सरन आ गये क्योंकि देश के लिये कुशल ऐसेही लोगों से मिलकर रहने में देखी गई जो हिन्दुस्थानियों को राजउपद्रव और अनीति को लड़कर दबाना सिखा सकते हैं॥

गये बिनसि बैरी सकल, मुंह में कारिख लाय।
जिन बीजन लखि हसत हे, सोइ अब अवसर पाय॥
उगे बढ़े फैलत चले, छाय रहे सब देश।
भुज सम साख पसारि जनु, चाहत छुवन दिनेश॥

पांचवां अध्याय।

देशी रजवाड़े ॥

४४—पराये राज ॥

जो लोग नक़शा देख सकते हैं वे इस बात को देखेंगे कि जिन ज़िलों और सूबों का ब्यौरा हमने ऊपर लिखा है उनके सिवाय हिन्दुस्थान में और भी बड़े बड़े देश पड़े हैं। इन देशों में कहीं कहीं कई बड़े बड़े राज्य एक दूसरे के पड़ोस में हैं। कोई एक बड़ा देश एकही राजा के आधीन है और कोई अङ्गरेज़ी जिलों के बीच बीच में छिटके हुए हैं। इन सब का क्षेत्रफल अङ्गरेज़ी राज्य के क्षेत्रफल के आधे से कुछ थोड़ा ही कम है। और ८०० छोटे छोटे राज्य भी इसी गिनती में हैं। कुछ तो बड़े हैं और किसी किसी में दसही बीस गांव हैं। पर छोटे हों या बड़े एक बात सब में देखी जाती है। यह सब हिन्दुस्थान ही के भाग हैं और हिन्दुस्थान में

अङ्गरेज़ी शासन के आधीन समझे जाते हैं। पर यह उस राज्य के हिस्से नहीं हैं जिस पर अङ्गरेज़ शासन करते हैं और जिस को सर्कारी हिन्दुस्थान कहते हैं। इनकी रक्षा राजराजेश्वरी करती है पर राजराजेश्वरी के सेवक इन पर शासन नहीं करते। इनकी प्रजा पर सर्कारी अदालतों का अधिकार नहीं है। जो लोग इन में रहते हैं वे अपने अपने राजाओं के आधीन हैं और यह राज्य अङ्गरेज़ी नहीं बरन पराये हैं। पर इस से यह न समझना चाहिये कि सर्कारी हिन्दुस्थान के रहनेवालों को इनका ब्यौरा जानने का कुछ काम नहीं। पिछली बातों के बिचार करने से यह जाना गया है कि रजवाड़ों में अच्छा शासन और उनकी प्रजा की उन्नति से अंगरेज़ी सर्कार और उसकी प्रजा को बहुत कुछ प्रयोजन रखना चाहिये। इन देशों में गड़बड़ मचे तो पास पड़ोस के अंगरेज़ी सूबों का उपद्रव से बचना कठिन हो जाय। यह बात पिंडारियों

की लड़ाई से सीखी गई है। अगर सेना अप ने सेनापतियों के बस में न रहै जैसा कि ग्वालियर और पंजाब में हुआ था तो महराजपुर और सुबरांव की सी लड़ाइयां फिर लड़नी पड़ेंगी। अगर कोई बली राजा अङ्गरेजों के वैरियों से मेल करें जैसा कि एक बार टीपू सुलतान ने फ्रांसवालों से किया था तो जल और थल दोनों की लड़ाई छिड़ जाय। राज नष्ट हो जाय और सर्कारी हिन्दुस्थान को भी हानि पहुंचे। ऐसेही नित्य के काम काज में भी है। जो राजा अङ्गरेज़ी ज़िलों के बीच बीच में राज कर रहे हैं वह अगर डाकू बुलायें या सती होने दें और लड़की मारने की रीति चलने दें, जो अङ्गरेज़ी राज में मना है, तो अङ्गरेज़ी कानून और नीति में भी बाधा पड़ेगी। इस कारण देसी राजा और अङ्गरेज़ी हिन्दुस्थान दोनों की कुशल इसी में है कि देसी राजा अंगरेज़ी सर्कार से मेल रक्खें और आप भी बने रहें॥

४५—भूत और वर्त्तमान ॥

ऐसा कोई काम नहीं है जिसका अंगरेज़ी सर्कार को इतना गर्ब हो जितना कि अपनी अमलदारी के बीच बीच में बसे हुये बहुत से हिन्दुस्थानी राजाओं को बचा रखने का है। अंगरेज़ी अमलदारी से पहिले इन राज्यों को या तो दिल्ली के बादशाह या पंजाब के सिंह रंजीतसिंह ऐसे बली राजा अपने अधिकार में कर लेते थे और या जैसा मध्यदेश में होता था कि आपस में लड़ा भिड़ा करते थे। पिछले दिनों में दोही बातें थीं एक बड़े राज्य में मिल जाना या उपद्रव में पड़ा रहना। सूरत, मदरास, कलकत्ता, बम्बई की दूकानों को बचाने के लिये जो लड़ाइयां कम्पनी को लड़नी पड़ीं उन में जय पाने पर भी देसी राजाओं को शुभचिन्तक पड़ोसी और मित्र बनाना कठिन था। इस काम के लिये कई बार नीति बदलनी पड़ी पर उस नीति पर दृढ़ रहने से जिसे हिन्दुस्थान के सिक्रेटरी

आफ़्स्टेट ने सन् १८६० ई० में लिखा था, अन्त में काज सिद्ध हो गया। "हम लोगों के राज बढ़ाने से इसका अचल रहना सिद्ध न होगा वरन अंगरेज़ी नीति यह है कि जो देस अब तक हमारे अधिकार में आ गया है उसका शासन उचित रीति से हो और जैसे हम लोग अपने अधिकार और धर्म को मानते हैं वैसेही औरों के अधिकार को भी मानें" ॥

४६—लार्ड कार्न वालिस ॥

अब हम यहां वह बातें लिखेंगे जो कम्पनी ने देसी रजवाड़ों की रक्षा के लिये आदि में की थीं। पहिली चाल ठीक न पड़ी और बरसों तक बराबर लड़ाई होती रही। अंगरेजी सौदागर जो बादशाही सनद लेकर समुद्र के किनारे अपनी दुकानें खोलकर सीधे सीधे अपना ब्यौपार करते थे उनकी कभी इच्छा न थी कि ब्यौपार के बदले राज करें और इसका कभी उनको ध्यान भी न हुआ था। उनका

पहिला काम यही था कि ब्यापार से लाभ उठाने का यत्न करें और लड़ाई झगड़ों में न पड़ें। जब उन्हें हारकर अपने बचाव का उपाय करना पड़ा ता अंगरेज़ी पार्लीमेण्ट ने उनको राजशासन का भार लेने से रोका। इसी बिचार से तीसरे जार्ज के राज्य में सन् १७९३ ई० में एक क़ानून बनाया गया जिसका अभिप्राय यह था "देश जीतना और राज बढ़ाना ऐसी बातें हैं जो अंगरेज़ जाति की इच्छा; भलमंसी और नीति तीनों के बिरुद्ध है। इंगलिस्तान में हाकिम इस आज्ञा के पालने में यथाशक्ति तत्पर रहैं।" उसी सेक्रेटरी ने हिन्दुस्थान में अपने सेवकों को हुकुम दिया कि सरकारी अधिकारी देशी रजवाड़ों से लड़ने भिड़ने या सन्धि करने से जहां तक हो सके हटे रहें। इस आज्ञा को पाकर लार्ड कार्नवालिस ने उन देसी राजाओं की भी रक्षा करना स्वीकार न किया जो उनकी सरन आये थे और बहुतेरी संधियां जो उनके पहिले

गवर्नर जनरल ने और बम्बई के गवर्नमेण्ट ने की थीं तोड़ दीं। उनकी नीति यह थी कि जो रजवाड़े आपस में लड़ा भिड़ा करते थे उनके पीछे पड़ना ठीक नहीं। इसका परिणाम यह हुआ कि जंगल की आग की तरह लड़ाई फैलती गई और हथियारबन्द डाकू और लुटेरे जो देसी रजवाड़ों में सरन पाते थे अङ्गरेज़ी ज़िलों में लूट मार करने लगे॥

४७—लार्ड हेस्टिङ्गस॥

हेस्टिङ्गस जो लार्ड म्वायरा के नाम से प्रसिद्ध थे और सन् १८१३ ई० में हिन्दुस्थान के गवर्नर जनरल हुये और १० बरस तक रहे, उन्हों ने इस अलग रहने की नीति से जो अनर्थ हुआ उसको मिटाने का उपाय किया, और बहुत से रजवाड़ों को सर्कार अङ्गरेज़ की रक्षा में कर लिया। राजा राजा के बीच और राजा और कम्पनी के बीच में लड़ाई बन्द हो गई। ऐसी अभिसन्धियां की गईं जिन से सदा के लिये झगड़ा

निपट गया और उसी दिन से रजवाड़ों और अङ्गरेज़ी सूबों का सम्बन्ध जैसा चाहिये वैसा ही हो गया। इसके पीछे बहुत दिनों तक यह उचित समझा गया कि देसी रजवाड़ों को अपना राजशासन करने का पूरा अधिकार देना चाहिये। इसका भी परिणाम यह हुआ कि समय की सम्मति और सलाह न पाने के कारण उनका राजशासन बिगड़ने लगा और जब राजा बे वारिस मर गया तब लोग चाहने लगे कि यह राज अङ्गरेज़ी अमलदारी में मिल जाय॥

४८—लार्ड केनिंग॥

जब सन् १८५८ ई० में राजराजेश्वरी ने हिन्दुस्थान का शासन कम्पनी से लेकर अपने अधिकार में कर लिया तब से देसी राजों का अङ्गरेज़ी अमलदारी में मिल जाना बन्द हो गया और श्रीमती ने राजाओं को इस बात का विश्वास दिलाया कि वे अपने अधिकार पर स्थिर रहें और जिसको चाहें उसे अपना वारिस

बना लें। "जब तक सर्कार के शुभचिन्तक बने रहें और जो सन्धि उन्हों ने की है उस पर स्थिर रहें उनको इस बात का विश्वास दिलाया जाता है कि तब तक उनकी रक्षा की जायगी और उनका राज्य अचल रहेगा"। जब काम पड़ता है तब उनको सलाह बताई जाती है और कोई राजा योग्य न ठहरा तो उसकी जगह पर दूसरा बैठा दिया जाता है। इस से राज्यों की रक्षा होती है और वह दृढ़ हो जाते हैं। कोई राजा नाबालिग़ हुआ या अयोग्य निकला जैसा कि मैसूर और बड़ौदा में हुआ था तो सर्कार प्रबन्ध अपने हाथ में ले लेती है पर जब बिगड़ी बातें सुधर जाती हैं तो राज फिर देसी राजा के अधिकार में कर दिया जाता है इस रीति से आज दिन ५९५१६७ बर्गमील धरती देसी राजाओं के अधिकार में रक्खी गई है॥

४९—रजवाड़ों के प्रकार॥

देसी रजवाड़े कहां कहां हैं इस बात पर बिचार करने से इनके स्थिर रखने में जो

लार्ड केनिङ्ग ॥

कठिनाई पड़ती है वह समझ में आ जायगी। इन में और इनके बली पड़ोसी में जिन कारणों से बिगाड़ होने का डर है उनका भी जानना आवश्यक है। हिन्दुस्थान की गवर्नमेण्ट जिन राज्यों की रक्षा करती है वह तीन प्रकार के हैं। एक वह जो एक दूसरे से मिले हुए हैं और एकही एजण्ट के अधिकार में रक्खे गये हैं। दूसरे बड़े बड़े राज्य, तीसरे छोटे छोटे राज्य जो सर्कारी जिलों या सूबों के बीच में पड़ गये हैं। पहिली खानि के सब से बड़े बड़े समूह यह हैं, राजपूताने की एजण्टी, मध्य हिन्दुस्थान की एजण्टी, बलोचिस्तान और काठियावाड़। काश्मीर, हैदराबाद, मैसूर और बड़ौदा दूसरे प्रकार के हैं, पर त्रावनकोर, कोल्हापूर और कच्छ को भी छोटे न समझना चाहिये। तीसरी श्रेणी में बहुत से छोटे छोटे राज हैं जिन में कोई कोई ज़िले के बराबर और किसी किसी में दस पांच गांव ही हैं॥

५७—राजोंके समूह ॥

राजपूताना—इस एजण्टी का क्षेत्रफल १३०२६८ वर्गमील है और इस कारण यह बम्बई और सिन्ध दोनों से मिलकर बड़ी है। पर इसकी आबादी १२०००० ही है जो पच्छिमी हाते की आबादी की दो तिहाई से भी कम है। इस में २० राज्य हैं जिन में एक मुसलमान, दो जाट और बाक़ी राजपूत हैं। राजपूताने के उजाड़ देश में मुसलमानों के डर से हिन्दुस्थान से भागे हुए राजपूत सैकड़ों बरस से रहते हैं और उदयपुर (मेवाड़) जोधपुर (मारवाड़) और जयपुर के राजघराने सब से पुराने समझे जाते हैं। बीकानेर, जैसलमेर, भरतपुर, अलवर, कोटा, धौलपुर भी बड़े राज हैं। दिल्ली के बादशाहों के दण्ड और पिंडारियों और मरहटों की लूट मार से यह लोग बहुत दुखी थे। जब सन् १८१८ ई० में अङ्गरेजों ने इनको अपनी रक्षा में कर लिया तब से मुख्य राजप्रतिनिधि (एजण्ट) आबू में रहता है और गवर्नर जनरल का एजण्ट कहलाता है॥
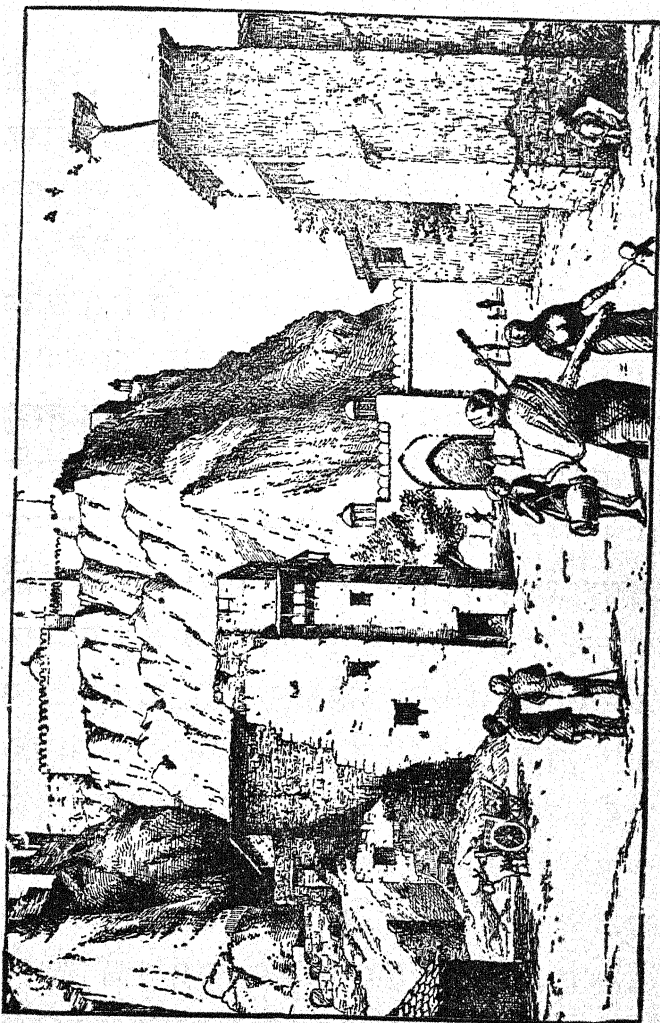
ग्वालियर ॥

५१—मध्य हिन्दुस्थान ॥

मध्य हिन्दुस्थान की एजण्टी में कई राज हैं सब के मिलने से हिन्दुस्थान के मध्य में ७७८०८ वर्गमील का एक बड़ा खण्ड धरती का बन गया है। क्षेत्रफल और आबादी दोनों में यह सर्कारी सूबे मध्यदेश की अनुहार है। ग्वालियर, इन में सब से बड़ा राज्य है। इस से छोटे इन्दौर, भूपाल, रीवां, रतलाम के नाम भी लिखने योग्य हैं। इस बड़े राज्यसमूह में बिचित्र बात यह है कि अनेक प्रकार की पदवी के बहुत से छोटे छोटे राज्य और राजा फैले हुये हैं और बहुत से छोटे छोटे राज्य जो नाम को बड़े बड़े राज्यों के टुकड़े कहे जाते हैं अलग अलग सर्कार के रक्षाधिकार में हैं। मुख्य राजाओं के अधिकार की भूमि के छोटे छोटे टुकड़े भी इधर उधर फैले हुये हैं। इसका कारण यह है कि सर्कार ने जो सन्धि की है उसके अक्षर अक्षर पर स्थिर रहना अपना धर्म समझती है। जब सर्कार बीच में पड़ी तो सारे

देस में लूट मार मची थी। अङ्गरेज़ी सेना ने यकायक शांति का ढंढोरा पिटवा दिया और जय पाकर लड़ाई दंगा एकदम बन्द कर दिया। जो धरती जिसके पास थी और जिसका जो अधिकार था उसको उसके हाथ में बनाये रखने का भार अपने ऊपर ले लिया। मुख्य राज प्रतिनिधि (एजण्ट) इन्दौर में रहता है और वहीं से बुंदेलखण्ड, बघेलखण्ड, ग्वालियर, नीमार और मालवा की निगरानी करता है॥

बलोचिस्तान॥

बलोचिस्तान हिन्दुस्थान की पच्छिमी हद्द पर सिन्ध नदी के उस पार है और ईरान और अफ़ग़ानिस्तान से हिन्दुस्थान की रखवाली करता है। इस में क़िलात के खान और लस-बेला के जैम का राज है और अङ्गरेज़ी सूबा क़ता के साथ इस पर गवर्नमेण्ट का एक हाकिम शासन करता है और वह क़ता में रहता है॥

काठियावाड़ ॥

कई राज्यों का एक और समूह ऐसा है जिसका ब्यौरा लिखना उचित है। यह काठियावाड़ है और बम्बई गवर्नमेंट के आधीन है। २००५५९ वर्गमील के भीतर इस में ऐसे ऐसे राज्य हैं जिनको देखने से यह समझ में आ जायगा कि सर्कार ने देसी राज्यों को अपने राज्य में न मिलाने के लिये कैसे कैसे यत्न किये हैं। पेशवा के साथ जो सन्धि हुई थी उसके अनुसार अङ्गरेज़ लोग इसको अपने अधिकार में कर सकते थे पर सर्कार ने यह अच्छा समझा कि १४७ छोटे छोटे राजाओं से सन्धि कर ले और यह लोग अपने राज्य में अच्छा शासन करें तो उनकी रक्षा का भार अपने ऊपर ले। इन में से ८० राज्य कुछ दिन में बड़े बड़ों से मिल गये और देश के दाय-विभाग (क़ानून वरासत) के कारण एक एक के कई टुकड़े हो गये। सन् १८६३ ई० में यहां ४१८ छोटे छोटे राज्य थे और उनके अधि-

कारियों में लड़ाई झगड़ा और देश में डकैतियों से यह समझा जाता था कि अब यह राज्य सब अङ्गरेज़ी अमलदारी में मिल जायँगे पर इसकी नौबत न आने पाई और बड़े बड़े राज्यों को भिन्न भिन्न अधिकार देकर उनके दर्जे कर दिये गये। छोटे छोटे राज्यों के थाने कर दिये गये और एक सर्कारी हाकिम उन मुक़द्दमों के फ़ैसला करने को रक्खा गया जो ठाकुरों के इख़्तियार से बाहर थे। इसी रीति से काठियावाड़ फिर भी देशी राजाओं के हाथ में रह गया। अङ्गरेज़ी क़ानून और अङ्गरेज़ी अदालतों का अधिकार यहां नहीं है॥

५१—बड़े राज॥

हैदराबाद—हिन्दुस्थान में एक राजा के अधिकार में दो सब से बड़े राज्य हैं उनका शासन राजाओंहीं के आधीन है। दो चार के नाम ऊपर लिखे गये अब यहां उन राज्यों का हाल लिखेंगे जो उस समूह में नहीं हैं। हैदराबाद

ऐसाही एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ८२६९८ वर्गमील है और अङ्गरेज़ी सूबा मध्यदेश के बराबर है। इसको पहिले पहिल दिल्ली के बादशाह के एक सेवक ने अपने अधिकार में किया था और जब मुसलमानों का बल घटने लगा तो वह इसका राजा बन बैठा। इसके पीछे जो इस देश के हाकिम हुए उन्हें सर्कार की सहायता करने के कारण और भी ज़िले मिल गये॥

कश्मीर—कश्मीर भी हैदराबाद ही के बराबर है और सन् १८४६ ई० में सुबरांव की लड़ाई में सिक्खों के हारने पर यह राज अङ्गरेज़ों ने बनाया। सिन्ध और रावी के बीच जो देश जीता गया था वह अमृतसर की सन्धि में जम्बू के राजा गुलाबसिंह को दे दिया गया॥

मैसूर—मैसूर हिन्दुस्थान के दक्खिन में बहुत बड़ा राज है। इसका क्षेत्रफल २८००० वर्गमील है। इसकी धरती उपजाऊ है और इस में सोने की खान है। इस को भी सर्कार अङ्गरेज़ी ने

एक अनधिकारी से छीनकर हिन्दू राजघराने को फेर दिया था। यह बात सन् १७९९ ई० में हुई पर कुछ दिन पीछे यहां के महाराज ने अपनी प्रजा को बड़ा दुःख दिया और वह सब बिगड़ गये तब अङ्गरेजों ने बन्दोबस्त अपने हाथ में ले लिया। सन् १८६८ ई० में महाराजा मर गया और तब सर्कार ने उसके गोद लिये लड़के को सन् १८८१ ई० में अधिकारी मानकर फिर देसीराज चलाना चाहा। यह लड़का बड़ा होनहार था पर थोड़ेही दिनों में मर गया और इसका नाबालिग़ लड़का सन् १८९४ ई० में गद्दी पर बैठा। मैसूर ५० बर्ष तक अङ्गरेजों के हाथ में रहा पीछे इतनीही शर्त पर हिन्दुस्थानी राजा को दे दिया गया कि जो जो सुधार की बातें अङ्गरेज़ी कमिश्नर ने की थीं वह ज्यों की त्यों बनी रहें॥

बड़ोदा—पच्छिम हिन्दुस्थान में गुजरात के उपजाऊ हिस्से में यह भी एक बड़ा राज है। गायकवाड़ राजबंश का आदि पुरुष दामा जी

था और उसने अहमदनगर की मुसलमानी बादशाही टूटने पर मरहटों से अपने राज्य को बचा रक्खा। सूरत और बम्बई में अङ्गरेज़ी दूकान खुलने के कई बरस पीछे बड़ौदा का राज्य बना और तब से कई बार यह अङ्गरेज़ों की सहायता से बचा। सन् १८७५ ई० में इसका राजा गद्दी से उतार दिया गया और उसका गोद लेने का अधिकार जाता रहा। तब सर्कार ने गायकवाड़ की विधवा रानी को उसी कुल के एक ऐसे लड़के को गोद लेने की आज्ञा दी जिस को सर्कार ने बड़ौदा का राज्य देने के लिये योग्य समझा था॥

इनके सिवाय और भी कई राज्य हैं जो सर्कारी अमलदारी के बीच में पड़े हैं। राजा की छोटाई बड़ाई जानने के लिये तोप की सलामी दी जाती है। हैदराबाद, मैसूर और बड़ौदा के राजाओं की सब से बड़ी सलामी २१ तोपों की है और भूपाल, ग्वालियर, इन्दौर, काश्मीर, क़िलात, कोल्हापुर, मेवाड़ और

ट्रावनकोर के राजाओं की उन्नीस उन्नीस तोप की सलामी होती है। १७ राजाओं की १५ तोप की सलामी है। इनके सिवाय ६५ और भी राजा हैं जिनकी सलामी होती है। इस बिचार से १०६ राजा ऐसे हैं जिनकी गिनती पहिली श्रेणी में है पर इस गिनती में बहुत से ऐसे राज्य हैं, जो राजपूताना और मध्य हिन्दुस्थान की एजण्टी में हैं और कई ऐसे हैं जो सब से अलग हैं॥

५२—छोटे राज ॥

तीसरे प्रकार के हिन्दुस्थानी राज्यों में छोटी छोटी जागीरें हैं जो अङ्गरेज़ी ज़िलों के बीच बीच में पड़ी हैं जैसे सितारा और दक्खिन और मरहटा देस की जागीरें और उड़ीसा और मध्य हिन्दुस्थान के छोटे छोटे राज्य हैं। इनके नाम लिखने का कुछ काम नहीं। हिन्दुस्थान का नक़शा देखने से यह समझ में आ जायगा कि जो यह राज्य अपना प्रबन्ध ठीक न रक्खें तो लोकल गवर्नमेण्ट और ज़िले के हाकिमों

के प्रबन्ध में कांटे की तरह चुभें। अङ्गरेज़ी सर्कार में इतना बल न होता तो अङ्गरेज़ी क़ानून और अङ्गरेज़ी अदालतों के बिना इतने रजवाड़ों का प्रबन्ध कभी न होता पर इनका बचा रहना दोनों के गौरव और बड़ाई का प्रमाण है। इस से यह सिद्ध होता है कि अधिराज को निर्बल के अधिकार की रक्षा करने की शक्ति है और वह राजा लोग भी बड़े बुद्धिमान हैं जो अङ्गरेज़ी अफ़सरों की सलाह मानते और उनके साथ मिलजुल कर काम करते हैं ॥

५३—देशी राज्य स्थिर रखने के लाभ ॥

देशी राज्य स्थिर रहने से अङ्गरेज़ी सर्कार को बड़े लाभ हैं। यह राज्य सर्कार अङ्गरेज के अपनी सन्धियों पर दृढ़ रहने के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। इनको देखने से हिन्दुस्थान के रहनेवाले दोनों प्रकार के राजशासन का अन्तर जान सकते हैं। जो लोग यह जानना चाहते हैं कि शिक्षा ब्योपार और आबादी

किस शासन में उन्नति करते हैं वह आप देख लें। सर्कार अङ्गरेज़ी देशी रजवाड़ों के लिये जो काम करती है वह अपनी अमलदारी के लिये नहीं करती। जल और थल की सेना, बन्दरगाह, रेल और सारे शासन का खर्च जिसका लाभ हिन्दुस्थान भर को पहुंचता है सब सर्कारी अमलदारी के सूबों को देना पड़ता है। सन्धियों के अनुसार किसी किसी रजवाड़े को कुछ देना पड़ता है पर बाहर के बैरी से बचने के लिये जो यत्न किये गये हैं उनके ख़र्च का यह बहुत थोड़ासा अंश है। पर यह राजा लोग अपने राज्य के ख़र्च और शासन के भार से सर्कार को बचाते हैं। लार्ड केनिङ्ग ने अपनी सनदों में लिखा है कि जब तक रजवाड़े सर्कार के शुभचिन्तक बने रहें और उन सन्धियों की शर्तों पर स्थिर रहें जिन में उनके और अङ्गरेज़ी राज्य के सम्बन्ध का ब्यौरा है तब तक उनको अपने बलो रक्षक से कुछ डर नहीं। जिसने देखा है वह कहता है कि अङ्गरेज़ी अफ़सरों की सलाह

से इन राज्यों के प्रबन्ध में बड़े बड़े सुधार हुए हैं। श्रौर हिन्दुस्थान के जितने हितैषी हैं वे सब चाहते हैं कि यही सम्बन्ध बना रहे श्रौर देशी राजाश्रों श्रौर राजराजेश्वरी के सेवकों में श्रपनी श्रपनी प्रजा की भलाई के उद्योग में होड़ होता रहे। श्रङ्गरेज़ लोग पच्छिम से स्वतंत्रता श्रौर मतनिर्वाह के नये धर्म लाये हैं। इस बात की श्राशा करनी चाहिये कि जिस देसी राज्य का शासन सब से श्रच्छा है उस में भी हिन्दुस्थानियों के नित्य के व्यौहार में यह नई चाल चल जायगी श्रौर हम लोग उन्हीं से सीखेंगे कि पूरबवालों के लिये कौन बिशेष बातें उपयोगी हैं॥

होय देश हित काज सब, बिन कछु बिघ्न, सुधार।
त्यागैं भारत देश को, सकल दुष्ट व्यौहार॥
मिलैं देश मंगल करन, नई पुरानी रीति।
करैं ऋद्ध भारत, बढ़ै नृपति प्रजा महं प्रीति॥

छठा अध्याय।

सुप्रीम गवर्नमेण्ट ॥

५४—देश के काम ॥

हिन्दुस्थान में अङ्गरेज़ी शासन का कैंडा पाठकों की समझ में आ गया होगा। इस राज के दो भाग हैं, एक, सर्कारी सूबे, दूसरा, देसी रजवाड़े। देसी राज्यों के शासनकर्ता देसी राजा लोग हैं और वे किसी किसी विषय में अङ्गरेज़ी सर्कार से सलाह लेते हैं। सर्कारी राज्य बहुत से गावों और शहरों में बँटा हुआ है जिनको मिलाकर ज़िले बनाये गये हैं और ज़िलों के हाकिम इक्ज़क्युटिव को वैसेही सम्भाले हुए हैं जैसे कि शरीर को रीढ़ की हड्डियां सम्भाले रहती हैं। ज़िले के हाकिम लोकल गवर्नमेण्ट की आज्ञा मानते हैं और लोकल गवर्नमेण्ट सूबे पर शासन करती

है। पर जैसा हम कह चुके हैं कि सूबों का राजकाज कुछ लोकल बोर्ड। और कुछ म्यूनीसिपल कमेटियां भी करती हैं, और कुछ कलक्टर और कमिश्नर करते हैं। ऐसेही सर्कारी राज्य में कुछ बातें ऐसी हैं जो सूबे के गवर्नमेण्ट के अधिकार में हैं और कुछ सारे देस से सम्बन्ध रखती हैं और उन में हाथ डालना हिन्दुस्थान के सुप्रीम गवर्नमेण्ट अर्थात् बड़े लाट साहब का काम है। गड़बड़ या अधिकार की खींचा खींची बचाने के लिये इस बात की आवश्यकता है कि जितने लोकल गवर्नमेण्ट हैं सब एकही बड़े गवर्नमेण्ट की आज्ञा मानें और वह सब से बड़ा गवर्नमेण्ट जिसको अङ्गरेज़ी में सप्रीम गवर्नमेण्ट कहते हैं सूबे के काम काज में हाथ न डाले। राजकाज की कल तभी चल सकती है जब सुप्रीम गवर्नमेण्ट और लोकल, मिल जुलकर काम करें। इसी मेल जोल न होने के कारण जो राज्य अकबर ने अपनी सन्तान के लिये छोड़ा था

वह टुकड़े टुकड़े हो गया। सूबे के हाकिमों ने दिल्ली के शासन से बिरोध किया और आप राजा बन बैठे और उनके बिरोध के कारण मुसलमान राज्य नष्ट भ्रष्ट हो गया॥

५५—बड़े लाट का शासन॥

जो लोग हिन्दुस्थान के राज का इतिहास जानते हैं वे हिन्दुस्थान के माल के हाकिमों को आज्ञा देनेवाले बड़े लाट साहेब से मेल जोल की आवश्यकता समझ सकते हैं। ऐसे मेल के समझने के लिये पहिला काम यह है कि एक बड़े अधिकारी के शासन में सब के रहने की आवश्यकता समझी जाय। इस में तीन गुण हैं। पहिला यह है कि लोकल गवर्नमेण्टों के बीच में किसी बिषय में मत भेद हो तो उसे सँभाल दें। दूसरा। राज के बाहर के ब्यौहारों में सब का प्रतिनिधि बना रहे और तीसरा प्रत्येक सूबे में जो लोग शासन करते हैं उनके कामों को एक रूप का कर दें॥

इस बात का समझना कठिन नहीं है कि कभी कभी एक सूबे के हानि लाभ दूसरे सूबे के विरुद्ध हो जाते हैं और झगड़ा बचाने के लिये तीसरे आदमी को बीच में पड़ना आवश्यक हो जाता है। जैसे एक सूबे में व्यापार की बड़ी राह (समुद्र) लगी हुई है। यहां का गवर्नमेण्ट रोका न जाय तो जो माल और सूबों में जाने के लिये यहां उतरता है उस पर वह भारी टिकस लगा दे। कोई सूबा सिवाने पर है और बैरी उस पर धावा कर सकते हैं। वहां बहुतसा रुपया ख़र्च करके सेना रखनी पड़ती है। इस सेना से निरी उसी सूबे की रक्षा नहीं होती। पर जो सूबे इसके पीछे हैं उनका भी बचाव है इस कारण यह उचित है कि सिवाने के सूबे का गवर्नमेण्ट और सूबों से भी सेना के ख़र्च में सहायता पावें। एक सूबे में मौसिम की हवा नियम से नहीं चलती और उस में काल पड़ता है, पड़ोस के सूबे में फ़स्ल अच्छी होती है और

जो नाज प्रजा के खाने से बचता है वह महँगे दामों बिकता है। ऐसीही बातों में एक बड़े अधिकारी की आवश्यकता है जो इस बात को निश्चय करे कि एक सूबे को दूसरे सूबे के लिये क्या देना चाहिये जिस से उसका बोझा हलका हो जाय॥

एक बात और है। मान लो, कि किसी दूसरे राजा से ब्यौपार के लिये कोई सन्धि या प्रबन्ध करना है। उस समय यह बिचार करना होता है कि सारे हिन्दुस्थान पर संधि का क्या प्रभाव होगा क्योंकि एक लोकल गवर्नमेंट के लाभ से दूसरे की हानि की सम्भावना हो सकती है। बाहर का राजा हिन्दुस्थान भर को एक देस समझेगा और सारे राज्य की ओर से एक अधिकारी से बात चीत करना उचित जानेगा जो अपने सारे देश को अपनी सन्धि पर स्थिर रख सके॥

देस के भीतर के प्रबन्ध में भी एक रीति पर उन्नति होना आवश्यक है। कभी कभी

यह उचित हो जाता है कि सूबों में शिक्षा की जो रीतियां प्रचलित हैं उनको एक कमीशन (सभा) जांचे और भिन्न भिन्न लोकल गवर्नमेण्टों की रीतियों को एक चाल पर लावे। इन बातों में लोकल गवर्नमेण्टों का निश्चय ठीक नहीं हो सकता क्योंकि यह लोग अपने ही सूबों का हाल जानते हैं और उसी के पक्षपाती हैं। सुप्रीम अधिकारी को न किसी का पक्षपात है न किसी से द्वेष और ऐसी बातों का निश्चय वही कर सकता है जिस का सारे देश से सम्बन्ध है, किसी बिशेष सूबे से नहीं॥

५६—इंडिया गवर्नमेण्ट (बड़े लाट साहेब)॥

इसी कारण लोकल गवर्नमेण्टों के सिवाय एक अधिकारी और है जिस को इण्डिया गवर्नमेंट कहते हैं। यह अधिकारी वाइसराय और गवर्नर जनरल भी कहलाते हैं और ५ बरस तक हिन्दुस्थान में शासन करने के लिये इंगलिस्तान से भेजे जाते हैं। इनको सहायता

देने के लिये एक सभा है जिसके सभासद यह हैं॥

१—हिन्दुस्थान के प्रधान सेनापति।

२—क़ानून का कौंसिलर। (मंत्री)

३—ख़ज़ाने का कौंसिलर। (मंत्री)

४—माल और देश के प्रबन्धकारी मंत्री।

५—सड़क और सर्कारी तामीरात के मंत्री।

६—सेना के मुहकमे का एक और मंत्री।

इन छहों मुहकमों के छः बड़े बड़े दफ़्र हैं जिनके मुख्य अधिकारी सिक्रेटरी कहलाते हैं। इनके सिवाय एक फ़ारेन (बिदेशी) मुहकमा भी है। इसको बहुधा बड़े लाट अपनेही हाथ में रखते हैं। जैसे लोकल गवर्नमेण्टों के साथ क़ानून बनाने के लिये कौंसिलें होती हैं वैसीही बड़े लाट की भी कौंसिल है और जो लोग इकज़्क्युटिव में उनके सहायक हैं वही इस कौंसिल में मेम्बर (सभासद) हैं। सुप्रीम गवर्नमेण्ट के अंग हो चुके अब यह जानना चाहिये कि इसके रहने की जगह कौनसी है। यह क्या काम

करता है, और इसको संभालनेवाला और अपने बस में रखने वाला कौन है?

५१—सूबों की राजधानियां॥

गवर्नर जनरल के रहने की सब से अच्छी जगह कौनसी है इस पर बहुत कुछ बाद बिबाद हुआ था। निश्चय करने के लिये यह उचित है कि सूबे की राजधानी स्थापन करने में जो बिचार रक्खा गया है उसको हम चित्त से भुला दें। सुप्रीम गवर्नमेण्ट और सूबे की गवर्नमेण्टों में बड़ा भेद है। लोकल गवर्नमेण्ट राजकाज करते हैं और सुप्रीम गवर्नमेण्ट ऊपर से उनकी निगरानी करता है। लोकल गवर्नमेण्ट अपने रहने का स्थान स्थिर करने में अनेक बिचार रखते हैं। पहिले यह देखना चाहिये कि लोकल गवर्नमेण्ट कहां कहां रहता है। अकबर बादशाह ने मुख्य नगरों के नाम से सूबों के नाम रक्खे थे। मदरास और बम्बई के विषय में अंगरेज़ी सर्कार ने भी ऐसा ही
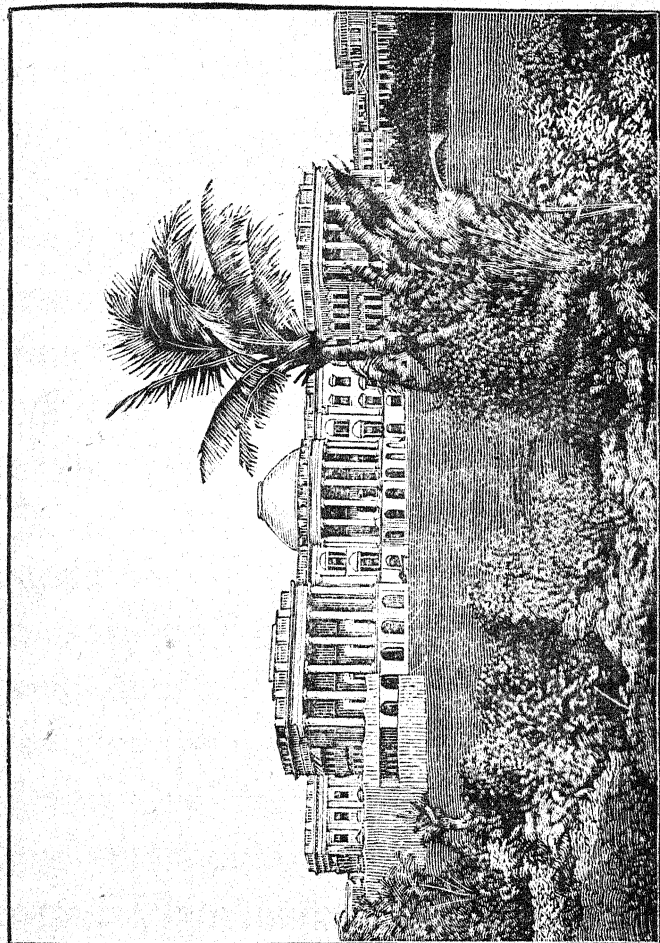
गवर्नमेंट हौस कलकत्ता ॥

किया है। परन्तु कई सूबों में जाति के नाम, या देश के विशेष लक्षण के कारण शहर का

नाम छोड़कर सूबे का दूसरा नाम रख लिया गया है। इसके दो कारण हैं। मुगलों के राज में जिस शहर में सूबे का हाकिम रहता था उसकी शोभा बढ़ाने के लिये बहुत कुछ उपाय किया जाता था और रुपया बरबाद होता था। अङ्गरेज़ी सर्कार ने मालगुज़ारी का रुपया रेल, सड़क, नहर आदि और और उपयोगी कामों में लगाया है जिस में सूबे और देश भर को लाभ पहुंचे निरा शहरों ही को नहीं। शहर का नाम न रखने का दूसरा कारण यह है कि शहर बनते और बिगड़ते हैं; जैसे बीजा-पुर, बिजय नगर, उज्जैन आदि जो पहिले कभी बड़े बड़े शहर थे अब बिगड़ गये हैं, और बहुत से शहर जहां ब्यौपार या रक्षा की सुगमता है बढ़ रहे हैं। यह भी हो सकता है कि कुछ दिन में यह शहर भी बिगड़ जायँ। हिन्दुस्थान में अङ्गरेज़ी सूबों को शहरों के नाम से पुकारने की रीति नहीं है तौ भी हर सूबे में एक शहर राजधानी कहलाता है जिस में लोकल

गवर्नमेण्ट निवास करता और साधारण लोगों से मिलता जुलता रहता है। इन्हीं शहरों में न्याय की बड़ी बड़ी अदालतें, सर्कारी दफ़्र, दूकानें और उन ब्यापारियों की कोठियां हैं जो सूबे भर के लिये ब्यापार करते हैं। यही सूबे के सदर कहलाते हैं यहीं अनेक प्रकार के देस की भलाई के काम होते हैं। यह स्थान ऐसे भी चुने गये हैं जहां राजा और प्रजा एक दूसरे से मिलजुल सकें॥

५८—शिमला॥

सुप्रीम गवर्नमेण्टट को सारे देश का प्रबन्ध करना पड़ता है इनके लिये यह आवश्यक नहीं है कि लोकल गवर्नमेण्ट की भांति किसी बिशेष स्थान में रहें। सूबे का हाकिम इक्जक्युटिव का अफ़सर, सूबे की भलाई का रखवाला है, और उसको अपने ज़िले के हाकिमों से मिला रहना चाहिये और जो लोग प्रजा की ओर से सम्मति देने के अधिकारी हैं उन से भी अपने

को परिचित रखना इसका कर्त्तव्य है। सुप्रीम गवर्नमेण्ट की निगरानी का काम बहुत बड़ा
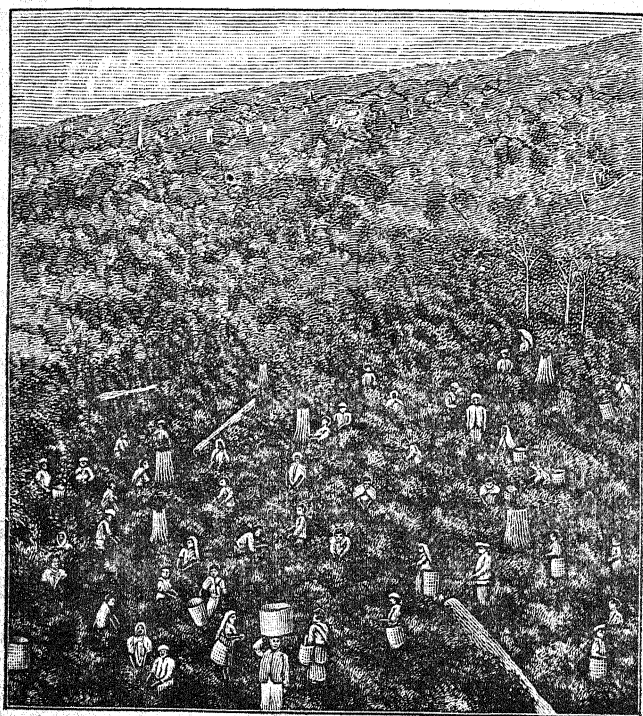
यूरोपियन हौस, शिमला ॥

है। जब एक सूबे की हानि में दूसरे का लाभ होता है तो उसे न्याय करना पड़ता है इस लिये उचित है कि वह बिशेष स्थान और बिशेष

कामों से अलग रहें, सारे राज की सुनें और न्याय का पल्ला बराबर रक्खें। इसी कारण यह उचित समझा गया है कि सुप्रीम गवर्नमेण्ट साल भर कलकत्ते में न रहें बरन उत्तर में जाकर हिमालय की घाटी में कुछ दिन बास करैं जहां की आब हवा ठंढी होने से दफ़्र में देर तक काम हो सकता है और जहां से सारे सूबों का काम काज देखा जा सकता है। बहुत से लोग ऐसा समझते हैं कि बड़े लाट साहब जब पहाड़ से उठा करैं तो सीधे कलकत्ते को ही न जाया करैं बरन कई सूबों में घूमते फिरैं जिस से कुछ दिन में सारे देस को देख भाल लें। इस मत के बिरुद्ध एक बात यह कही जाती है कि ठांव ठांव महल बनाने और दफ़्र का असबाब ले जाने में बहुतसा खर्चा पड़ेगा। हमारी समझ में आज कल का प्रबन्ध बड़े सुभीते का है॥

५९—बड़े लाट साहब के काम॥

बड़े लाट साहेब के काम दो तरह के हैं एक तो वह जो सीधे उन्हीं के पास जाते हैं दूसरे

वह जिनकी अपील उनके पास पहुंचती है। बहुत से काम ऐसे हैं जिनको लाट साहब आप उठाते और निबाहते हैं और बहुत से ऐसे हैं जिन में लोकल गवर्नमेण्टों के कामों को सुधारते हैं। जो काम लाट साहब आप करते हैं वह ये हैं।

(१) बिदेशीय सम्बन्ध, लड़ाई, सन्धि और राजप्रतिनिधियों का प्रबन्ध।
(२) स्थल और जल की सेना का विषय।
(३) सारे हिन्दुस्थान के लिये क़ानून बनाना।
(४) सारे हिन्दुस्थान पर टिकस लगाना।
(५) राज का ऋण और सिक्का।
(६) डाक, तार और रेल।
(७) इस देश के लोगों को दूसरे देश में भेज कर बसाना।
(८) खान खुदवाना।

अपील के काम में लोकल गवर्नमेण्ट के प्रबन्ध, उनके क़ानून और उनके खर्च की निगरानी होती है। जिस किसी को सूबे के

हाकिमों से किसी काम में दुःख पहुंचै वह उन क़ायदों से जो सर्कार ने बनाये हैं अर्ज़ी देने से अपने न्याय की प्रार्थना कर सकता है। पर अपीलों के सिवाय गवर्नर जनरल को पार्लीमेण्ट के क़ानून ने ऐसा अधिकार दिया है जिस से वह सारे जंगी (सेना सम्बन्धी) और मुल्की (देश सम्बन्धी) विषयों में लोकल गवर्नमेण्टों के सब कामों की निगरानी करै, उनको रोक सकै और उपदेश कर सकै। विशेष बात यह है कि पार्लीमेण्ट के और हिन्दुस्थान के क़ानून दोनों में बहुत से काम ऐसे रक्खे गये हैं जो गवर्नर जनरल ही कर सकते हैं और वही क़ानून जो लोकल गवर्नमेण्टों को किसी काम के करने का अधिकार देते हैं यह भी चाहते हैं कि विशेष कामों में वह अधिकार सुप्रीम गवर्नमेण्ट की आज्ञा से बरता जाय॥

६०—लाट साहब के कामों का बिस्तार॥

कभी कभी इस बात का गिला होता है कि सुप्रीम गवर्नमेण्ट अपना अधिकार बहुत

जनाता है जिस से सूबे और ज़िले के हाकिमों का बल घट जाता है। जो लोग इस बात से डरते हैं उन्हें वह सब ध्यान रखना चाहिये जो काम बांटने के बिचार में ऊपर लिखा गया है। हिन्दुस्थान की सीमा अरब से लेकर मीक्यांग नदी तक है और अफ़्रिका के उत्तरी किनारे पर अबीसीनिया तक पहुंचती है। यूरुप के बड़े बड़े राज्य रूस, फ्रांस और रूम के अधिकृत देश हिन्दुस्थान या अङ्गरेज़ी राज्य के रक्षित देशों से मिले हैं। चीन, फ़ारस, अफ़गानिस्थान भी पड़ोस में हैं। अङ्गरेजों और हिन्दुस्थानियों के ब्यौहार जो इनके साथ करने पड़ते हैं उन का विचार सहज नहीं है और कभी कभी इस ब्यौहार में अनर्थ की शंका हो जाती है। इस से यह उचित है कि बिदेशी सबन्ध का ब्यौहार हिन्दुस्थान में सब से बड़े अधिकारी के हाथ में रहे। इसी के साथ यह भी आवश्यक है कि जो इस ब्यौहार को करै उसी के हाथ में चढ़ाई और बचाव की पूरी सामग्री भी रहै। कभी

ऐसा भी हो जाता है कि जल और थल दोनों की सेना को एक साथ काम करना पड़ता है। शांति के दिनों में लड़ाई की पूरी सामग्री हथियार उर्दी आदि योग्यता के बिचार से बनाया जाना उचित है। जब लड़ाई सिर पर आ गई उस समय देर और गड़बड़ बचाने का यही उपाय है कि एकही अधिकारी आज्ञा दे॥

क़ानून बनाने और टिकस लगाने में भी ऐसी ही बातों का बिचार होना चाहिये। सूबे के क़ानून बनानेवाली कौंसिलों ने ऐसा कोई क़ानूनही नहीं बनाया जिसे गवर्नर जनरल की कौंसिल नहीं बना सकती थी, पर यह कौंसिल जिसको सुप्रीम कौंसिल भी कहते हैं वही क़ानून बनाती है जो उस राज के केन्द्र से निकलने के योग्य समझे जाते हैं। मालगुज़ारी और महसूलों के क़ानून या ऐसे क़ानून जो सारे देश में जारी हो सकते हैं जैसे ज़ाबिता दीवानी और फौजदारी या जेलख़ाने के क़ानून, और ऐसे क़ानून जिस में देश हित के लिये

कोई प्रयोग किया जाता है (जैसे दक्खिन में सहायता का क़ानून) सुप्रीम कौंसिल में बनते हैं और यहीं उन सूबों के लिये भी क़ानून बनते हैं जिन में कौंसिलें नहीं हैं। राज्य की कल टिकस और महसूल पर चलती है इस कारण रुपये का बन्दोबस्त भी सुप्रीम गवर्नमेण्ट ने अपने हाथ में रक्खा है। इसी को राज्य पर टिकस लगाने का अधिकार है और यही इस आमदनी को बांटकर हर एक सूबे को देता है। यही बजट (साल की आमदनी और ख़र्च का चिट्ठा) बनाता, यही महीने महीने हिसाब जांचता और काम पड़ने पर ख़र्च रोक भी देता है जिस में विधि मिली रहे। सूबे का कोई हाकिम बिना इसकी आज्ञा के ऋण नहीं ले सकता और सिक्के के चलन का कठिन काम भी इसी के हाथ में है। डाक, तार और रेल जो हिन्दुस्थान में सब जगह जारी हैं और इम्पीरियल डिपार्टमेण्ट कहलाते हैं प्रजा की रक्षा और धन के उचित ख़र्च के विचार से

इसी के प्रबन्ध में रहते हैं। अन्तिम काम यह है कि जब किसी बिषय में सारे सूबों का ब्यौरा जानकर किसी बिशेष सूबे के लिये कोई काम करना पड़ता है तब सुप्रीम गवर्नमेण्टही उस काम को करता है क्योंकि लोकल गवर्नमेण्ट ऐसे ज़िले के हाकिम से जो उसके अधिकार में नहीं है बहुत सी आवश्यक बातैं पूछ नहीं सकता। इस कारण सुप्रीम गवर्नमेण्ट ब्यापार की गति देखता, हवा, ज्वारभाठा और बरसात का हाल हिन्दुस्थान के भीतर और बाहर के स्थानों से मंगाता, और देश के खानिज द्रब्यों को निकालने की शर्तैं बताता है। हिन्दुस्थान का राजकाज एक बड़ी कोठी के काम की भांति थोड़ा सा सदर में होता है और बाकी शाखाओं में और रीति ब्यौहार की बातैं या ऐसे बिषय जिनका सब से सम्बन्ध है उन्हें सब से बड़ा हाकिम निश्चय करता है॥

६१—सूबे का ठेका ॥

सुप्रीम गवर्नमेंट के कामों का जो सूचीपत्र ऊपर लिखा गया उस में एक काम कर लगाना भी है। इस विषय में कुछ विशेष लिखने का अवसर है। तेरहों सूबे अपने अपने ख़र्च के लिये कर लगाने के अधिकारी होते तो कहीं थोड़ा कहीं बहुत टिकस लग जाता और इस में लोगों को बुरा मानने का अवसर मिलता। इसी कारण सुप्रीम गवर्नमेंट यह निश्चय करता है कि कौन कौन टिकस लगाने चाहियें। कर से जो धन मिलता है उस में से अपने काम भर को रखके शेष सब सूबों में यही बंटवा देता है। लार्ड मेयो के गवर्नर जनरल होने से पहिले लोकल गवर्नमेंटों को सूबों के प्रबन्ध के लिये सुप्रीम गवर्नमेंट जो उचित समझता था दिया करता था। इस से काम न चलता तो और मांगते थे पर मिलना न मिलना ख़ज़ाने की दशा और मांगनेवाले के भाग्य के आधीन था। लोकल गवर्नमेंट सुप्रीम गवर्न-

मेंट के लिये कर तहसील करते पर ख़र्च में पूंछे नहीं जाते थे। जब तक इनका काम चलता जाता तब तक उन्हें रुपया बचाने की चाह न रहती थी। लार्ड मेयो ने एक नई रीति निकाली जिसको उनके पीछे जो लाट हुये उन्हों ने सुधार कर ठीक किया है। इस रीति में कुछ बरसों के लिये लोकल गवर्नमेंटों से एक ठेका कर लिया जाता है और उनको मालगुज़ारी, जंगल, स्टाम, आबकारी, टिकस आदि का एक हिस्सा दिया जाता है। इस रीति में मालगुज़ारी और टिकस वसूल करने में विशेष लाभ इन्हीं को है क्योंकि जितनाही रुपया आवैगा उतनाही अधिक उनके हिस्से में पड़ेगा। इसी के साथ किसी किसी महकमें में उनके ख़र्च की एक हद बांध दी जाती है और यह नियम कर दिया जाता है कि इस विषय में समझ बूझकर ख़र्च किया जाय। इस से रुपया बचाने में उन्हीं का लाभ है। इसी से उनको उत्साह होता है कि अपने सूबे

की आमदनी से पूरा लाभ उठावैं और प्रबन्ध और तहसील का ख़र्च घटावैं। इस रीति से जो रुपया बचे वह सड़क या ऐसे प्रबन्ध में जिस से इनके सूबे के लोगों को लाभ हो ख़र्च हो सकता है। उनके हाथ में कुछ रुपया ऐसा दिया जाता है जिस से वह जो चाहैं कर सकते हैं। जब एक बार सुप्रीम गवर्नमेंट ने ठेका पक्का कर दिया तब उसे फिर भिन्न भिन्न सूबों की मांग पर किस को देना चाहिये और किसको न देना चाहिये इस बात के निश्चय करने के झगड़े से बच जाता है। यह बात समझ में आ सकती है कि सब सूबों के लिये उचित हिस्सा बांट करने के लिये एक पक्षपात रहित न्यायकारी हाकिम होना चाहिये और यह काम बिना सुप्रीम गवर्नमेंट के चल नहीं सकता॥

९२—महकमें॥

यह कभी कभी कहा जाता है कि हिन्दुस्थान का गवर्नमेण्ट महकमों का गवर्नमेंट है। यह

प्रत्यक्ष है कि राजप्रबन्ध की कल अनेक पहियों से चल सकती है जो अपना अपना काम अलग अलग किया करैं पर उनका चलानेवाला एक होता है जो एक बड़े पहिये को घुमा रहा है। बड़े कारबार में काम बँट जाना चाहिये क्योंकि भिन्न भिन्न काम भिन्न भिन्न लोगों के हाथ में देने से करनेवाला काम में निपुण हो जाता है। जो लोग किसी बिशेष काम को करते हैं वह उस बिषय की बातैं समझ जाते हैं। देशी रजवाड़ों में हर महकमें में मदारुल मुहाम (प्रधान मंत्री) का अधिकार देखा जाता है। वही क़ानून बनाता और वही उन से काम लेता है। राज्य के किसी भाग में जो काम हो सब मंत्री या राजा की इच्छा से होता है। पर सर्कारी गवर्नमेण्ट में जिस में या तो गवर्नर जनरल या उसकी कौंसिल या गवर्नर या उसकी कौंसिल होती है, कौंसिल के सभासदों में महकमों के कामकाज का अधिकार बँटा रहता है और जब कोई बड़ी बात आ पड़ता

है तो पूरी सभा में उसका बिचार होता है। जब कोई सूबा लेफ्टिनेंटगवर्नर या चीफ़ कमिश्नर के अधिकार में होता है जिसके साथ कोई कौंसिल नहीं है तो वह बिशेष डिपार्ट-मेण्टों के सेक्रेटरीयों से सलाह लेता है। राज्य के सूबों में भी किसी बिशेष प्रकार का काम उसी महकमें के हाथ में रहता है जैसा सुप्रीम गवर्नमेण्ट में है। ख़र्च कम करने के लिये कभी कभी एक से अधिक डिपार्टमेण्ट एक सेक्रेटरी के हाथ में कर दिये जाते हैं। बड़े लाट के दफ़्र में भी सात महकमें हैं। जंगी महकमें में समुद्री सेना का महकमा भी मिला हुआ है। ख़जाने के महकमें में डाकख़ाना, तार, अफ़ीम, चुङ्गी, नमक, सिक्का, टकसाल और ब्यापार भी मिला दिये गये हैं। बिदेशी महकमें में बिदेशी राज्यों और देशी रजवाड़ों, दोनों के साथ ब्यौहार किया जाता है। लोकल गवर्नमेण्टों में जिस महकमें में यह काम होता है उसे पोलीटिकल कहते हैं। क़ानून बनाने का मह-

कमा क़ानून और उन नियमों को बनाता है जो क़ानून के अनुसार बनने चाहियें और क़ानून के विषय में और महकमों को सलाह देता है। होम डिपार्टमेण्ट के बहुत से काम हैं जैसे शिक्षा, डाक्टरी, सफ़ाई, न्याय का महकमा, ईसाई मज़हब सम्बन्धी बातें, पुलीस, जेलखाना और म्यूनीसिपल। माल का महकमा माल और देश की पैमाइश, बन्दोबस्त, जंगल, नई चीज़ों का पेटेंट (वह अधिकार जिस से किसी की निकाली हुई कोई कल या औषधी आदि को कोई दूसरा नहीं बना सकता,) हिन्दुस्थान के बासियों का बाहर भेजना, जल वायु (आब-हवा) के आगम का विचार, अजायबघर और नुमायशें (प्रदर्शनी) इन सब विषयों का प्रबन्ध करता है और जब अवसर पड़ता है तो अकाल का प्रबन्ध भी इसी के हाथ में रहता है। "पबलिक वर्क्स" जिसको साधारण बोल चाल में इञ्जीनियरी भी कहते हैं रेल, तार, सड़क, सर्कारी मकान और नहरों का काम

काज देखता है। इस संक्षिप्त ब्यौरे से हिन्दुस्थान की गवर्नमेण्ट को अनेक कामों के भिन्न भिन्न महकमें में काम बांटने की आवश्यकता सिद्ध हो जायगी। अब यह देखना रहा कि अङ्गरेज़ी राज्य के बीच में वह कौनसा हाकिम है जो सुप्रीम गवर्नमेण्ट के कामों की भी जांच करता है॥

६३—हिन्दुस्थान का स्टेट सेक्रटरी॥

हिन्दुस्थान का गवर्नमेण्ट हिन्दुस्थान में सब के ऊपर है पर बाहर का अधिकारी एक ऐसा भी है जो इसको भी अपने बस में रखता है। सन् १८५८ ई० में इङ्गलिस्तान की पार्लीमेण्ट ने हिन्दुस्थान के प्रबन्ध के लिये एक क़ानून बनाया और ईस्ट इण्डिया कम्पनी और डाइरक्टरों की सभा के अधिकार श्री मती राजराजेश्वरी के एक सेक्रेटरी को दे दिये गये और उसकी सहायता के लिये एक कौंसिल बना दी गई। नौकरी और राज्यअनुग्रह, ठेका और स्वत्व (मिलकियत) के विषय में

स्टेट सेक्रेटरी को निश्चित अधिकार दिये गये। और यह नियम बनाया गया कि हिन्दुस्थान के भीतर और बाहर हिन्दुस्थान की आमदनी का ख़र्च करना उसी के हाथ में रहै। ख़ज़ाने का अधिकार एक राजमंत्री को है जो लन्दन के इण्डिया आफ़िस (हिन्दुस्थान का दफ़्र) में एक कौंसिल का सभापति है। वही हिन्दुस्थान की आमदनी, ख़र्च का हिसाब बनाकर हर साल पार्लीमेण्ट में "पेश" करता है। वही सविस्तार रिपोर्ट से एक और भी नकशा बनाता है जिस से हिन्दुस्थान के सब सूबों की दशा और उन्नति देखी जाती है। इस प्रकार से वह सारे राजकाज की देखभाल करता है। इसके सिवाय जब कभी इस बात की आज्ञा दी जाती है कि हिन्दुस्थान की सेना युद्ध में जाय तो तुरन्तही पार्लीमेण्ट से भी इस बात का निवेदन कर दिया जाता है। और श्री राजराजेश्वरी के राज्य के उस अंश के सिवाय जो हिन्दुस्थान के अंश कहलाते

हैं और किसी देश पर धावा या चढ़ाई हटाने और बचाने पर हिन्दुस्थान के बाहर लड़ाई, भिड़ाई में बिना पार्लीमेण्ट की सम्मति के हिन्दुस्थान का रुपया ख़र्च नहीं हो सकता। हिन्दुस्थान की गवर्नमेण्ट की कौंसिलें जितने क़ानून बनाती हैं जिन्हें गवर्नर जनरल स्वीकार करते हैं सब की रिपोर्ट स्टेट सेक्रेटरी को कर दी जाती है पर राजराजेश्वरी चाहें तो स्टेट सेक्रे-टरी के द्वारा इन क़ानूनों को बन्द भी कर सकती हैं। राजराजेश्वरी या उनके स्टेट सेक्रेटरी का अधिकार इतनाही नहीं हैं। स्टेट सेक्रेटरी गवर्नर जनरल समेत हिन्दुस्थान के सब अफ़सरों को आज्ञा दे सकता है और जिसे चाहे उसे नौकरी से छुड़ा सकता है। वह गवर्नर जनरल और मद-रास, बम्बई के गवर्नर, इनकी कौंसिलों के मेम्बर, हाईकोर्ट के जज, और ऐसेही बड़े बड़े हाकिमों को मुक़र्रर करने के लिये राजराजेश्वरी को अपनी सम्मति देता है। राज्यअनुग्रह के विषय में वही नियम बना सकता है और सिविल

सर्विस कमिश्नरों की सलाह से हिन्दोस्थान की सिविल सर्विस में नौकरी पाने के नियमों को सुधार सकता है। स्टेट सेक्रेटरी के अधिकारों का विशेष बर्णन आवश्यक नहीं है पर इतना जान लेना चाहिये कि वह उस मंत्री सभा का एक सभ्य है जो सम्मिलित राज अर्थात् इङ्गलैण्ड स्काटलैंड और आयरलैंड का शासन करती है और जैसे राजराजेश्वरी के और सारे देशों पर शासन करने के लिये पर्लीमेण्ट से उस सभ्य को "जबाबदिही" करनी पड़ती है वैसाही हिन्दुस्थान के लिये भी है। सम्मिलित राज के साधारण निवासियों और उनके समाचार पत्रों का जो कुछ प्रभाव हो सकता है वह सब हिन्दुस्थान के प्रबन्ध पर पड़ता है और हिन्दुस्थान के हाकिमों को अपने अधिकार का अनुचित बर्ताव करने से रोकता है॥

सातवां अध्याय।

हिन्दुस्थान की आबादी॥

६४—जाति के भेद॥

जैसे आदमी का बल उसके अंगों के भेद और गुणों के आश्रित रहता है, वैसेही सारे देश का बल भी उसके निवासियों के आश्रित है। संसार में मनुष्य ने अपना जो अधिकार जमा लिया है उसका कारण यह है कि उसकी बुद्धि और उसके हाथ, पांव, उसकी उन्नति और बचाव के उपयोगी बनाये गये हैं। इसी रीति से जिन जातियों ने सब से बढ़कर उन्नति की है उन्हों ने अपने अधिकार की सामग्री से पूरा काम लिया है। इतिहास देखने से जाना जाता है कि मनुष्य की भिन्न भिन्न जातियों में भिन्न भिन्न गुण और योग्यतायें हैं। कोई जाति जल या थल में युद्ध करने में

प्रबीण होती है, कोई शांति की कलाओं में चतुर है, कोई खेती, ब्यौपार में लगी रहती हैं कोई कारीगरी या खान खोदने में प्रसिद्ध है। सब से बढ़कर उन्नति उसी जाति ने की है जिस में सब काम के लोग होते हैं। हिन्दुस्थान को ईश्वर ने ऐसा बनाया है कि यहां की आब हवा, बन, उपबन, नदी, पर्वत आदि और यहां के भागों की स्थिति एक से एक बढ़कर है। तीन ओर से इसको समुद्र घेरे हुए है और उत्तर में एक बहुत बड़ा पहाड़ इसकी रक्षा करता है। इसकी घाटी, इसके मैदान, इसके खालों में अनेक प्रकार की आब हवा और भांति भांति के पदार्थ होते हैं। बहुतसी नदियों में जहाज़ चल सकते हैं और जंगलों में लकड़ी, लट्ठा भरा हुआ है। इसकी खानों में सोना और कोइला बहुत है। इस में सन्देह नहीं कि पानी न बरसने से कहीं कहीं अकाल पड़ जाता है जिसको रोकना अच्छे से अच्छे राजाओं की शक्ति के बाहर है। पर इस हानि के बदले

इसको विशेष लाभ उन नदियों से होता है जिन से हिमालय की बर्फ़ गलकर मैदानों को पहुंचती है और उन तालों से है जिन में बहुत सा पानी इकट्ठा रह सकता है। सूबों की बनावट ऐसी है कि सारे हिन्दुस्थान में फ़सिल बिगड़ना असम्भव है। अट्ठाइस करोड़ सात लाख की आबादी क्या थोड़ी है जो उचित प्रबन्ध होने पर इस देश के लिये सारे पदार्थ इकट्ठा न कर सके। मुख्य बातैं यह हैं कि जल और थल की प्राकृतिक सीमा की रक्षा करने की शक्ति, ब्यौपार की वृद्धि, देश के भीतर शांति, और अच्छा राज्यप्रबन्ध, इन बातों को सिद्ध करने के लिये इस देश की जातियों में बिचित्र योग्यता है और जाति और धर्म में भेद होने पर भी आबादी का कोई ऐसा भाग नहीं हैं जो साधारण की भलाई के लिये कुछ न कुछ काम न करता हो। इस भाग में हम उन जातियों का बर्णन करैंगे जिनके बिषय में यह कहा जा सकता है कि ईश्वर ने उनको हिन्दुस्थान

उन्हीं के पालन पोषण के लिये दिया है। यह बड़ी जागीर है यह वह देश है जिसको पहिले भारतवर्ष (भरापुरा देश) या जम्बूद्वीप कहते थे पर देश दशा वही होती है जैसी उसके निवासी कर देते हैं। हिन्दुस्थान की दशा बहुत कुछ बनी बिगड़ी है और इस पर बड़ी बिपत्तियां पड़ चुकी हैं॥

६५—हिन्दू॥

आबादी के बयान में हिन्दुओं का नाम पहिले आना चाहिये। इसका कारण केवल यही नहीं है कि इनकी संख्या बीस करोड़ अस्सी लाख है। पर मुख्य हेतु यह है कि यही लोग पहिले इस देश में सभ्यता और धर्म आचार लाये थे। ६ हज़ार बरस की किस को सुध है जब कि संस्कृत बोलनेवाले आर्यों ने बस्तियां बनाई थीं और उन घाटियों के बीच में जिन्हें सिन्धु नद काटता हुआ पंजाब में पहुंचा है अपने गाय बैल हांकते हुए चले थे।

इतना हम जानते हैं कि उनके आगे बढ़ने से इस देश के पुराने रहनेवाले बन और पहाड़ों में चले गये जहां उनकी संतान अब तक रहती है और मैदान के रहनेवालों से बचते रहे। आर्य लोग सरस्वती और दृषद्वती जो कुरुक्षेत्र के पास हैं दोनों नदियों के बीच ब्रह्मावर्त में आ बसे। यहां से उन्हों ने सारे हिन्दुस्थान में अपना अधिकार फैलाया। इनके पीछे शक, पहलव और यवन आये पर इन लोगों को भी दस्युओं के पास हिन्दू समाज में जगह दी गई और इसी जातिभेद के आधार पर जिस पर हिन्दू समाज सैकड़ों बरस तक स्थिर रहा है राजप्रबन्ध और समाजप्रबन्ध दोनों स्थापन कर दिये गये। आर्यों ने हिन्दुस्थान का जो कुछ उपकार किया है उनकी सन्तान आज तक उस से लाभ उठा रही है और (Sacred Books of the East) पूरब की धर्म विषयक पुस्तकें जिन्हें प्रोफ़ेसर मोक्षमूलर ने प्रकाश किया है, मनुस्मृति, हिन्दुस्थान की भाषायें

ग्रौर पत्थर की लिपियां उस काम के साक्षी हैं जो उन लोगों ने हिन्दुस्थान के अर्द्ध सभ्य निवासियों को न्याय ग्रौर धर्म की राह पर चलनेवालों का समाज बनाने में किया। मत ग्रौर ग्राचार बदलकर ग्रपने धर्म में लाने का स्वभाव उनकी सन्तान ने भी पाया है ग्रौर इसी शक्ति से उन्हों ने मनीपुर में मंगोल बंश के कखि, टिपरा के राजाग्रों, नैपालवालों, ग्रौर ग्रौर ग्रनेक जगह के लोगों को ग्रपने धर्म में कर लिया है। ग्रार्यों ग्रौर उनके हिन्दू ग्रनुयाइयों ने हिन्दुस्थान को सभ्यता सिखाई, खेती का काम बताया ग्रौर सम्हले हुए राज्य प्रबन्ध ग्रौर शांति की कलाग्रों की शिक्षा दी॥

६६—मुसलमान॥

शांति में प्रजा के साथ जितना उपकार किया जाता है उतनेही से कोई जाति ग्रपनी स्थिति रख नहीं सकती। हिन्दुस्थान ने यह बात खोकर सीखी है जबकि उसके उत्तर के नगरों

को पश्चिमोत्तर के पहाड़ी देशों से हिन्दू धर्म के विरोधी लोगों ने धावा मारकर मिट्टी में मिला दिया और शांति से रहनेवाले निवासी मारडाले गये। आर्यों के राज्य से हिन्दुस्थान को जो लाभ हुआ था उसी को देखकर पठानों के मन में लालच समाया और जब सिन्धु के पार से मुसलमान हिन्दुस्थान पर चढ़ दौड़े तब हिन्दुस्थानियों में उन से बचने की शक्ति न रही। ईस्वी सन् की आठवीं सदी में सिंधु देश को परदेशियों ने जीत लिया और ९७७ ई० में हिन्दुस्थान का बड़ा फाटक, पेशावर ग़ज़नी के लोगों के अधिकार में आ गया। १०२४ ई० में सोमनाथ का मन्दिर लुट गया और ११९३ ई० में ग़ज़नीवालों ने दिल्ली पर अपना अधिकार जमा लिया। इन बली धावा करनेवालों को हिन्दुस्थान से लूट का धन तो मिला ही पर रहने की जगह भी मिल गई और १३ वीं सदी में मुसलमान लोग अपने को हिन्दुस्थान का बासी समझने

लगे और कुतुब मीनार आदि से अपने नये देश को सँवारने लगे। मुसलमानों के
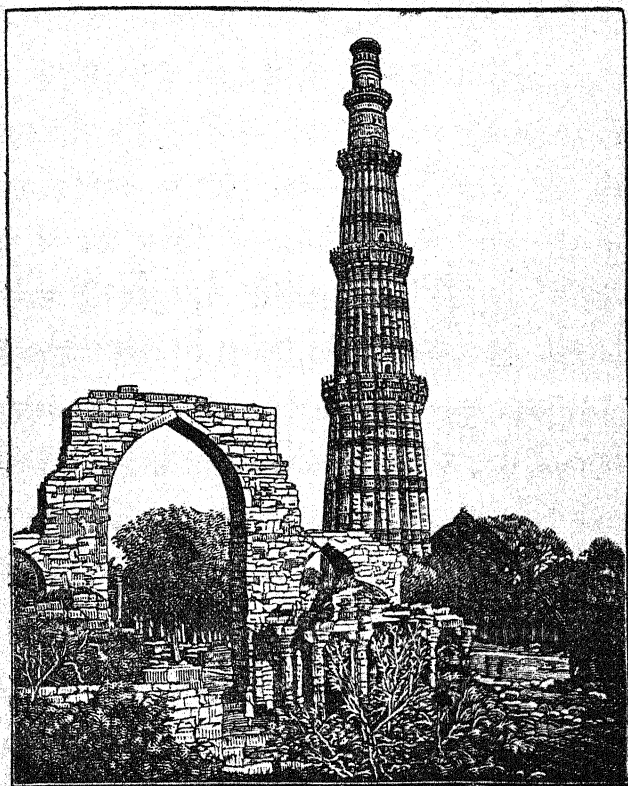
देहली का कुतुब मीनार।

जय की पताका दक्खिन में भी फहराने लगी

और १३४७ ई० में बहमनी राज स्थापित हो गया जिस से अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुण्डा, एलिचपुर और बिदर के पांच मुसलमानी राज निकले। इसके थोड़ेही दिन पीछे यह सिद्ध हो गया कि हिंदुस्थान की पश्चिमोत्तर सीमा बैरियों के आने की राह है और हिन्दुस्थान अपनी रक्षा, सेना के बल ही से कर सकता है। हिन्दू ते हारेही थे जहां हिन्दू हारे थे वहीं १३९८ ई० मे तीमूर की चढ़ाई में मुसलमानों का बल भी पूरा न पड़ा। अकबर ने अपनी योग्यता से राज भर में कुछ दिन के लिये शांति फैला दी और यह जान पड़ता था कि देश में एक दृढ़ राज स्थिर हो गया। पर थोड़े ही दिन पीछे सन १७३९ ई० में फारस के नादिर शाह ने हिन्दुस्थान के उत्तर के सूबों में अपनी सेना डाल दी और उस समय यह सिद्ध हुआ कि सभ्य आर्यों के साथ मुसलमानों की युद्ध करने की शक्ति मिलने पर भी उन लोगों का सामना नहीं कर सकती जो ठंढ मुल्कों में रहकर अस्त्र

प्रयोग में सदा अभ्यास किया करते हैं। पड़ोसियों की चढ़ाइयों से जान और माल बचाने और देश में शांति रखने के लिये किसी और बात की भी आवश्यकता थी। पर जो बातैं हम ऊपर लिख चुके उन से हिन्दुस्थान की आबादी को एक विशेष बल मिला है और हिन्दुओं की संख्या सब से अधिक होने पर भी इस देश को सम्हालने और बचाने के लिये पांच करोड़ सत्तर लाख मुसलमान थोड़े नहीं हैं॥

६७—पारसी॥

अब तुम को यह भी बतावैंगे कि जल और थल से रक्षा के लिये आज कल हिन्दुस्थान को कहां से सामग्री मिली है पर इस से पहिले इस राज्य के एक छोटे, पर अत्यन्त उपयोगी अंश का ब्यौरा लिखा जायगा। इस अंश में ९० हज़ार पारसी हैं। हिन्दुओं ने जाति के प्रबन्ध में ब्यापार के लिये यह प्रबन्ध भी

किया था पर इस प्रबन्ध से देश के भीतर ही या किसी बिशेष जगह पर ब्यापार हो सकता था। समुद्र पार करके अपना माल हाटों में पहुंचाना या देश देश से ब्यापार करना हिन्दू तो जानते ही न थे मुसलमान भी ब्यापार के योग्य न थे। इस देश में हथिआर चलानेवाले का जो काम था वह काम मुसलमानों के आने से चला गया। मुसलमान लड़ाई और उसके ब्यवहारों में निपुण थे। शांति से ब्यौपार करना उनको आता न था पर इतिहास से यह सिद्ध है कि कोई देश अपनी उन्नति नहीं कर सकता जब तक वह अपने माल असबाब को दूसरे देश में ले जाकर ब्यापार न करे। ईश्वर ने अनेक पदार्थ पृथ्वी भर में बांट दिये हैं और किसी देश की बस्तुओं का दाम दूसरे देश की आवश्यकता के अनुसार बढ़ता है। जो लट्ठा हिन्दुस्थान के जंगलों में सड़ जाता था उस से अब हज़ारों कोस के देशों में जहाज़ बनाये जाते हैं और

यहां के लोगों को आज कल पच्छिम से ऐसा सस्ता कपड़ा मिलता है जैसा इस देश में बनना कठिन था। लोहा और इसपात मनुष्य जाति के लिये परम उपयोगी है वह हिन्दुस्थान में बाहर ही से आता है। दूर देशों में जाकर व्यापार करने की प्रवृत्ति ईश्वर ने बिरलेही लोगों को दी है। खुरासान देश के सताये हुये लोग जो नहवंद के खेत से हार कर भागे थे आठवीं सदी में पश्चिम हिन्दुस्थान में आकर डमान में बसे। १५ वीं सदी में इनकी सन्तान नावसरी, सूरत और ठाणा में फैली और आज के दिन हिंदुस्थान का व्यापार इन्हीं पारसियों के हाथ में है। इस राज्य की कोई ऐसी चौकी नहीं है जो क्या अरब में क्या आफ्रिका के उत्तरी किनारे पर क्या बलोचिस्तान क्या ब्रह्मा के शान देश में जहां पारसी न हों। धन और शिक्षा में हिन्दुस्थान के बासियों में सब से आगे यही हैं और आप धन कमाकर धनी बनने में ये लोग हिन्दुस्थान के किसानों और

कारीगरों का उपकार करते हैं क्योंकि उनका माल देसाउर में ले जाकर बेचते हैं ॥

६८—हिन्दुस्तान के पुराने बासी ।।

इन लोगों की बोली इनकी जाति और इनके रंग में बड़ा भेद है। छोटा नागपुर के गोरे पानिक, हबशी ऐसे लोहर, काले गारो, सांवले कोल, मदरास के पालिया, झबड़झूल पहिनने-वाले नागा, ब्रह्मा के सिर काटनेवाले वा, संथल, गोंड, कोंड मरी और भील, इन सभों में इतना अन्तर है कि इन्हें किसी एक जाति की शाखा सिद्ध करना असम्भव है। देश जितजाने से या राजनीति के बिचार से यह लोग देश के भिन्न भिन्न भागों में बसे होंगे जैसे कफ़रि-स्तान के काफ़िर लोग अपना देश छोड़कर आज कल अफ़ग़ानिस्तान में रहते हैं। इनका रंग देखने से, इनकी भाषा पर बिचार करने, उनकी खोपड़ी नापने से शास्त्र ने उनका कुछ इतिहास जाना है और इनकी उत्पत्ति के बिषय

में मत स्थिर किये हैं। हम को इतना ही जानना चाहिये कि इनकी संख्या ९० लाख है और ये लोग शिक्षा और सभ्यता दोनों में बहुत पीछे पड़े हुए हैं। इनकी सहन शक्ति बहुत है और इनकी बुद्धि तीव्र है। सभ्य समाज को इन पर दया करनी चाहिये और सभ्यता की रीति पर इनको चलाना चाहिये॥

६९—और जातियां॥

हिन्दुस्थान को जो सामग्री ईश्वर ने दी है उस से काम लेने की शक्ति हिन्दुस्थानियों में कहां तक है इस बात के बिचार में और जातियों का भी कुछ ब्यौरा लिखना उचित है। हिंदुओं की गिन्ती के बाहर बुद्ध लोग हैं। इनकी संख्या ७० लाख है और यह बिशेष कर ब्रह्मा में रहते हैं। सिवाने के इस सूबे में चीन जाति के चतुर कारीगर और मेहनती काम करनेवाले भी धीरे धीरे हिंदुस्थान में आते

जाते हैं। इस रीति से राज के धन बढ़ाने की शक्ति दृढ़ होती है और बढ़ती जाती है। देश के पच्छिमी किनारे पर २० लाख सिक्ख रहते हैं। यह प्रसिद्ध सिपाही हैं और इन्हों ने अनेक लड़ाइयों में हिंदुस्थान का नाम किया है॥

७७-यूरूप के रहने वाले (फ़िरंगी)

यह बात सिद्ध कर दी गई कि हिंदुस्थान एक बड़ा देश है इसमें प्रकृति ने बहुत सा धन भर दिया है। इसकी आबादी बहुत बड़ी है जिस में सब तरह के काम करनेवाले मिल सकते हैं और इस में अनेक जाति के लोग बसते हैं इन जातियों के गुण भिन्न भिन्न हैं। पर सब मिल जांय तो बाहर के बैरी से इस राज्य की रक्षा कर सकते हैं और मनुष्य जाति को जिन बातों से सुख होता है सब उनकी सामग्री एकत्र कर सकते हैं। इतिहास से देखा जाता है कि आठवीं सदी से पहिले हिंदु-

स्थानियों के जान और माल पर तीन आपत्तियों का डर लगा रहता था वह ये हैं॥

(१) समुद्र से चढ़ाई का भय.

(२) सेना का बलहीन हो जाना.

(३) सब से अलग रहना.

मुसलमान राज्य के सब से प्रबल दिनों में भी हिंदुस्थान के समुद्र में जंगी जहाज़ नहीं रहते थे और न बड़ी बड़ी नदियों में जहाज़ पर चढ़कर डाका मारनेवालों के लिये कुछ रोक टोक थी। दिल्ली के शहनशाहों ने इस घटी को पूरा करने के लिये अफ्रिकावालों को बुलाया और जल राह से हिंदुस्थान की रक्षा करने के लिये सीदी अमीरुल बहरों (जल सेनापति) को जागीरें दीं। इस रीति से काम न चला और यूरप से लोग आ आ कर हिंदुस्थान के किनारों पर बस गये। नदियों में डाकू लगते थे और राज्य का प्रबन्ध उनको दबा नहीं सकता था। हिंदुस्थान के राजा

और बादशाहों ने अङ्गरेजों को दूकान और कोठी करने के लिये बुलाया और उनके आने से एक ऐसी शक्ति मिल गई जो हिंदू समाज की घटी पूरी करने के योग्य थी। हिंदुस्थान में अङ्गरेजों के आ जाने से अकेली समुद्र से रक्षा की कठिनाई ही दूर न हुई बरन स्थल रक्षा का काम भी पूरा हो गया। यह हम लिख चुके हैं कि जब मुसलमान लोग पश्चिमोत्तर देश से आकर हिन्दुस्थान में बस गये तो आबहवा से और अपने रहने के आचार बदलने से उनकी युद्ध शक्ति घट गई। हिन्दुस्थान की गरमी बरसों तक सहकर और राज सुख में रहकर सिपाहियों की सन्तान निबल हो गई और फिर पहाड़ियों ने उन पर धावा किया तो उन्हें हरा न सकी। अङ्गरेजी राज्य में जो गोरी सेना है वह बराबर बिलायत से आती जाती रहती है और नित नई आती है इसी रीति से जिन सौदागरों को दिल्ली के बादशाह ने ब्यापार करने के लिये बुलाया था वह

अपने साथ इस देश की रक्षा के लिये एक बहुत बड़ी युद्धिशक्ति भी लाये थे ॥

तीसरा उपकार जो अङ्गरेज़ों ने हिन्दुस्थानियों के साथ किया है वह इन दोनों से कम नहीं। हिन्दुस्थान के बड़े बड़े पहाड़ इसे और देशों से अलग किये हुए हैं और इसी कारण पच्छिम के देशों को शास्त्र विज्ञान से जो जो लाभ हुए हैं वह हिन्दुस्थान तक नहीं पहुंचे। रेल, तार, कलें, खान खोदना यह सब यूरप वालों ही के संसर्ग के फल हैं। और यह संसर्ग हज़ारों मील समुद्र पार करके स्थिर रक्खा जाता है। यूरप के रहनेवाले जो पिछले सौ बरस के भीतर हिन्दुस्थान में आ कर बसे हैं उनकी गिनती बहुत थोड़ी है पर उनकी शक्ति स्थिर रहने का मुख्य हेतु यह है कि वह यहां कुछ ही काम करते हों, सर्कारी नौकर हों, सौदागरी करते हों, या कोई कारख़ाना खोले हों वह सब बिलायत से आते रहते हैं जो उनके बल की मुख्य जन्मभूमि है।

जब वह लोग हट जाते हैं तो उनकी जगह श्रौर नये नये लोग श्राते हैं श्रौर इसी कारण उनकी शक्ति घट नहीं सकती ॥

७१—श्रनमिल संगति ॥

हिन्दुस्थान में श्रनेक जाति श्रनेक धर्म श्रौर श्रनेक भाषा बोलनेवाले लोग रहते हैं। उनके रहने, सहने, सोचने, समझने की रीति भिन्न भिन्न हैं श्रौर इसी से लोग कभी कभी कहते हैं कि हिन्दुस्थानबासियों में मेल नहीं हो सक्ता। क्योंकि इन लोगों के हानि लाभ एक दूसरे के बिरुद्ध हैं। पर हम पहिलेही भाग में लिख चुके हैं कि राज्य में भी मनुष्य के शरीर की तरह भिन्न भिन्न श्रंग हैं श्रौर जब एक उंगली में चोट श्राती है तो सारे शरीर को दुःख होता है। हिन्दुस्थान की हर एक जाति के लोगों के बिशेष गुण श्रौर बिशेष धन सारे राज के गुण श्रौर धन हैं। यह सम्भव है कि निवासियों के हानि लाभ में भेद भी रहै श्रौर राज्य की उन्नति

में सब मिल जुल कर काम भी करैं। यही नहीं, एक जाति के अपने किसी क़ानूनी हक़ या अधिकार को प्रकट करने ही से दूसरों के हक़ और अधिकारों का आदर और उसकी सहन शक्ति बढ़नी चाहिये। इस बात को इङ्गलिस्तान के प्रसिद्ध कबि पोप ने यों कहा है:—

कछु छोटे अरु कछु बड़े ज्यों बीना के तार।
एक छुवत दूजहु बजै लखिये अजब बहार॥
अलग अलग अनमिल लगैं पै बाजत एक संग।
संगत करत अनूप सोइ गनिय राज को ढंग॥
रहैं प्रजाहित हेत जहं राजकाज नृपनीति।
सम्पति हित होइहु करत बढ़ै प्रजा मन प्रीति॥
एक एक के लाभ हित करत सबै मिलि काज।
सुख पावैं अरु देंहि सुख सब कहं प्रजा समाज॥

आठवां अध्याय।

७२–हिन्दुस्थान का ब्यौपार और उद्यम॥

संसार के सारे देशों में बहुधा लोग अपनी ही मेहनत से अपना पालन करते और उन्हीं के उद्यमों पर कर लगाकर राज्य के काम चलते हैं। इस कारण राजा प्रजा दोनों के लिये यह बहुत उपयोगी है कि रहनेवालों के लिये बराबर काम मिलता रहे। जो लोग काम कर सकते हैं वह उद्यम और ब्यौपार में लगे रहें और लोगों को इस बात की स्वतंत्रता रहे कि जो उद्यम उन्हें बड़े लाभ का जान पड़े उसको कर सकें। जैसे हिन्दुस्थान के रहने वाले निरे खेती ही में लगे रहें तो जिस साल ईश्वर पानी न बरसावै या टीड़ी आवै, उस साल सब लोग हाथ पर हाथ धरे बैठे रहेंगे। इस लिये खेती के सिवाय हिन्दुस्थानवालों को कुछ और भी काम चाहिये। इसी तरह

ठीक काम न करने से मेहनत अकारथ जाती है और दरिद्रता घेर लेती है। काम करनेवालों को चाहिये कि जैसा अवसर देखैं वैसे ही अपनी रीति बदल दें। देखो जब सड़कें बन गईं और गाड़ियां चलने लगीं तो बंजारों का काम न रहा। रेल के आने से और भी उलट फेर हो गया। जो लोग देसाउर से माल मंगाना चाहते या दूर की मंडी में अपना माल भेजना चाहते हैं गाड़ी या रेल में और वे थोड़े ख़र्च में भेज सकते हैं तो वे कोई ऐसी बार बरदारी क्यों करैंगे जिस में ख़र्च बहुत पड़ जाता है। आने जाने की और माल भेजने की अच्छी रीति से सब को लाभ होता है। पुरानी चाल के माल ढोनेवालों को और गाड़ीवालों को भी और किसी उद्यम से उस से भी बढ़कर लाभ हो सकता है। उन्नति करनेवाली समाज में काम करनेवाले अपना उद्यम बदला करते हैं इसी कारण वह राजा बुद्धिमान नहीं समझा जाता जो ऐसा कोई

नियम बनावै जिस से ब्यापार की स्वतंत्रता में कैसी ही बाधा पड़े। राजा का इतना ही काम है कि जिस उद्यम में अंग का या जान का जोखों हो उसको रोके पर लोगों को उद्यम करने में न छेड़े। एक ब्यौपार घटे और दूसरा बढ़े तो प्रजा सब से पहिले इसे समझ जायगी। जैसा लोग अपने योग्य कामें को समझते हैं वैसा सर्कार क्या समझैगी? इस से उद्यम के बिषय में उनको पूरा अधिकार रहना चाहिये कि वह जो चाहैं सो करैं॥

३३—पूंजी॥

पर एक बात ऐसी है जिसमें उद्यम पाने के लिये सर्कार प्रजा की सहायता कर सकती है। शांति रखने और न्याय करने से उद्यमें को बढ़ाने को उत्साह दे सकती है और मज़दूरों और कारीगरों के काम करने की प्रवृत्ति बढ़ा सकती है। यह उत्साह पूंजी के द्वारा हो सकता है। अगले दिनों जब मैसूर के लोग

कोलार के खेतों से सोना चुनते थे तब सीधे सोनारों और ब्यौपारियों के पास ले जाते थे और तत्काल अपने परिश्रम का फल पाते थे। पर एक दिन ऐसा आया कि सोना गहराई में मिलने लगा और उसके निकालने के लिये महंगी कलों की आवश्यकता हुई जो सोने को ऊपर लावैं जहां ठप्पा लगाने की कलें रक्खी हों और लोग काम कर सकैं। इस देश में कोई ऐसा न था जो इस आसरे में रुपया लगता कि किसी दिन इस में लाभ होगा। इससे मैसूर के सोने की कानों का काम बन्द हो गया और कान खोदनेवालों का उद्यम जाता रहा। कुछ दिन पीछे समुद्र पार दूर देश के अङ्गरेज़ों ने कुछ रुपया इकट्ठा किया और सोना निकालने की कल मैसूर भेजी। ऐसेही और बहुत से उद्यम जैसे रुई, चाह, कहवा, सिनकोना (कुनैन का भेद) नील, पटसन (जूट) पराई पूंजी के सहारे से मेहनत करने के लिये निकाले गये हैं। देश में प्राकृतिक सामग्री बहुतसी

हो मेहनत करनेवाले भी बहुत हों. पर बिना पूंजी के उस सामग्री से कुछ लाभ नहीं हो सकता। इसी कारण राजराजेश्वरी विक्टोरिया को उनके साठ बरस पूरे होने पर बम्बई के प्रेसीडेंसी एसोसिएशन ने जो निवेदनपत्र रचा था उसमें हिन्दुस्थान के बड़े लाभों में अङ्गरेज़ी पूंजी का आना भी बर्णन किया था। उस में यह लिखा था, "इन सब रीतियों से इस देश में शांति और धन की बृद्धि हुई है और इसका परिणाम यह हुआ है कि पिछले साठ बरस के भीतर आबादी दूनी हो गई। खेती इतनी बढ़ी जिस से इस बढ़ी हुई आबादी को पूरा पड़ जाय और उद्यम और ब्यापार बे प्रमाण बढ़ गये जिन से इङ्गलिस्तान और हिन्दुस्थान दोनों का लाभ हुआ। हिन्दुस्थान अङ्गरेजों के उद्यम और कारखानों की बनी हुई बस्तुओं का मुख्य खपानेवाला हो गया। हिन्दुस्थान की खेती उद्यम और कारखानों के बढ़ाने में अङ्गरेजों का अनुमान ८ अरब रुपया बिना जोखों के

लगता है। इन दोनें देशों के बन्धन अब टूट नहीं सकते और अङ्गरेज़ों की रक्षा में हिन्दुस्थान की भिन्न जातियां जो अनेक भाषा बोलतीं और अनेक मतों पर चलती हैं अब इस बात को सीख चली हैं कि दोनें देशों का यह सम्बन्ध ईश्वर ने इस लिये रचा है जिसमें यह सब मिलकर एक जाति बन जांय जो एकही सम्राट के शरण में रहैं और सारे देश में शांति और मेल फैलाना अपना साधारण धर्म जानैं॥"

७४—उद्यम॥

पिछली मरदुमशुमारी के अनुसार अट्ठाईस करोड़ सत्तर लाख आदमियों में से सत्तरह करोड़ बीस लाख का आधार खेती है और दो करोड़ पच्चीस लाख और और काम करके अपना पेट भरते हैं। इन कामों में मिट्टी खोदना भी है। एक करोड़ पचीस लाख लोग अपने बाल बच्चों समेत कपड़ा बीनते और चालीस लाख

धातु और पत्थर का काम करते हैं। सर्कारी नौकरी सैल्फ़ गवर्नमेण्ट और रजवाड़ों की नौकरी से बाल बच्चों समेत ५६ लाख १६३ आदमी जीते हैं। इस से प्रकट है कि हिन्दुस्थानी मेहनत करनेवाले का खेतीही मुख्य आधार है। वास्तव में १७ करोड़ से अधिक लोग इसी के भरोसे पर रहते हैं क्योंकि गोरू चरानेवाले आटा पीसनेवाले दाल दलनेवाले और हल गाड़ी बनानेवाले भी धरती ही के आसरे हैं। हिन्दुस्थान और ग्रेट ब्रिटन में बड़ा भेद यही है कि यहां वाले अपने देश का अनाज खाते और अङ्गरेज़ लोग फसलों पर अपने खाने की वस्तु और कच्चा माल बाहर से लाते और उसके अनेक पदार्थ बनाकर बाहर बेचने को ले जाते हैं। हिन्दुस्थान की रुई, नील और लट्ठे बिलायत को लद जाते हैं और अङ्गरेज़ों की कारीगरी से यह चीजें आदमियों के काम की बन जाती हैं। हिन्दुस्थान के बहुत से हिस्सों में सूखा, टीड़ी और खेती के अनेक

बाधकों का डर लगा रहता है इस से अङ्गरेज़ी सर्कार की यह नीति है कि मज़दूरों के लिये उद्यम करने और धन कमाने के नये नये काम खोले जायँ जिस से धरती का आसरा कम हो और मजदूरी करनेवाले को पानी न बरसने से फ़सल नष्ट हो जाने पर भी काम मिला करै ॥

७५—खान ॥

इस परम उचित कार्य्य करने के लिये दो उपाय किये गये हैं। इन में से दो चार लिखे जाते हैं। हिन्दुस्थान में धरती के नीचे बहुत ऐसे खानिज पदार्थ हैं जिन से इंगलिस्तान वाले धनी और परिश्रमी हो गये हैं। पर अङ्गरेज़ी राज्य से पहिले यहां न उद्योग था और न पूंजी थी जिस से उन पदार्थों के निकालने की कलें खड़ी की जातीं और न यहां कोई खान खोदने का काम जानता था। थोड़े ही दिन हुए जब रेल और और

कारखानों के लिये हिन्दुस्थान में इंगलिस्तान आस्ट्रेलिया और जापान से पत्थर का कोयला मंगाया जाता था। अब बंगाले के कोयले की खान, सिंगरेनी की खान और और अनेक जगहों से ३५ लाख ३७ हज़ार मन कोयला हर साल निकलता है और ५० हजार आदमी इन में लगे हुए हैं। इनका काम सूखे और अकाल से बन्द नहीं हो सकता। इस ५० हज़ार में उनके बाल बच्चों की संख्या भी जोड़ देनी चाहिये और यह भी याद रखना चाहिये कि कोयले के ब्योपार और ढुलाई में और और बहुत से उद्यमों का सहारा होता है। हिन्दुस्थान के कोयले का आगम बहुत अच्छा है और अब इस देश के काम भर को निकलता ही है एशिया के और देशों में भी इसकी मांग होने की आशा है। इसके सिवाय कोयले का रोज़गार आप ही और उद्यमों की जड़ है क्योंकि हिन्दुस्थान में लोहा भी बहुत है और सस्ता कोयला मिलने से रेल, कारख़ानों और

मकानों के लिये लोहा और इसपात यहीं बन सकता है। मैसूर की खानों से अङ्गरेज़ों की पूंजी और कारीगरी का करतब्य सिद्ध हुआ है। आज कल हिन्दुस्थानी मज़दूरों की मेहनत से ३ लाख ५ हज़ार *औंस सोना हर साल निकलता है। कल न होती तो यह मज़दूरी भी पूरी न पड़ने के डर से धरती ही में पड़ा रहता। मैसूर राज्य का एक पैसा भी खर्च नहीं होता और १० लाख रुपया साल ठेकेदारों से उसे मिलता है। इसके सिवाय चुंगी और राहदारी का महसूल भी मिलता है और कारीगरों और मज़दूरों की सेना अङ्गरेज़ों से वेतन पाकर सोना खोदने के उद्यम में सुख से अपने दिन काटती है॥

७६—चाय और कहवा॥

पूंजी और मेहनत ही धन और पैदावार का मूल है पर इन्हीं दो से काम नहीं चलता। नये नये उद्यम और ब्यौपार की राह निकालने

* एक औंस अनुमान आधी छटांक के बराबर होता है॥

के लिये चतुराई और जानकारी भी इन दोनों से कम नहीं। जब अङ्गरेज़ लोग पहिले पहिल बम्बई में आये तो यह एक उजाड़ रेत था। थोड़ेही दिनों में इन्हों ने फ़ारस का गुलाब और और फूल और झाड़ लाकर बस्ती को ऐसा सज दिया कि आज तक पूरब के शहरों में बम्बई अपने फूल पत्तियों के लिये प्रसिद्ध है। जो उनके पीछे आये वे भी उन्हीं की चाल पर चले। १८२० ई० में कुछ अङ्गरेज़ लोग मैसूर और वाईनद में बसे और पहाड़ी जंगलों को क़हवा के बाग बनाने लगे। आज के दिन ३ लाख १० हज़ार ५०० एकड़ धरती जो पहिले बे काम पड़ी थी क़हवा और चाय के बग़ीचों से ढकी है और दो करोड़ ७७ लाख रुपये का क़हवा, चाय और सिनकोना बाहर जाता है। इन खेतों में ३ लाख २३ हजार मज़दूर और उनका काम देखने भालने वाले हैं और इन्हें एक लाख ८७ हज़ार रुपया तनख़्वाह और मज़दूरी दी जाती है। इस माल को ढोनेवालों के सेवाय जो

लोग इसको बेचते हैं उस से बहुत से और लोगों को भी उद्यम मिलता है। १८३५ ई० में कुछ दूरदर्शी अङ्गरेज़ों ने हिन्दुस्थान के दक्खिन चीन से चाह के पौधे भेजे और १८५९ ई० में सिनकोना भी लगाया गया। मदरास और मैसूर में इनकी खेती ऐसी न बढ़ी जैसी आसाम में हो रही है। यहां चाय के बग़ीचों में ५ लाख हिन्दुस्थानी काम करते हैं और ५ करोड़ का माल बाहर जाता है। हिन्दुस्थान के अङ्गरेज़ों में चाय की खेती देश का धन बढ़ा रही है और यहां ४ लाख ४४ हज़ार आदमी सदा काम करते और १ लाख ५६ हज़ार फ़सल के दिनों में और रख लिये जाते हैं। हिन्दुस्थान में कम से कम ४ लाख १५ हज़ार एकड़ धरती पर चाय की खेती होती है॥

११—रूई॥

सब से बड़ा लाभ जो अङ्गरेज़ों के धन और अङ्गरेज़ों की चतुराई से हिन्दुस्थान के

उद्यम को हुआ है वह रुई का काम है। बहुत दिनों तक यह उद्यम अङ्गरेज़ों ही के हाथ में था पर पूरब के रहनेवालों ने भी अब यह सीख लिया है कि अपनेही देश की उपज को काम में लाकर इंगलिस्तान से होड़ करके एक हिन्दुस्थान ही को नहीं बरन एशिया के और देशों को भी सूती माल दें। १९ वीं सदी के आरम्भ में अनाज के सेवाय हिन्दुस्थान में ढाके की मलमल, रंग और कुछ मिट्टी के बरतन और देशों में मांगे जाते थे। अब यह ब्यौपार करनेवाले देशों में गिना जाता है। आज के दिन इस में १४७ सूत और कपड़े के पुतलीघर धुयें के बल से चलते हैं और डेढ़ लाख आदमी उन में काम करते हैं। पहिली कल यहां अङ्गरेज़ लोग १८५१ ई० में लाये थे। तब से इस उद्यम की कैसी बढ़ती हुई है, इनके सेवाय २९ जूट मिल (जिन में टाट और बोरा और किरमिच बनती है) और ७९ हज़ार आदमी लगे हैं, ७१ धान कूटनेवाली कलें

६८ लकड़ी चीरने और ८ कागज़ बनाने के पुतली घर हैं जिन में सब मिलकर ४९ हज़ार आदमी काम करनेवाले हैं। इनके सेवाय ६३ चमड़ा साफ़ करने के, ५१ लोहा ढालने के, ५४ आटा पीसने के, ५६ तेल पेलने के और ४१ तमाकू के कारखाने हैं और इन में कई हज़ार आदमी काम करते हैं। रेशम के काम को भी उत्साह दिया जा रहा है और ऐसा कोई काम नहीं है जिस में अङ्गरेज़ों के साहस और पूंजी से हिन्दुस्थान के उद्यमों के बढ़ाने का उद्योग नहीं किया जाता और जिसमें हिन्दुस्थान को इतनी बड़ी आबादी के लिये नये नये काम और नये नये उद्यम निकालने का यत्न न होता हो। हिन्दुस्थान के ब्यौपार और मर्दुमशुमारी के नक़शों को देखने से यहां के उद्यमों में बहुत बड़ा भारी उलट फेर देख पड़ता है। यह निरे उद्योग नहीं हैं बरन हिन्दुस्थान में धन कमाने की नई नई रीतियां और ब्यौपारियों और महाजनों को लाभ उठाने की नई नई राहें हैं।

इस बात को लोग भूल जाते हैं कि सैकड़ों बरस तक इस देश में पत्थर का कोयला, सोना, मिट्टी का तेल निकालने, चाय, क़हवा और रुई पैदा करने की पूरी सामग्री थी पर इन से यथा उचित धन कमाने की शक्ति हिन्दुस्थानवालों को न थी। इसका क्या कारण है? इस देश में शान्ति, उद्योग और पूंजी की आवश्यकता थी और यह तीनों चीज़ें अंगरेज़ी राज्यही के आनेसे इसको मिलीं ॥

१८—सर्कारी नौकरी ॥

हिन्दुस्थान के रहनेवालों के उद्यमों के वर्णन में राज की नौकरियों को छोड़ देना उचित नहीं हैं। बड़े बड़े कारख़ानों और पेशों के आगे इसकी गिनती नहीं हो सकती क्योंकि कारख़ानों में आदमी भी बहुत लगे हैं और तनख़्वाह और नफ़ा भी सर्कारी नौकरी से बढ़ कर मिलता है। राज्यप्रबन्ध का कारबार उद्यम और ब्यौपार की तरह बढ़ नहीं सकता। यह सच है कि आबादी और ब्यौपार के बढ़ने

से कचहरी अदालतें भी बढ़ानी पड़ती हैं। पर इसी के साथ यह भी है कि अंगरेज़ी सर्कार म्यूनीसिपलटियों और लोकलबोर्डों के हाथ में अधिकार दे देकर नित आप नौकरी चाकरी देकर लोगों पर अनुग्रह करने की शक्ति घटाती जाती है। यह भी हुआ है कि बड़े बड़े ओहदे जो सर्कार के हाथ में हैं जैसे हाईकोर्ट की जजी कभी कभी बारिस्ट्रों को दी जाती है और वह लोग स्वीकार नहीं करते क्योंकि जज की तनख़्वाह उनकी वक़ालत की आमदनी से कम होती है। जिस हकीम या डाकृर की अच्छी चलती है उसका सन्तोष ज़िले के सिविलसरजन की तनख़्वाह से कैसे हो सकता है? काम चलने और लाभ होने पर काम करनेवाले नौकरों को जितना इनाम मिल सकता है उतना सर्कार नहीं दे सकती। इसी के साथ और भी बातें ऐसी हो गई हैं जिन से सर्कारी नौकरी की चाह घट गई है। फ़ारस, चीन और और देशों में सर्कारी नौकरी को लोग इस लिये

दौड़ते हैं कि इस से धन कमाने का अवसर मिलता है और धूमधाम बहुत होती है पर हिन्दुस्थान में सर्कारी नौकर को बंधी तनख़्वाह मिलती है और इसके साथ कोई सामग्री या लाभ नहीं है ॥

तब भी सर्कारी नौकरी में बड़ी प्रतिष्ठा है। जिन लोगों का काम चल रहा है वे अपना उद्यम या पेशा अच्छा समझैं पर नौकरी पाने की होड़ बहुत होती है। यह होड़ इस लिये बढ़ी है कि इस देश की आबादी का एक बहुत छोटा अंश सर्कारी नौकरी में लिया जाता है जङ्गी को छोड़ राजप्रबन्ध के नौकरों की पिछली बार जो गिनती हुई थी उसके अनुसार १३२८५२ आदमी सर्कारी नौकर थे इन में ७९९१ यूरपवाले और ५३४७ यूरेशियन थे। यूरेशियन बहुधा रेल और तार की नौकरी करते हैं। इस से प्रत्यक्ष है कि एक रुई के कारख़ानों में इतने लोग नौकरी कर सकते और इतना रुपया कमा सकते हैं जितना सर्कार

अपनी सारी नौकरियों से नहीं दे सकती। जब यह बात सोची जाती है कि हिन्दुस्थान में जल और थल के द्वारा २ अरब १४ करोड़ का ब्यौपार होता है तो यह समझ में आ सकता है कि कितने ब्यापारी कितने उद्यमी और कितने मज़दूर इस में लगे होंगे॥

१९-देश के बाहर जाने और कारख़ानों के क़ानून॥

हमने यह दिखलाया है कि देश के उद्यम की वृद्धि और उद्यम करने की स्वतंत्रता नये नये कामों में लग जाने की योग्यता, अवसर पड़ने पर उद्यम बदलने की योग्यता के आधीन है। इस बिषय में राजा जितनाही कम हाथ डाले उतनाही अच्छा होता है। जब किसी प्रकार के काम करनेवालों को उद्यम घट जाने से कोई हानि पहुंचती है तो दूसरे उद्यम खुल जाने से उसकी घटी पूरी हो जाती है। जो लोग कोई वस्तु मोल लेना चाहते हैं उन्हें कम दामों पर मिलने से साधारण को लाभ है।

जिनका पुराना उद्यम जाता रहा है उनके रोटी कमाने की और राहैं निकल आती हैं। जब तक कि हिन्दुस्थान में शांति है और बाहरवाले यहां आकर अपना रुपया लगाते हैं तब तक यहां नित नये नये उद्यम निकलते रहेंगे। गवर्नमेण्ट का मुख्य उद्दिश्य यह होना चाहिये कि शांति रखने का उपाय करै। एक स्थान से दूसरे स्थान को पहुंचने की जो रीति प्रचलित है उनको सुधारे और उद्यम करने का स्वभाव बढ़ाने और लोगों को रुपया लगाने के लिये जिन बातों के जानने की आवश्यकता है उन्हें बतावै। पर इतना काम करके इसकी चतुराई इसी में है कि उद्यम में छेड़छाड़ न करै। इस साधारण नियम के बिरुद्ध एकही बात हो सकती है। जब परदेश के राजा हिन्दुस्थान से मज़दूर मांगते हैं जैसे डेमरारा, ट्रीनोडाड जमैका, मोरीशस, नेटाल, फ़ीज़ी, उस समय अंगरेज़ी सर्कार बाहर जानेवालों का लाभ हानि देखती है। समुद्र की यात्रा में उनके

सुखी रहने के नियमों को बनाती और नियमों का बर्ताव जांचती और धन कमाकर उनके अपने घर लौट आने का प्रबन्ध करती। इसी रीति से अवसर पड़ने पर उन कुलियों की भी रक्षा करती है जो आसाम आदि देशों को भेजे जाते हैं। कभी कभी यह नियम कारख़ानों के कानूनों से भी बढ़ा दिया जाता है जिस से छोटे लड़के और दुर्बल लोग बड़ी मेहनत से बचे रहें और कलों के दोष से उनको हानि न पहुंचै। पर इस देश के उद्यम और ब्यौपार बढ़ाने में अङ्गरेज़ी सर्कार की मुख्य नीति और बड़ा गुर यही है कि उद्यमों में स्वतंत्रता रहे। १८४३ ई० में हिन्दुस्थान में दास का ब्यौहार उठा दिया गया। उस दिन से अङ्गरेज़ी हाकिमों की अचल नीति यही रही है कि शांति रहे और उद्यम में स्वतंत्रता रक्खी जाय और खेती करने के सेवाय लोगों को अपने पेट पालने के लिये नये नये उद्यम बढ़ाने के अर्थ बाहरवालों को अपनी पूंजी लगाने की प्रवृत्ति की जाय॥

नवां अध्याय ।

शांति रखनेवाली शक्तियां ।

८७—देश की शांति ॥

राजा का पहला धर्म्म यह है कि देश में शांति रक्खै। इसके लिये दो उपाय करने पड़ते हैं और उनको उचित रीति से निबाहने में दो भिन्न भिन्न उद्योग किये जाते हैं। देश के सिवानों को बैरी की चढ़ाई से बचाना चाहिये और भीतर भी शांति रखनी चाहिये। पहिला अर्थ सिद्ध करने के लिये सर्कार जल और थल की सेना रखती है और दूसरे काम के लिये पुलिस की पल्टन रहती है। इन पल्टनों की योग्यता प्रजा के लिये बहुतही उपयोगी है। देश में गड़बड़ मचने से रेल, तार, डाक, सब बन्द हो जाते हैं शिक्षा फैलाने और आरोग्यता रखने के लिये जो यत्न किये जाते हैं सब अकारथ हो जाते हैं और देश की सभ्यता और धन आदि की उन्नति के उपाय चल नहीं सकते।

पर इस से भी बढ़कर और एक हानि होती है। उद्यम का आधार पूंजी है वह न बटुर सकती और न देश में फैल सकती है और छोटे छोटे पेशों में भी बाधा पड़ जाती है। चारों ओर आपत्ति फैल जाती है। हिन्दुस्थान के सिवानों के बाहर जानेवाले अब भी वह दशा देख सकते हैं जो हिन्दुस्थान के मध्य में अङ्गरेज़ी राज से पहले प्रजा की होती थी। परदेशी लोग अपने खेत को हथियार बांधे हुये जोतते बोते हैं और अपने मालिकों के भागने के लिये अपने घोड़ों पर सदा काठी कसे रहते हैं। प्रजा की ऐसी दशा में सूखे या अतिवृष्टिहा से जो हम लोगों के बस के नहीं हैं काल नहीं पड़ता पर अच्छी फसल जो ईश्वर ने पकाकर तयार की है सो भी नष्ट हो जाती है। ऐसी आपत्तियों से अच्छा राजा इन्हीं पल्टनों के द्वारा प्रजा को बचा सकता है। शांति रखने के सभ्य देशों में चार बल हैं. (१) जल सेना, (२) थल सेना, (३) पुलिस और (४) राजभक्त प्रजा॥

८१—भूत और बर्तमान ॥

राबर्ट सिवेल साहब ने, जो हिन्दुस्थान की राजकुल कथा और प्राचीन इतिहास के प्रसिद्ध लेखक हैं एक मनोहर ब्याख्यान में महा काव्यों, वेद मंत्रों, अशोक के स्तम्भों के लेखों और पहाड़ के गुफ़ा और खोहों में खुदी हुई लिपियों, हिन्दुस्थान के इतिहास और गीतों से इस देश में सदा दंगा लड़ाई का होना सिद्ध किया है। उनकी जांच से सिद्ध होता है कि बहुतही प्राचीन काल में हिन्दुस्थान पर वही आपत्तियां भी आ पड़ती थीं जैसी पिछले इतिहासकारों ने लिखी हैं। एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक हिमालय से कन्याकुमारी तक यह देश अनेक राज्यों में बँटा हुआ था। यह राज्य कुछ दिन तक अपने बल से संभले रहते पीछे नष्ट हो जाते थे। सदा आपस में लड़ा करते थे और परदेशी बैरी का सामना करने को कभी देश की सेना नहीं मिल जाती थी। हिन्दुस्थान के बड़े बड़े शहर लुट जाते थे और

मैदानों में आपस की लड़ाई से देशबाशियों का लोहू बहता था। जब परदेशी बैरी चढ़ाई करता तो उसको रोकने और हराने की न किसी में शक्ति थी न आपस में मेल था। यह सब बातें १९ वीं सदी में बदल गई हैं। राज्य के दूर दूर सिवानों में बैरी का सामना करने के लिये देशी और अङ्गरेज़ी पल्टने सटी खड़ी रहती हैं जिस से अपने घर को चाहे जैसे बचा रक्खै। हिन्दुस्थान के इतिहास में अब रामायण और महाभारत की घरू लड़ाइयां न लिखी जांयगी। आज कल की लड़ाइयां हिन्दुस्थान के चारों ओर बीर जातियों से लड़ी जाती हैं और देश का बल हिन्दुस्थान की प्रजा या देशी राज्यों को दबाने में लगाया नहीं जाता। देश में शांति रखने के लिये बिना हथियार की एक पल्टन रक्खी जाती है और लड़ाई की सामग्री देश के ऐसे बैरियों के लिये अलग कर दी गई है जो उसकी शांति में बिघ्न डालना चाहते हैं। पिछले दिनों और अब के

राज्य में मुख्य भेद दो हैं, एक पुलिस और दूसरे जल और थल सेना से चढ़ाई बचाना या परदेशी वैरी को हराने के मुख्य काम में लगाना ॥

८२—जल सेना ॥

हिन्दुस्थान का नक़्शा देखने से जान पड़ैगा कि इस देश का कितना बड़ा भाग समुद्र के किनारे पर पड़ा है। देखो अब वह राजधानियां कहां हैं जिन में हजारों महल और सैकड़ों कारखाने चल रहे हैं। देखो यह सब समुद्र के किनारे या ऐसी नदियों के तट पर हैं जिन में सागर पार करनेवाले जहाज़ चल सकते हैं। और भी आगे बढ़ो और देखो कि हिन्दुस्थान का महासागर एटलांटिक से कैसे मिला हुआ है और लालसागर होकर मध्यसागर जाने की राह बनी है। हिन्दुस्थान पर अधिकार पाने की एक बड़ी भारी लड़ाई मध्यसागर के किनारे पर लड़ी गई थी। पहिली अगस्त सन् १७९८ ई० को

अङ्गरेजी सेनापति नेलसन ने फ्रांस के सेनापति ब्रुए को हरा दिया था। ४ मई सन् १७९९ ई० को श्रीरङ्गपत्तन का पतन और मैसूर के राजसिंहासन पर फिर हिंदू राजवंश वड्डेरों के बैठने का कारण केवल वे लड़ाइयां न थीं जो हिन्दुस्थान में अङ्गरेज़ों और उनके देशी मेलियों ने लड़ी थीं। नील नदी की लड़ाई जिस में फरासीसियों के ११ जहाज़ पकड़ लिये गये और ३ हज़ार पांच सौ फ़रासीसी घायल हुये और मारे गये एक इतना बड़ा धक्का था जिस से टीपू सुल्तान और फ्रांसवालों की आशा टूट गई। जो डर तब था वही अब भी हो सकता है और स्वतंत्र रहने के लिये हिन्दुस्थान को चाहिये कि समुद्र और उन देशों पर अपनी दृष्टि रक्खे जो इसके सिवाने पर हैं। मुसलमान बादशाहों ने आफ्रिका के हबशी नौकर रखकर हिन्दुस्थान की रक्षा करना चाहा पर उनका प्रयत्न निष्फल हुआ। नौकर मालिक बन बैठे और आपही देश लूटने लगे। अब
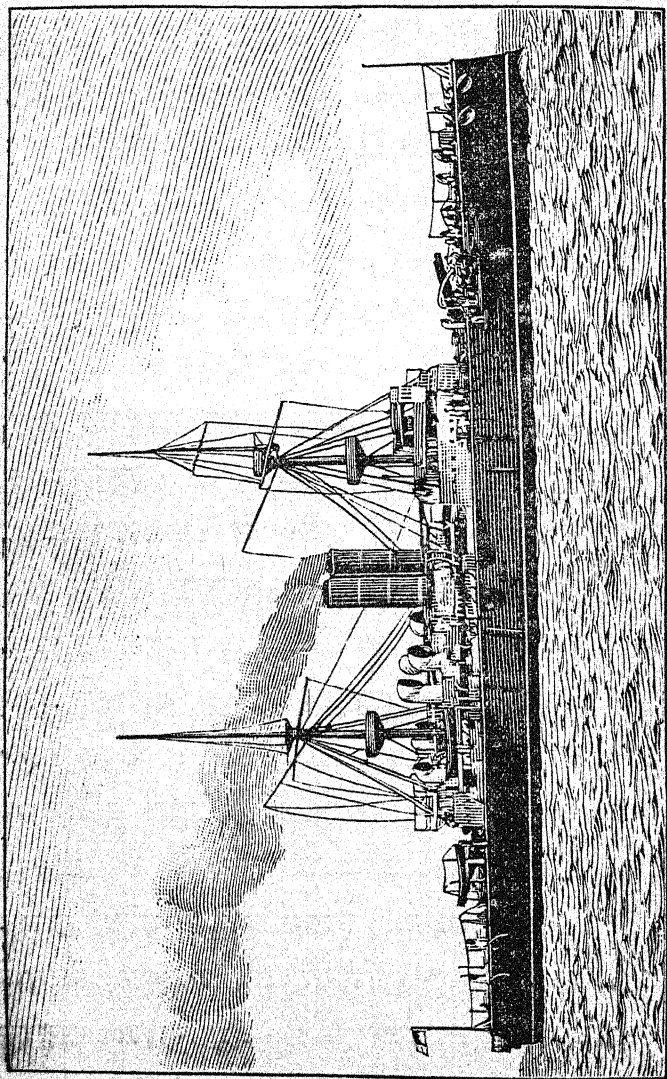
रेमिलीज जहाज़ ॥

हिन्दुस्थान ने समुद्र की ओर से अपनी रक्षा करना सीख लिया है और अङ्गरेज़ी जल सेना की सहायता से जो संसार में चारों ओर फैली है बैरी के बेड़े से अपने को बचा सकता है हिन्दुस्थान को इस बात का गर्व करने का अवसर कभी मिलाही न था। मांझी और जहाज़ दोनों की आवश्यता होती है और व्यापारियों की नाव और जंगी जहाज़ दोनों में मांझी अपना काम सीखते हैं। हिन्दुस्थान के जल सैनिक बल के वर्णन में यह भी लिखना उचित है कि एक कम्पनी जिसको पेनिंसुलर और ओरियगटल स्टीम नेवीगेशन कम्पनी कहते हैं उसके जहाज़ों में १८०० मांझी २९०० इञ्जिन का काम करनेवाले लगे हैं और २३०० मनुष्य छुट्टी पर रहते हैं। ब्रिटिश इण्डियन स्टीम नेवीगेशन कम्पनी (धुयें के जहाज़ चलानेवाली कम्पनी) ऐंकर लाइन और अनेक कम्पनियां हिन्दुस्थानियों को जहाज़ चलाने का काम सिखा रहीं हैं। यह लोग जहाज़

टूटने और तूफान आने पर बहुत बड़ा काम देते हैं और इन सब को मिलाकर एक बड़ी कोतल सेना समझनी चाहिये ॥

८३–हिन्दुस्थान की समुद्र रक्षा के उपाय ॥

हिन्दुस्थान की जल सेना देशरक्षा के लिये तीन भागों में बंटी है, अङ्गरेज़ी राज के जितने देश हैं उन सब के पहरा चौकी के काम अङ्गरेज़ी जहाज़ दूर दूर के समुद्रों में करते हैं। बहुत बड़े बड़े जहाज़ जो पच्छिम के सागरों में चलते हैं वह हिन्दुस्थान के किनारे पर देखे भी नहीं जाते परन्तु उनकी लम्बाई चौड़ाई और उनकी लागत का अनुमान यों हो सकता है कि एक रेमिलीज जहाज़ जो मध्यसागर में चलता है डेढ़ करोड़ रुपये में बना था। ऐसेही और भी जङ्गी जहाज़ हैं। रेमिलीज में ७३० आदमी काम करते और ५० हज़ार मन कोयला रहता है और यह घण्टे में १० कोस दौड़ता है। इसका बग़ली पटरा साढ़े अठारह इञ्च मोटा और

इस में ६१ तोपें हैं जिन में १० $१०\frac{१}{२}$ इञ्च मोहरेवाली हैं और सात टारपिडो फेकनेवाली हैं। इसके इञ्जन का बल १३००० घोड़ों का बल है और यह जहाज़ ३८० फुट लम्बा और ७५ फुट चौड़ा है। इतने ब्योरे से भी इस जहाज़ की शक्ति समझ में न आयेगी पर बड़ी से बड़ी नाव जो तुमने देखी है उसके प्रमाण पर विचार करने से इसका कुछ ध्यान आ जायगा। रक्षा के दूसरे भाग में सेना की वह नावें हैं जो हिन्दुस्थान के खास समुद्रों में फिरती हैं। और राज जैसे फ्रांस, इटली, रूम और पुर्त-गाल के जहाज़ भी पूरब के सागर में फिरते हैं और फ़ारस की खाड़ी में भी व्यापार के लिये जाते हैं पर यहां बहुत से ऐसे छोटे छोटे राजा हैं कि जो अंगरेज़ी जहाज़ इनके बचाने-वाले न होते तो हिन्दुस्थानी जहाज़ों को बड़ी हानि पहुंचाते। इन समुद्रों में जलडांकू अभी तक बहुत थे पर अब अङ्गरेज़ों ने उनको दबा लिया है। तीसरे भाग में वह सरकारी जहाज़

हैं जिस में हिन्दुस्थानी मल्लाह काम करते और ज्वार भाठावाली नदियों में फिरकर सेना पहुंचाते और हिन्दुस्थान के बन्दरों की रखवारी करते हैं। यह सब ब्यौरा लिखना इस लिये उचित था क्योंकि हिन्दुस्थान में बहुत कम लोग देश की रक्षा पर ब्यापार की बृद्धि में जहाज़ों के काम को समझते हैं॥

८४—थल सेना ॥

देशी रजवाड़ों की फ़ौज और हैदराबाद कंटिनजंट को छोड़कर दो लाख ६ हज़ार सिपाही स्थल सेना में हैं। इस सरकारी पलटन में ७३ हजार यूरोपियन हैं और यह लोग नित बदले जाते और नये नये सिपाही इङ्गलिस्तान से बुलाकर भरती करने से सेना को शक्ति घटने नहीं पाती। काम पड़ने पर ग्रेटब्रिटिन से और सिपाही भी आ सकते हैं पर इतनी पलटन रखने का ख़र्च इतना बड़ा है कि गवर्नमेण्ट चतुराई से उतनीही

सेना रखती है जितनी राज्य की रक्षा के लिये आवश्यक हो। जो संख्या ऊपर लिखी गई उस से हिन्दुस्थान की रक्षा के लिये सर्कार ने जो सामान किया है अच्छी तरह जाना नहीं जाता। जब तक बारबरदारी का बन्दोबस्त ठीक नहीं होता सेना का बल और समय दोनों अकारथ जाते हैं। जब तक हथियार बदलते नहीं रहते और नई नई चाल के अच्छे से अच्छे हथियार पास न हों, बड़े से बड़े बीर सिपाही अपनी बीरता से पूरा काम नहीं ले सकते। कोट और समुद्र के किनारे के गढ़, पुल और रेल, लाल पिटारे और बारूद बनाने के कारखानों में पल्टन से ज्यादा ख़र्च पड़ता है पर सेना रखने से जो काम होता है वह इनके होने से कई गुना बढ़ जाता है। राजा के बस के सिपाही और समुद्र, पहाड़ आदि जो ईश्वर ने इस देश की रक्षा के लिये रचे हैं उनकी देखभाल करने से आज हिन्दुस्थान की रक्षा का बन्दोबस्त ऐसा हो गया है जैसा कभी

पहिले नहीं रहा। विद्या के बल सर्कार अङ्ग-रेज़ को उतनी बड़ी बेतुकी भीड़ रखने का काम नहीं है जैसी अगले राजाओं के समय में देश में लूट मार करती फिरती थी पर क़वायद चतुराई और प्रबन्ध ने इस सेना को ऐसी उत्तम कर दिया है कि थोड़े सिपाही अंगरेज़ी अफ़सरों की कमान में रहकर हिन्दुस्थान के सिवाने की रक्षा करते हैं और अवसर पड़ने पर पुलिस को भी मदद देते हैं॥

सरकारी पल्टनों के पीछे रजवाड़ों की पल्टनें हैं जो अपना हित और अङ्गरेजी सरकार की संधि की शर्तों से सरकार के बैरी को अपना बैरी समझतीं और अपनी सक भर उन से लड़ने भिड़ने को तयार रहतीं हैं। पर बिना क़वायद सिखाई हुई बड़ी बड़ी पल्टने खेत में सीखी सिखाई छोटी पल्टन का भी सामना नहीं कर सकतीं। यह बात अनेक लड़ाइयों में सिद्ध हो चुकी है। इसी विचार से बड़े बड़े राजाओं ने इस देश की रक्षा के लिये एक दो

पल्टन देना स्वीकार किया है और उन पल्टनों को हरदम काम पर जाने के लिये तयार रखने को अङ्गरेज़ी अफ़सरों से सलाह और उनकी सहायता लेते हैं। इन राजों ने ऐसी पल्टनें रक्खी हैं, काश्मीर, पटियाला, बहावलपूर, झींद, नाभा, कपूरथला, फरीदकोट, अलवर, भरतपुर, जोधपुर, ग्वालियार. भोपाल, इन्दौर, रामपुर, हैदराबाद, मैसूर, सिरमूर, मालेरकोटला, बीकानीर, और काठियावाड़ के तीन राज भावनगर जूनागढ़, और नवनगर। ये पल्टनें काम की जभी हो सकती हैं जब इनके साथ बारबरदारी का सामान हो और डाकृर और हथियार उर्दी आदि हो जिनके बिना लड़ाई में काम नहीं चल सकता॥

हिन्दुस्थान की रक्षा के बिचार में जहां पल्टनों का नाम आवे वहां बल्लमटेरों को भी न भूलना चाहिये। इंगलिस्तान में बल्लमटेर बहुत हैं पर हिन्दुस्थान उसकी बराबरी नहीं कर सकता। बल्लमटेर वही लोग किये जाते

हैं कि जो किसी विशेष जगह पर रहते हैं अपने घर का काम काज करते और अवसर पड़ने पर हथियारबन्द हो जाते हैं। ये लोग अपने घर से दूर लड़ाई पर नहीं जा सकते हैं। हिन्दुस्थान बड़ा भारी देश है। जाति भेद और समाज भेद के कारण यहां के लोग मिल जुल कर काम नहीं कर सकते हैं, इस से बल्लमटेरी पल्टन से विशेष लाभ नहीं हो सकता। कुड़ग का पहाड़ी ज़िला देश की छावनियों से दूर है यहां बल्लमटेर रखने की आवश्यकता है हिन्दुस्थान के बड़े बड़े शहरों में भी बल्लमटेर रक्खे जा सकते हैं। हिन्दुस्थान में २९००० बल्लमटेर हैं पर इसके भिन्न भागों में इनकी योग्यता में बड़ा भेद है॥

८५—पुलिस॥

जंगी पल्टन से अवसर पड़नेही पर काम लिया जा सकता है पर देश में शांति रखने का भार कानून, मजिस्ट्रेटों और पुलिस के

ऊपर है। मुसलमानें के राज्य में पुलिस और सेना का अधिकार एकही हाकिम के हाथ में रहता था। सूबों के हाकिम सेनापति भी हुआ करते थे और जङ्गी सिपाहियों से तब वह भी काम लिया जाता था जो अब पुलिस के सिपाही करते हैं। अङ्गरेजी राज्य के आरम्भ में पुरानी रीति एकायक बदली न गई और अब भी जब कोई नया सूबा राज्य में मिलाया जाता है तो पहिले कुछ दिनों तक जङ्गी सिपाहियों के द्वारा देश में शांति रक्खी जाती है। फिर कुछ दिनों तक डकैत और लुटेरों को दबाने के लिये ऐसी पल्टन रक्खी जाती है जिस में दोनों गुण होते हैं क्योंकि लड़ाई के पीछे गड़बड़ में ऐसे लोगों को उपद्रव करने का अवसर मिलता है। फिर पुलिस पल्टन रक्खी जाती है। पुलिसवालों के पास हथियार के नाम को एक सोंटा रहता है। यह लोग क़ानून के बाहर नहीं हैं और अगर किसी को मारैं पीटैं तो यह भी जेलख़ाने जाते हैं। इनको

कभी कभी क़वाइद सिखाई जाती है और सिपाहियों की नाईं हज़ारों एक साथ काम पर नहीं जाते हैं। अवसर पड़ने पर दस बीस पचास आदमी मिलकर शांति रखने का काम करते हैं॥

८६—पुलिसवाले की उंगली ।।

लण्डन नगर में ऐसे समय में जब लाखों आदमी पैदल चले जा रहे हैं और गाड़ियों के ठठ्ठ के ठठ्ठ खड़े हैं एक सिपाही जिसके पास कोई हथियार नहीं है अपनी उंगली उठाकर सब को रोक सक्ता है या जिधर चाहै फेर सक्ता है। इसका कारण यह है कि वहां के लोग क़ानून की मर्यादा मानते हैं और पुलिस-वाला जो हुकुम देता है वह सब क़ानून के अनुसार होता है। इस में सन्देह नहीं कि बुरे लोग और बिशेष करके अपराधी लोग कभी कभी रोक टोक करते हैं। पर बहुत से ऐसे भी होते हैं जो बीच में पड़कर पुलिसवाले

की सहायता करते हैं। जो लोग समझदार हैं वह यह जानते ही हैं कि शान्ति का पक्ष लेने ही में उन्हीं का लाभ है और पुलिस की सहायता करना उचित है। जब पुलिस के लोग सरकारी काम करते हों उस समय जो लोग कहना नहीं मानते वह क़ानून की मर्यादा नहीं मानते और अच्छे देशों में साधारण लोग क़ानून के पक्षपाती हो जाते हैं। यह सब का सम्मत है कि शान्ति रखना परमावश्यक है चाहै इस में कैसी ही हानि क्यों न हो जाय। ऐसे अवसर में हाकिम की दोही चालें हैं। या तो जंगी पल्टन बुलाकर लोहू लुहान करके अशान्ति को दबा दे या पुलिस का हलका दबाव डालकर गड़बड़ को रोकै। हिन्दुस्थान के जो लोग जन्म भर शान्ति में रहे हैं वह लोग लड़ाई और जंगी प्रबंध को क्या समझेंगे। कभी कभी जब एक जाति के लोग दूसरी जाति के बिरोधी हो जाते हैं तो दो तीन घंटों के लिये पुलिस की सहायता करने को

जंगी पल्टन बुला ली जाती है। इस रीति से तुरंत शांति स्थापित न हुई तो कड़ा प्रबंध करना पड़ता है। फिर जंगी प्रबंध का जोखम सहना बुद्धिमानी का काम नहीं। पुलिसवाले की उंगली में दो अर्थ हैं। एक तो यह कि क़ानून से अधिकार पाकर उठी है और दूसरा यह कि न मानने से मर्यादा फूटती है। जो लोग इसे न मानैं उन्हें यह भी बताती है कि पुलिस के पीछे और भी सजी पल्टन है। वह जब आती है तो उसके हाथ में बंदूक और तोसदान में कारतूस भरे रहते हैं॥

८७—ज़ायद पुलिस॥

सेना के सिपाहियों और पुलिस में एक और भी बड़ा भेद है। सेना (Imperial) साम्राज्य की पल्टन है, और पुलिस स्थानिक है इसका अर्थ यह है, कि सारी सेना हिन्दुस्थान के सुप्रीम गवर्नमेंट के आधीन है। उसी को अधिकार है कि जहां चाहै भेजै जैसा चाहै बांटै। पुलिस

को लोकल गवर्नमेंट नौकर रखती है। कभी कभी छावनी की कमेटियां भी इसे रख लेती हैं। आबादी या क्षेत्रफल का बिचार पुलिस संख्या में नहीं होता बम्बई हाते में २३५०७ सिपाही और मदरास में २२०८८ और पश्चिमोत्तर देश में २५७०० और बङ्गाल में २३६०० आदमी हैं। जहां बहुत से देशी रजवाड़े होते हैं, जिन में अपराधी भागकर बच सकते हैं, या जहां लोग बहुत टंटा या बखेड़ा किया करते हैं, वहां अधिक पुलिस रक्खी जाती है। पुलिस का ख़र्चा सर्कार देती है, या छावनी की कमेटियों से लिया जाता है। कभी कभी किसी शहर या गावँ के लोग शान्ति के बिरुद्ध लगातार ऐसे अपराध कर बैठते हैं कि जिसके लिये साधारण पुलिस प्रबन्ध नहीं कर सकती। जब थोड़े आदमियों के दुष्टपने से पुलिस ज़ायद रखनी पड़े, तो यह उचित है कि सारी प्रजा उसके ख़र्च का दण्ड न भरै। इस से बिगड़े स्थानों में शांति रखने के लिये सर्कार

पुलिस ज़ायद रखती है, और जिन लोगों ने गड़बड़ मचाया था या जिनके कायरपने से गड़बड़ रुक न सका था, उन से पुलिस का खर्चा लिया जाता है, और यही उचित भी है। ऐसी पुलिस को (Punitive Police.) तादीबी पुलिस कहते हैं क्योंकि इसका ख़र्चा दण्ड की तरह लिया जाता है ॥

८८—साधारण लोग ॥

पर सब से बड़ी शक्ति जो यह देश अपनी रक्षा के लिये लगा सकता है वह अपने निवासियों की बुद्धिमानी और उनकी सहायता है। शांति रखने में जो काम प्रजा आप कर सक्ती है उसका वर्णन सहज नहीं। इङ्गलिस्तान में क़ानून की मर्यादा और औरों के मत का आदर और उनके दिल न दुखाने का बिचार प्रजा के स्वभाव का अंग है। इन से बढ़कर पुलिस का कोई सहायक नहीं। जब एक सिपाही के कहने से बड़ी बड़ी भीड़ें हट जाती हैं, तो आपस में लड़ाई का अवकाश घट जाता

है। ऐसे समय में जब प्रजा बिगड़ी है, अख़-
बारवाले झूठी खबरैं न छापैं, और हाकिमों
के उचित कामों को बुरा न कहैं, तो प्रजा भी
सँभली रहैगी। प्रजा के हाथ में पुलिस की
योग्यता सुधारने की एक रीति और भी है।
पुलिसवालों का मन घूस देकर न बिगाड़ें
और अधिकार में भूल करने पर पुलिस की
रिपोर्ट कर दें। पुलिस के उचित हुकुम को
मानने और उनके अनुचित कामों की रिपोर्ट
करने से जंगी पल्टन के बुलाने का काम न
रहैगा और पुलिस के दोष भी सुधरते जायँगे।
पुलिस का चलन उन्हीं लोगों के चलन के
आश्रित है जिनके बीच में वह रहते हैं, जो
लोग पुलिस को दोष देते हैं उन्हें यह सोचना
चाहिये कि पुलिस में सब उन्हीं के भाई बन्द
होते हैं, और पुलिस के बिगड़ने में उनका और
उनके देशवालोंही का दोष है, और पुलिस-
वालों का स्वभाव भी वैसाही हो जाता है,
जैसे उस नगर के रहनेवाले होते हैं॥

दसवां अध्याय ।

प्रजा की तन्दुरुस्ती ॥

८९—विज्ञान ।।

बुद्धिमान और अच्छा राजा निरा जीव मारनेही में नहीं बरन जीव बचाने में भी बिद्या से काम लेता है। पिछले अध्याय में हमने देखा है कि हिन्दुस्थान में सेना का बल सैनिकों की गिन्ती से अनुमित नहीं है। थोड़े से सिपाही युद्ध शास्त्र की कला सीखने से और विज्ञान की सहायता से बड़ी से बड़ी सेना को हटा सकते हैं। आज के दिन हिन्दुस्थान में अंगरेज़ी सेना जो ऐसी प्रबल हो रही है उसका कारण यह है कि अङ्गरेज़ी अफ़सर नित क़वायद सीखते हैं अच्छे से अच्छे पक्के हथियार उनको दिये जाते हैं, और देश में पहुंचने के लिये जो ईश्वर ने पहाड़ और समुद्र के रूप से रोक टोक बना रक्खी हैं उन से काम लिया जाता है। देखो यह चीज़ें कभी कभी कैसे काम की

हो जाती हैं। नदी और पहाड़ गढ़ और कोट बनाने के लिये कैसे उपयोगी होते हैं। कभी कभी पहाड़ बीच में पड़ जाने से सेना आगे नहीं बढ़ सकती। ऐसी दशा में पहाड़ काट-कर सुरंग बनाया जाता है। सिन्ध ऐसे बड़े नद पर सक्कर में पुल बांध दिया गया है। इस पुल के देखने से इञ्जीनियरी बिद्या की महिमा जान पड़ती है। बिजली के यंत्र को कभी कभी धोखे से छू लेने पर आदमी मर गये हैं पर इसी से दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने तक ख़बर पहुंचाई जाती है। अनाड़ी बारूद का खेल करने से मर गये हैं पर इसी से शहर के कोट गिराये जाते और बैरियों का संहार किया जाता है। ऐसीही रीतियों से बिद्या, आदमी को अपना बचाव करना या बैरी का मारना, सिखाती है। पर इतनाही नहीं, जान बचाने और आदमी की तन्दुरुस्ती और सुख के बढ़ाने में बिद्या का प्रभाव कम नहीं है॥

९०—मूर्खता ॥

पर इस बिषय में बिद्या के उपयोगी होने में, मूर्खता और झूठे बिश्वासों के कारण, बाधा पड़ती है। इसी से राजा का यह धर्म है कि अपनी प्रजा को बिद्या पढ़ावै और यह सिखलावै कि चोट लगने पर क्या करने से शरीर का दोष मिट जाता है, रोग की दवाई कैसे की जाती है और लोगोंही के उद्योग से रोग का बढ़ना कैसे रोका जाता है। कोई आदमी असावधानी से कुएं में गिर पड़े और उसकी टांग टूट जाय या वह मर जाय और हम लोग उसी को दोष दें तो उचित है। जीना मरना ईश्वर ने अपने हाथ में रक्खा है पर उसी ने हमको बुद्धि दी है आंखें दी हैं और हाथ पैर दिये हैं जिन से हम लोग अपनी रक्षा कर सकते हैं। जो लोग ईश्वर में बिश्वास रखते हैं वह ऐसे दुःखों के लिये ईश्वर को दोष न देंगे जिन से सावधान रहने से कोई बच सकता है विद्या ने यह सिद्ध कर दिया है कि

मैले पानी मैले कपड़े और सफ़ाई के नियमों को न मानने से रोग पैदा होते और आदमी मर जाते हैं। अगले दिनों के आर्य लोग सफ़ाई का बड़ा बिचार रखते थे और मुसलमानों की धर्मपुस्तक में लिखा है कि "सफ़ाई बिहिस्त (स्वर्ग) की कुंजी है"। पर जो बात आखों से देख नहीं पड़ती उसे लोग भूल जाया करते हैं डाक्टर लोग खुर्दबीन या और यंत्रों से एक बूंद पानी में वह कीड़े देख सकते हैं जिन से हैज़ा या महामारी फैलती है पर हमारे पास यह यंत्र नहीं इस से हम कह बैठते हैं कि पानी में कुछ नहीं है। पर कीड़े वहां मौजूद हैं और हम उन्हें देखें या न देखें उनसे बच नहीं सकते। इस से हमको उचित है कि गंदे पानी से बचे रहें। घाव में पट्टी बांधने के लिये साफ़ कपड़ा पानी से भी बढ़कर है। कई बरस हुए यूरप के कई अस्पतालों के बिषय में यह कहा गया कि इनकी भीतों और इनके तख़्तों में रोग के कीड़े भरे हुए हैं इस से इनको गिरा देना चाहिये

पर लार्ड लिस्टर ने बिचार करके यह देखा, कि घावों की मरहम पट्टी करने की रीति कुछ थोड़ीसी बदलने और हथियार और कपड़े और पट्टी का कपड़ा साफ़ रखने से लोगों का मरना बन्द हो गया और वही बुरे अस्पताल अब सब से अच्छे समझे जाते हैं। ऐसीही बातों में ईश्वर की कृपा से डाकृरी बिद्या की नई नई बातैं ऐसीही उपयोगी हुई हैं जैसी धुएं की गाड़ी या बिजली का तार है। आज दिन यूरप की तरह हिन्दुस्थान भी नई नई बातों से लाभ उठा सकता है और सूबे के गवर्नमेण्टों ने जहां तक हो सका है ऐसा यत्न किया है कि हिन्दुस्थानी इनको पा सकें। तो अब हमारा ही यह दोष है जो मूर्खता या झूठे हठ से हम लोग विद्या से लाभ न उठा सकें॥

८१—अस्पताल॥

इस बिषय में अङ्गरेज़ी हाकिमों ने पहिले यह काम किया कि अस्पताल और दवाईखाने

बनवाये जिन में चोटयल और रोगियों की दवाई हो सके इन्हीं की देखा देखी बहुत से राजा लोगों ने भी अपने अपने राज्यों में अस्पताल बनवा डाले हैं। लोग दिन दिन इनके गुण सम-झते जाते हैं पर हिन्दुस्थान में अब भी बहुत ऐसे हैं जो यह नहीं समझते हैं कि अस्पताल में बहुधा वही लोग जाते हैं जिनका रोग बहुत बढ़ गया है और जब वह मरे तो डाकृरों को दोष देते हैं यह नहीं कहते कि रोगहो असाध्य हो गया था। जो जंगली लोग हिन्दुस्थान के सिवाने के उस पार रहते हैं उनमें ऐसा झूठा हठ नहीं है। जब कभी उस देश को देखने या सिवाना निश्चय करने के लिये लोग भेजे जाते हैं तब उनके साथ जो डाकृर रहता है उसे दिन रात सैकड़ों रोगी घेरे रहते हैं। कोई फोड़ा चिर-वाने को चिल्लाता कोई दवा मांगता है ऐसेही सर्कारी हिन्दुस्थान के सिवाने पर जो अस्पताल हैं उनमें अनेक पठान, बलोची, चीनी आदि आते हैं और डाकृरों के गुणों को समझते हैं।

हिन्दुस्थान में भी विद्या के प्रचार और हठ के बिचार से भिन्न भिन्न सूबों में अस्पतालों के बिषय में भिन्न भिन्न मत हैं। बम्बई में अस्पतालों को लोग इतना बुरा नहीं समझते जैसा कि
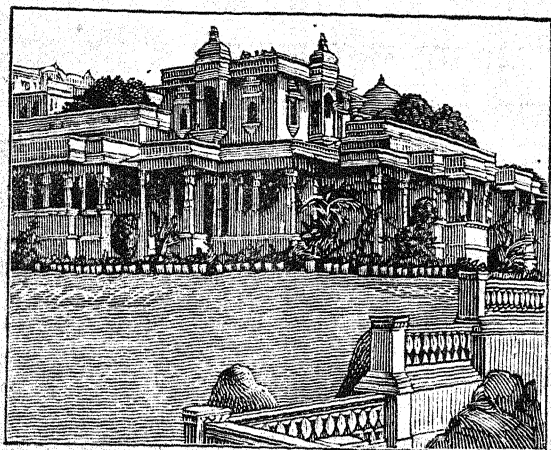
वाल्टर अस्पताल महाराजा उदयपुर, राजपूताना.

बंगाल में जानते हैं। पर अस्पताल में जो चाहै चला जाय और रोगियों के भाई बन्द आप देख सकते हैं कि वहां उनकी दवाई कैसी सावधानी से की जाती है। इस से दिन दिन बिश्वास बढ़ता ही जाता है और इस बात के

जानने से बड़ा आनन्द होता है कि आज के दिन हिन्दुस्थान में २२११ अस्पताल हैं जिन में हर साल ३ लाख ४८ हज़ार ऐसे रोगी रहते हैं जिनकी वहीं दवा होती और वे वहीं खाते पीते भी हैं और एक करोड़ ८५ लाख ८८ हज़ार रोगी बाहर से दवा ले जाते हैं। पंजाब, मदरास, या पश्चिमोत्तर देश और बम्बई से घट कर बंगाले में लोग अस्पताल की दवा खाते हैं पर जब बम्बई की छोटी आबादी का विचार किया जाता है तब यह जाना जाता है कि इस सूबे के लोग अस्पतालों में बहुत जाते हैं॥

९२—लेडी डफरिन॥

यूरप में भी कोई आनन्द से अस्पताल नहीं जाता। जो जाता है वह यही समझकर जाता है कि बहुतसी ऐसी चोटें और बहुत से ऐसे रोग हैं जो अस्पताल की दवाई दरमान से अच्छे हो सकते हैं और जिस चतुराई और देख भाल से वहां दवाई की जाती है

वैसी उनके घर पर नहीं हो सकती। जब ऐसी दशा मरदों की है तब औरत और बच्चे कैसे अस्पतालों को अच्छा समझ कर दवा को आवेंगे। पूरब के देशों में औरतें परदे में रहती हैं। यह रीति भी उनको खुले अस्पतालों में आने से रोकती है। बच्चे अस्पताल के नाम से डरते और उनके मा बाप बच्चों के कहने में आ जाते हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या ऐसा कोई उपाय नहीं है जिस से औरतों और बच्चों को अङ्गरेज़ी दवा देकर उनके दुख दूर किये जांय? यह प्रश्न हिन्दुस्थान के बड़े लाट मार्क्विस आफ़ डफ़रिन और आवा की लेडी साहिबा के मन में उठा और उन्हीं ने इसका उत्तर सोचा। लेडी डफ़रिन ने एक ऐसी रीति निकाली है जिस को ज्यों ज्यों लोग समझैंगे त्यों त्यों उनका नाम लेंगे। लेडी साहिबा की यह रीति है कि जगह जगह पर औरतों और बच्चों के लिये अस्पताल खोले जांय और पढ़ी लिखी हिन्दुस्थानी दाइयां अस्पतालों में

ग्रौर ग्रौर जगहों पर पहुंचाई जायं जो काम पड़ने पर भलेमानसों के घरों पर भी पहुंचैं। इन

मारक्वीस ग्राफ़ डफ़रिन एण्ड ग्राया.

दोनों बातों में बहुत कुछ सफलता हुई है। अमरावती का अस्पताल पहिली बात का उदाहरण है। इस में पहिलेही साल ९६ भीतरी और ६२१५ बाहिरी रोगियों को दवाई दी गई। हिन्दुस्थान के अनेक भागों में दाइयां सिखाई जा रही हैं और ऐसी दाइयों की मांग भी बहुत है। यह आशा की जाती है कि एक दिन हिन्दुस्थान के हर एक बड़े गांव या क़सबे से दो चार औरतें दाई का काम सीखने जांयगी और अपने घर लौटकर औसर पड़ने पर अपने पड़ोसियों की सहायता करैंगी। इस रीति के सफल होने के लिये ठिकाने ठिकाने कमेटी बनाने का यत्न किया जाता है जो इन कामों के लिये रुपया इकट्ठा करै। कई राजाओं और धनी लोगों ने भी लेडी डफ़रिन के बिचार को बहुत पसन्द किया है और इस में सन्देह नहीं कि दाई का काम कुछ दिन चलाने पर देश भर में फैल जायगा और सैकड़ों रोगी जिन की दवाई करना मर्दों का

धर्म है सहज में अपने रोगों की चिकित्सा करा सकैंगी ॥

९३—रोगों का रोकना ॥

अङ्गरेज़ी में एक बहुत अच्छी मसल है कि रोग का रोकना दवा करके रोग दूर करने से अच्छा है। इसी बिचार से हिन्दुस्थान की गवर्नमेण्ट को अस्पताल, दवाईखाने या दवाई का बन्दोबस्त करने से सन्तोष नहीं है। विद्या से यह बात सिद्ध हुई है कि बहुत से रोग जो हिन्दुस्थान में बड़ा उपद्रव करते थे रुक सकते हैं और उनका बल घट सकता है। इन रोगों में शीतला का सब से बड़ा डर था। इस से लाखों आदमी हर साल मरते थे पर मनुष्य की प्रकृति जैसी पच्छिम में है वैसीही पूरब में है और जैसे टीका लगाने से अब यूरप में शीतला बहुत कम सुनी जाती है वैसेही हिन्दुस्थान में भी आशा की जाती है कि टीका लगाने से शीतला न रहेगी। हिन्दुस्थान में

जितने लड़के हर साल पैदा होते हैं उनमें से सैकड़ा पीछे ३० लड़कों को टीका लगाया जाता है और यह आशा की जाती है इस सहज दवाई का स्वभाव ज्यों ज्यों लोग देखेंगे त्यों त्यों थोड़ेही दिनों में और भी बहुत से लड़कों को शीतला से बचाने के लिये टीका लगवा दिया जायगा। अङ्गरेज़ी सर्कार ने रोग से अपनी प्रजा बचाने के लिये और जो उपाय किये हैं उन में सब से उपयोगी यह हैं, साफ़ पानी का बन्दोबस्त, गन्दे पानी का निकास, सफ़ाई, और सफ़ाई की कमेटियां बनाना। हिन्दुस्थान के शहरों और बड़े बड़े क़सबों में लोगों के पीने के लिये दूर से साफ़ पानी लाने में करोड़ों रुपया ख़र्च हो गया है। इस उत्तम सुधार पर पहिले कुछ बिरोध भी किया गया था पर जहां जहां लोगों ने ऐसे कुओं और तालाबों का पानी पीना छोड़ दिया है जिन में बरसात का पानी इकट्ठा होता था या मोहरियां गिरती थीं वहां लोग पहिले से कम

मरते हैं। पर गांव में अब भी बहुत कुछ काम बाक़ी है और लोगों को चाहिये कि जहां तक हो सके पानी पीने के कुओं को नहाने धोने के कुओं से अलग रक्खें। इसी तरह म्यूनीसिपलटियों और गांव में गन्दा पानी और कूड़ा उठाने में बड़ी सावधानी की जाती है। कई सूबों में चतुर अफ़सरों की एक सफ़ाई की कमेटी बनाई गई है जो कमेटियों को सलाह बताती है और इन रीतियों से यह लाभ हुआ है कि यद्यपि हैज़ा, आंव और ज्वर आदि से साठ लाख आदमी अब भी मरते हैं, तौ भी साधारन ऋतु में लोग कम मरने लगे हैं॥

९४—अकाल का प्रबन्ध॥

जब कभी पानी न बरसने से महंगी पड़ जाती है तो अङ्गरेज़ी सर्कार एक बड़ा लम्बा चौड़ा बन्दोबस्त करती है जिस से प्रजा का दुख दूर हो। हिन्दुस्थान में किसी राजा ने पहिले इतने बड़े बैरी का सामना करने के

लिये हाथ न उठाया था पर आज कल सारा राजप्रबन्ध इस से भिड़ने को तैयार किया जाता है। अगले दिनों में हाकिम लोग कहते थे कि हम क्या कर सकते हैं और जो लोग अकाल के दिनों से बचते थे वह उन लोगों के गुलाम हो जाते थे जिन के हाथ उन्हों ने अपने या अपने बाल बच्चों को थोड़े से अन्न के बदले बेंच डाला था। अब गवर्नमेण्ट अपाहिजों क भोजन देती और जो लोग अकाल से बच जाते हैं वह स्वतंत्र रहते हैं और अपने अपने कामों में लग जाते हैं। इस बात को सिद्ध करने के लिये वेही तदबीरें की जाती हैं जो रोग के रोकने के लिये होती हैं, रोकना—और दवा करना ॥

अकाल को बिलकुल रोकना मनुष्य की शक्ति के बाहर है, टीड़ी आना, बाढ़ या चूहों की मरी कैसे रुक सकती है। जब ईश्वर ने मौसमी हवा रोक ली तो पानी कौन बरसा सकता है? जब तक यहां की आबहवा नहीं

बदलती तब तक किसी न किसी भाग में अकाल पड़ सकता है पर महंगी बढ़कर अकाल होना या अकाल ऐसा बढ़ना जैसा कि १८ वीं सदी में या उस से पहिले देश में पड़ा था तदबीर से रुक सकता है। अकाल के रोकने की दो चार तदबीरें यहां लिखी जाती हैं। इस बिषय में बिद्या से हम को वैसीही सहायता मिलती है जैसी टीका या देश रक्षा में मिली है। आबहवा का एक महकमा है वह साल भर चारों ओर से यह पूछ पूछ कर लिखा करता है कि कहां और कितनी बरफ़ गिरी किधर से आंधी आई कैसी हवा चलती रही और हिन्दुस्थान के बाहर समुद्र पर और देशों में हवा की क्या दशा रही है। सूर्य का बिम्ब और उसके ऊपर काले काले धब्बे भी देखे जाते हैं और इन्हीं से यह बिचारा जाता है कि आगे की मौसमी हवा कैसी होगी। उस समय पानी न बरसने का डर हुआ तो वैसा बन्दो-बस्त किया जाता है। जब अकाल की सम्भावना

होती है तो लोग नाज का खर्च कम कर देते हैं। अकाल रोकने की सब से अच्छी तदबीर यह है कि जहां तक हो सके आबपाशी के काम बढ़ाये जांय तौ भी जितना पानी हमको चाहिये उसको इकट्ठा कर लेने पर भी कभी कभी सिंचाई करने से धरती का बल घट जाता है और गांव में ओघा आ जाता है और बोखार फैलने लगता है। तौ भी पिछले बरसों में बहुत कुछ काम हो गया है और हिन्दुस्थान में उन्नीस करोड़ सत्तर लाख एकड़ धरती में एक करोड़ से ऊपर एकड़ धरती की सिंचाई नहर और बम्बों से होती है जिस का पूरा पूरा हिसाब रक्खा जाता है और इतनी ही धरती तालों से सींची जाती है। इस १९ करोड़ की संख्या में किसी किसी भाग के खेत नहीं जोड़े गये हैं क्योंकि इनके नक़शे नहीं आते। यह हिसाब लगाया गया है कि इस उपाय से बारह करोड़ आदमियों के खाने भर को नाज पैदा हो सकता है। अकाल रोकने का दूसरा उपाय रेल है और अंगरेज़ी

सर्कार ने हिन्दुस्थान में ३० हज़ार ११० मील रेल खोल दी है जिसके सहारे भूखों को अन्न पहुंच सकता है और दुखी लोग अपना देश छोड़ बाहर जा सकते हैं। हिन्दुस्थान के जंगलों को भी न भूल जाना चाहिये। इस देश में एक लाख ३१ हज़ार बर्ग मील जंगल है इसी की ख़बरदारी रखने से बरसात घटने नहीं पाती पहाड़ियों के किनारे पेड़ काट डालने से धरती में तरी आने और रखने की शक्ति कम हो जाती है और बादल पहाड़ों के पास खिंचकर नहीं आते। इन्हीं उपायों से कई महंगी के साल जो पहिले अकाल का रूप धारण करते ऐसा भयानक रूप धारण न कर सके॥

९५—उद्यमों की स्वतंत्रता॥

अगले दिनों में जब किसी राज्य या सूबे में अकाल का डर होता था तो लोग चिल्लाने लगते थे कि नाज का बाहर जाना रोक दिया जाय और सर्कार आप अनाज बाहर से मोल

लाकर बेचे। इस रीति में बड़े दोष देखे गये। यह चाल वहीं चल सकती है जहां ब्यौपार बहुत थोड़ा हो और माल ढोने का सामान कम हो। जब महंगी दूर तक फैली रहती है तब हज़ारों ब्यौपारियों के मिलकर काम करने से काम चलता है। सर्कार उनको न छेड़े तो वह लोग अपने लाभ के लिये जहां तक हो सकैगा बाहर से नाज मोल लावैंगे और लोगों के हाथ बेचैंगे। पर सर्कार जो आप ब्यौपार करने लगै तो ब्यौपारी अलग हट जावेंगे। उन लोगों से कोई सहायता नहीं मिल सकती और सर्कारी नौकर जिन्हें और काम भी करना रहता है उनके बनाये कुछ नहीं बनता। इस में सन्देह नहीं कि सर्कार किसी एक शहर में बहुतसा नाज ला सकती है पर नाज आने की खबर पातेही लाखों भूखे दौड़ पड़ैंगे और मांगने की भीड़ में हजारों या तो कुचलकर मर जांयगे या निराश रह जांयगे। कई एक जगहों में अन्न बटनेही से

लोगों को पूरी सहायता मिल सकती है और उचित रीति वही है जिस से इसका भी प्रबन्ध हो और यह प्रबन्ध तभी ठीक चल सकता है जब अलग अलग अनेक लोगों को बिना रोक टोक या छेड़छाड़ अपना भला समझकर इस काम के करने का उत्साह दिया जाय। पर राजा का भी यह धर्म है कि उन लोगों को ऐसी मदद दे और ठीक ठीक यह बतलावे कि कितने आदमियों के लिये अन्न का बन्दोबस्त होना चाहिये, कहां कहां किस भाव से अन्न बिक रहा है और जिन सूबों में अकाल नहीं पड़ा वहां फ़सल कैसी हुई हैं। साधारन ब्यौपारी रेल और सड़कों की मदद से पूंजी लगाकर और एक दूसरे से होड़ करके इन बातों को जानकर जो कर सकते हैं वह राजा से नहीं हो सकता है। अकाल रोकने और पड़ने पर उसका बन्दोबस्त करने के लिये ब्यौपार की स्वतंत्रता भी बहुत ही उपयोगी है॥

९६—काम और ख़ैरात ॥

सर्कारी नक़्शों के देखने से जाना गया है कि १६ जून सन् ९७ को ४२४०३३७ आदमी हिन्दुस्थान भर में अकाल के प्रबन्ध में सर्कार से पलते थे। इन में कुछ लोग आजमाइशी कामों पर, कुछ इमदादी कामों पर लगे थे और कुछ लोगों को बिना कुछ काम कियेही भोजन दिया जाता था। अकाल में लोगों को मदद देने की उचित रीति यही है कि जो लोग फावड़े चला सकें या टोकरी उठा सकें उन से मज़दूरी कराई जाय और जो अपाहिज या रोगी हों उन्हें योंही भोजन दिया जाय। और कोई कोई यह कहते हैं कि जिन लोगों ने कभी काम नहीं किया है उन से काम कराना निठुराई है पर थोड़ासा बिचार करने से यह खुल जायगा कि काम करने में राजा प्रजा दोनों की भलाई है जो लोग सहायता के योग्य हैं उनके शरीर और मन दोनों की भलाई है। थोड़ा बहुत काम करने से निर्बल देह भी तनदुरुस्त रह सकती

है और लोगों का मान भी बना रहता है जब वह लोग यह समझते हैं कि हम मज़दूरी के बदले कुछ काम भी कर रहे हैं। इस से ख़ैरात पाकर मज़दूर लोग निरे कँगले नहीं हो जाते. अकाल में मज़दूरों के झुंड बनाने का एक और भी कारण है। ये एक ठिकाने पर बने रहते हैं और गड़बड़ नहीं होता। यह लोग कुछ दिन में सीखे सिखाये बहुत अच्छे मज़दूर हो जाते और इनकी तन्दुरुस्ती की निगरानी होती और इनके मज़दूरी बांटने में बखेड़ा नहीं होता। जहां हज़ारों आदमी एकही जगह काम करते हों वहां यह थोड़ी बात नहीं। पर यह बन्दोबस्त जाति और देश दोनों के लिये लाभ-कारी है। अकाल के बन्दोबस्त में मालगुज़ारी पर बड़ा बोझा पड़ता है जो रियाया के सिर जाता है। और अकाल के दिनों में माल-गुज़ारी माफ़ करने और मुलतवी करने का परिणाम यह हो सकता है कि अन्त को या तो देश का देवाला निकल जाय या अपने

ऊपर बहुतसा क़रज़ा लाद ले। इस लिये टेस्ट (Test) वर्क (ऐसे काम जिन को ऊपर लिख गये श्रौर जिन में पहिले पहिल ऐसेही लोगों को मदद या मज़दूरी दी जाती है जो लोग काम करना चाहते हैं) मदद की श्रावश्यकता सिद्ध करते हैं। जब तक इतनी ही मजदूरी दी जाती है जिस से काम करनेवाले तन्दुरुस्त रह सकैं, ऐसे लोग ख़ैरात लेने को न दौड़ेंगे जो कमाई से अपना पेट भर सकते हैं। ऐसे कामों पर वेही लोग जायँगे जिन्हें मज़दूरी नहीं मिलती और जो सचमुच भूखे हैं। मज़दूरी कम रखने और काम लेकर मज़दूरी देने से थोड़ा सा रुपया बच जाता है। जब टेस्टवर्कों से यह जान लिया जाता है कि बहुत से लोगों को मदद देना उचित है तो इमदादी काम खोले जाते हैं। और पुश्ता बनाया जाता है नहर निकाली जाती है या ताल खोदे जाते हैं। इस में सन्देह नहीं कि मज़दूर अकाल के मारे कमज़ोर हो जाते हैं और जितनी मज़-

दूरी दी जाती है उतने का काम नहीं होता पर तब भी कुछ होता ही है और बेचारी रैयत जिसको अकाल का ख़रचा देना पड़ता है इस ख़रचे के बदले कुछ पा जाती है। ख़ैरात उन्हीं को देना ठीक है जो बुढ़ापे से, बीमारी से या और किसी कारण से काम नहीं कर सकते। पर जो काम कर सकते हैं उन से काम लेकर, मज़दूरी देना मालगुज़ारी देनेवाली रैयत के साथ न्याय करना है और इसी में उनका भी कल्यान है॥

९७–महामारी (ताऊन)॥

कभी कभी यह भी हो सकता है कि ऐसा रोग भी उभड़ पड़े जो शहरों का नास कर दे और जो बचें उनको किसी काम का न रक्खे। काला बुख़ार और महामारी ऐसेही रोग हैं। ऐसे अवसर पर लोग चाहें या न चाहें, राजा का धर्म है कि रोग की गरुआई के विचार से अपनी प्रजा को बचाने का उपाय करे। सन् १८९६ ई० में बम्बई शहर में कुछ

लोग महामारी से मरे और दोही चार महीने में आधे लोग घबरा कर भाग गये और रोग भी उनके पीछे लगा हुआ और और सूबें में पहुंच गया। यों तो महामारी एकही शहर में थी अब कई ठिकानें में हो गई। कछ में सब से बड़ा उपद्रव हुआ क्योंकि यहां बीमारें या उनके साथ रहनेवालें का तन्दुरुस्त लोगें से अलग रखने का ततकाल कोई उपाय नहीं किया गया। जो मर गये उनके नातेदारें से औरें को छूत लगी और हज़ारें आदमी मर गये। ग्वालियार राज में बड़ी चतुराई की गई। एक गांव में महामारी आई। उसे महा राज सेंधिया की पल्टन ने घेर लिया और जब तक महामारी का डर रहा कोई गांव से निकलने न पाया। लोगें को बड़ी सावधानी से यह बिचारना चाहिये कि ऐसे रोग को न छेड़ने से क्या अनर्थ हो सकता है। पहिले जो रोका न जाय तो जंगल की आग की तरह फैलकर यह रोग हज़ारें, लाखें की जान लेता

है दूसरे दूर देशवाले डर जाते हैं और जिस देश में ऐसी भयंकर मरी फैली हो वहां की चीज़ें नहीं छूते। देसावर का ब्योपार बन्द हो जाता है और कार बार का एक बार बिगड़कर जमना बरसों का काम है। जहां ऐसे अनर्थ की सम्भावना हो वहां राजा का धर्म है कि इसके रोकने का यत्न करे। महामारी के रोगी चाहें या न चाहें उन्हें अस्पताल में भेजही देना चाहिये और जो भाई बन्धु उनके साथ रहते हैं उन्हें औरों से अलग रखना चाहिये। यह काम बड़े दुख का है पर गवर्नमेण्ट को यह करना पड़ता है क्योंकि सारा राज्य इसी के आसरे है और सबको यह आस है कि गवर्नमेण्ट अपना काम दृढ़ता से चटपट करैगी। संसार में ऐसा कोई सभ्य देश नहीं जहां महामारी की बाढ़ रोकना राजा का परम धर्म न माना जाता हो। और कोई उपाय नहीं है जिस से लोगों की जान बचे या ब्योपार की सत्यानासी रुक सकै॥

९८—हाट बाज़ार ॥

महामारी उभड़ने पर गवर्नमेण्ट ही अपनी सक भर उसके रोकने का उपाय कर सकती है। पर म्यूनीसिपलटी आदि और भी समाज हैं जो "सैल्फ़ गवर्नमेण्ट" के अधिकार के उचित बर्त्ताव से प्रजा की तन्दुरुस्ती रखने का उद्योग कर सकती हैं। तन्दुरुस्ती के लिये साफ़ पानी तो होना ही चाहिये पर अन्न और खाने की चीज़ों का साफ़ रखना भी उचित है। दूध में मैला पानी मिलाने या खाने की चीज़ों को गन्दी हाट बज़ारों में रखने से भी हैज़ा आदि अनेक रोग फैल सकते हैं। इसी बिचार से कई म्यूनीसिपलटियों ने बज़ार बनवा दिये हैं जहां खुली हवा में बैठकर दूकानदार अपना सौदा बेंच सकते हैं। एक ठिकाने तरकारी, आटा, दाल मिलने में लोगों को भी सुभीता है और बज़ार की निगरानी भी हो सकती है, बज़ार साफ़ रह सकता है और सौदा भी देखा जा सकता है।

सड़ी गली चीजें बिकने के आवें ते उन्हें सर्कारी नौकर रोक सकते हैं। ऐसीही बातों में अंगरेज़ी सर्कार रोगों का फैलना रोकती है और लोगों को भी स्वतंत्र रखती है जो जो चाहै बेंचें और मोल लें। पर सर्कार भी प्रजा की तन्दुरुस्ती के लिये उतना नहीं कर सकती है जितना प्रजा आप कर सकती है और इस लिये हर एक समझदार प्रजा का धर्म है कि सफ़ाई के गुणों को जाने और निरा अपने ही लिये नहीं बरन अपने पड़ोसियों की भी भलाई के लिये सफ़ाई की बान डालै॥

ग्यारहवां अध्याय।

सर्कारी आमदनी और ख़र्च॥

९९—सर्कारी रुपया॥

महाजनी कोठी हो या और कोई बड़ा कारबार हो उसके सम्हालने के लिये बड़ी चतुराई चाहिये और यह काम वही कर सकता है जिसने इस को किया है। मदरसे के लड़कों को उसकी रीति समझाना कठिन है। तो फिर इतने बड़े राज की आमदनी ख़र्च का बन्दोबस्त कैसे समझाया जा सकता है जिस में ९५ करोड़ की आमदनी है? पर इसके साथ ही जो लोग सर्कार को कर देते हैं उन्हें भी यह जानना चाहिये कि उनके कर का रुपया कहां जाता है और कैसे ख़र्च होता है। प्रजा को जानने के लिये सर्कार आमदनी और ख़र्च का ब्यौरा गज़टों में छापा करती है। हम भी मदरसे के लड़कों को उसके

समझाने का उद्योग करैंगे। पहिले समझना चाहिये कि गवर्नमेण्ट क्या है? ख़ज़ाना इसके पास इसी लिये है कि उसे देश के हितके लिये ख़र्च करै। जो आमदनी धरती से या रेल से आती है, जो टिकस प्रजा से मिलता है सब को खर्च करना इसी के हाथ में है। इसी रुपये से गवर्नमेण्ट राज्य का प्रबन्ध करती है और अगर सारे देश के रहनेवालों या किसी सूबे या जाति के लोगों की इच्छा हो कि और स्कूल और अदालतें खुलैं या और सड़कें आदि बनाई जायँ तो गवर्नमेण्ट ही उसका बन्दोबस्त करने को किसी दूसरी मद में ख़र्च घटाती है या और टिकस लगाती है। पर यह भी न भूलना चाहिये कि गवर्नमेण्ट टिकस के सिवाय और रुपया भी जमा करती है। कुछ धरती इसके पास ऐसी है जिस का इस को लगान मिलता है और इस में से कुछ मालिकों को दे दिया जाता है। सर्कार अमानत का रुपया भी लेती और महाजन का काम करती है

नोट जारी करती श्रौर रुपया उधार लेकर रेल श्रौर नहर बनाने में ख़र्च करती है। नमक श्रौर श्रफ़ीम बनवाना श्रौर बेंचना भी इसी का काम है। डाक ले जाना, तार में ख़बर भेजना, रेल चलाना, नहरें से पानी देना, इन सब कामें से जो श्रामदनी होती है वह सब ख़ज़ाने में जमा होती है। इस से सिद्ध है गवर्नमेण्ट का काम बड़ा भारी श्रौर बड़ा पेंच-दार है। कर देने वाली प्रजा को यह जनाने के लिये कि गवर्नमेण्ट उस से रुपया लेकर क्या करती है एक बजट बनाया जाता है। श्रब देखना चाहिये कि बजट किसको कहते हैं॥

१००—बजट श्रौर हिसाब॥

हिन्दुस्थान की गवर्नमेण्ट एक साल की पहिली श्रप्रैल से दूसरे साल की इकतीसवीं मार्च तक माल का साल समझती है। इस साल के लगने के पहिले ही यह सोच लिया जाता है कि कितनी श्रामदनी होगी श्रौर क्या

क्या ख़र्च करना पड़ेगा ? यह हिसाब एक खर्रे में लिखा जाता है और इसको अंगरेज़ी में बजट इस्टिमेट कहते हैं। ज्यों ज्यों साल बीतता जाता है यह खुलता जाता है कि किस किस मद में आमदनी इस बजट के तख़मीने से कम हुई है। जैसे काल पड़ गया, लगान न वसूल हुआ, रुपये का दाम घट गया, लड़ाई छिड़ गई और ख़र्चा बढ़ गया, रेल से आमदनी कम आई। बड़े लाट के ख़ज़ाने का महकमा हिन्दोस्थान भर के ख़ज़ानों का हिसाब देखता और नित का हाल जानता रहता है। ऐसी दशा में यही बजट में घट बढ़ करता और साल के भीतर दूसरा बजट छाप देता है। जब साल बीत गया और सब ज़िलों और सूबों के हिसाब आ गये तो साल का हिसाब छापा जाता है। इसी रीति से सब लोगों को यह बराबर बतलाया जाता है कि सर्कार कितनी आमदनी और ख़र्च की आशा रखती है। पीछे जैसा साल बीता वैसा सच्चा हाल

बताया जाता और फिर साल में जो आया और खर्च हुआ प्रकाश किया जाता है। गावँ, ज़िले, सूबे और राज्य के बयान में जो बातें लिखी गईं उन्हें ध्यान रखने से हिसाब समझाने की यह रीति समझ में आ जायगी। जैसे मान लो किसी गावँ में किसी किसान पर ५) मालगुज़ारी बांधी गई। पटवारी ने यह हिसाब तहसील में दाखिल किया, तहसील से ज़िले में गया, ज़िले से सूबे की राजधानी में पहुंचा और वहां से सुप्रीम गवर्नमेण्ट के ख़ज़ाने के मुहकमें में भेजा गया, इस हिसाब का ५) बजट में लिखा गया। पर बरसात न हुई और इस मालगुज़ारी की पहिली किस्त न वसूल हुई। बस अब तख़मीने में २) घट गये और दूसरे तख़मीने में २) घटाकर दिखाये गये। दूसरी फ़सल अच्छी हुई और किसान ने पूरी मालगुज़ारी अदा कर दी। वही हिसाब में दिखा दिया गया। इतना और कहना है कि बजट में Rx ऐसा संकेत लिखा जाता है।

इसका अर्थ १०) है और १०) का एक पौंड अंगरेज़ी होता तो एक करोड़ रुपये दस लाख पौंड के बराबर होते ॥

१०१—टिक्स और महसूल ॥

उधार की आमदनी छोड़ दें तो सर्कारी जमा जो ख़र्च के काम आ सकती है, दो प्रकार की है एक टिक्स और अबवाब और दूसरे किसी काम के बदले उसका ख़र्चा। टिक्स दो प्रकार का होता है एक सीधा, दूसरा व्यंग। सीधा वह है जो उन्हीं लोगों पर लगता है जिन से लेना अपेक्षित है, सीधे (Direct) टिक्स ये हैं इनकमटिकस, इस्टाम, रजिस्टरी की फ़ीस और मालगुज़ारी अबवाब आदि। व्यङ्ग (Indirect) टिकस वे लोग देते हैं जो पहिले अगोड़ देकर इस आसरे में रहते हैं कि जो कुछ दिया उसे औरों से भर लेंगे। अजान लोग कभी कभी नहीं समझते कि सब लोग व्यङ्ग टिकस दे रहे हैं। ऐसे टिकस तीन प्रकार

के हैं (१) आबकारी (२) कस्टम और (३) टोल । आबकारी उस टिकस को कहते हैं जो हिन्दुस्थान की बनी बस्तुओं पर लगाया जाता । कस्टम बाहर से आई हुई चीज पर लगता है और टोल ढोलाई का टिकस है । एक छोटा दूकानदार गावँ में अङ्गरेज़ी कपड़ा बेंचता है तो वह अपने गाहकों से इतना दाम लेता है ॥

१–यूरोप में कारख़ाने में कपड़े का दाम ।
२–यूरोप से इस देश तक आने का ख़र्चा ॥
३–बम्बई में कस्टम ॥
४–रास्ते में और जो कुछ टोल लगा हो ॥

इस रीति से गाहक दूकानदार को टिकस का रुपया भर देता है ॥

टिकस लगाने का अधिकार सर्कारही को है पर हम कह चुके हैं कि स्थानिक कामों के लिये टिकस लगाने का अधिकार म्यूनीसिपल कमेटियों को भी दिया गया है । ऐसे टिकसों का नाम रेट है । कभी कभी सर्कार भी स्थानिक

कामों के लिये टिकस लेती है इन्हें अबवाब कहते हैं और ये सूबे के रेट कहलाते हैं॥

१०२—टिकस लगाने के नियम॥

अंग्रेज़ी सरकार ही ने हिन्दुस्थान में बजट बनाने की रीति चलाई और बहुत से रजवाड़े भी उसी की देखादेखी बजट बनाने लगे हैं। पर कर लगाने में जो सुधार अङ्गरेज़ी सरकार ने किये हैं वह इस से भी बढ़बढ़ कर हैं। अब यह सब का सम्मत है कि अङ्गरेज़ी सरकार जो टिकस लगावे वे निश्चित हों, मनमाने न हों और देनेवाले ठीक ठीक जानैं कि कितना देना है। सरकारी हिन्दुस्थान के ज़िलों में जब बन्दोबस्त किया जाता है तब इसी बात पर ध्यान रक्खा जाता है। पहिले राजा और बादशाह प्रजा से पैदावार का एक भाग ले लिया करते थे पर यह कोई जानताही न था कि सरकार को क्या देना चाहिये। अब अंगरेज़ी का एक एक किसान जानता है कि कितना पोत देना चाहिये॥

दूसरी बात यह है कि प्रजा से, जितना कर सरकार को लेना पड़ता है उस से अधिक जितनाही कम लिया जाय उतना अच्छा है। जमाबन्दी के सिवाय पहिले राजा लोग कई प्रकार के कर (अबवाब) लिया करते थे पर उन में से बहुतसा राजा तक पहुंचताही न था बीचही में रह जाता था। जैसे किसी खास तरह की खाने की बस्तु पर कर, बै और हिबा, व्याह, यात्रा, एक गांव छोड़कर दूसरे गांव में रहने का नजराना इत्यादि अब यह सब पटवारी के कागज़ से निकालडाले गये। ऐसे करों से कुछ बिशेष फ़ायदा नहीं क्योंकि बहुतसा रुपया बीचही में लोग खा जाते थे। इनसे टिकस देनेवाले को दुख होता था और व्यापर स्वतंत्रता में बट्टा लगता था। सरकार को फ़ायदा थोड़ा ही था और प्रजा को दुख बहुत। सरकार अंगरेजी के नियमों को और उन रजवाड़ों के प्रबन्धों को जिन्हों ने अभी तक पुरानी रीति नहीं बदली है जिस किसी ने

ध्यान देकर देखा है उसे रजवाड़ों में छोटे छोटे करों के लम्बे सूचीपत्र देखकर अवश्यही अचरज हुआ होगा ॥

तीसरा नियम यह है कि धनी और ग़रीब सब पर बराबर एकही रीति से कर लगना चाहिये। जहां तक हो सकता है सरकार अंगरेज़ रक्षा के बदले सब से उनके लाभ की अपेक्षा बराबर कर मांगती है ॥

अन्तिम नियम यह है कि प्रजा के लिये करके बदले सड़क और साधारण के काम की चीजें बनवा दी जायँ जिस में उस करके बिशेष हिस्से फिर उन्हीं के काम में लग जायँ ॥

१०३—बिशेष लाभ ॥

और देशों की अपेक्षा हिन्दुस्थान में कर देनेवाले अच्छे रहते हैं। १८९४–९५ साल स्थानिक उपद्रवों से शुद्ध रहा है। इस साल ९५ करोड़ रुपया सरकार के ख़ज़ाने में आया। इसमें ६६.५ करोड़ से अधिक टिकस के रूप में

नहीं आया। इस ९५ करोड़ रुपये का ब्यौरा यह है॥

करोड़

२५·४—सरकारी असामियों से धरती का कर।

७·३—अफ़ीम का टिकस जिसे बहुधा चीनवालों ने दिया।

१·६—जंगल की आमदनी।

·८—रजवाड़ों से नजराना।

·८—उधार के रुपये का सूद।

२·६—डाक, तार और टकसाल की आमदनी।

१·६—दीवानी आदि महकमों की आमदनी।

१·२—पेनशन आदि।

२१·२—रेल की आमदनी जो मुसाफिरों से हुई।

२·३—नहर की आमदनी पानी लेनेवालों से।

·७—सड़क का मसाला बेंचने से।

१·०—सेना की आमदनी॥

इस बात को समझाने के लिये कुछ और भी कहना चाहिये। जिन के पास सरकार की धरती है वे सरकार को जमा न दें (और यह जमा भी तो पोतही है) तो उनको लगान

तो किसी न किसी ज़िमीदार को देनाही पड़ेगा और होड़ाहोड़ी में ज़ियादा देना पड़े तो भी अचरज नहीं। इस बात को ज़िमीदारों के असामी भली भांति समझते हैं। सरकारी धरती का असामी पोत देता है और हिन्दुस्थान के साधारण कर देनेवाले को उसका लाभ होता है क्योंकि वह सब सरकारी रुपया हो जाता है। हिन्दुस्थान की आब-हवा पोस्ते की खेती के लिये गुणदायक है। इस खेती से जो अफ़ीम निकलती है उसे बहुधा चीनवाले लेते हैं और परदेसी के हाथ माल बेचने से जो फ़ायदा होता है वह हिन्दुस्थान की आमदनी में जुड़ता है और हिन्दुस्थानियों के सिर पर कर का बोझा हलका करता है. जंगल, रेल, डाक, तार और नहर की आमदनी कर नहीं है किसी के हाथ कोई माल बेचा या उसका कोई काम कर दिया, उसके बदले का धन है, मुल्की मुहकमे जुर्माना करते, स्कूलों से फ़ीस लेते, दवा देते या बेकाम असबाब बेच

डालते हैं। देखो हिन्दुस्थान के कर देनेवाले को कैसा कुछ लाभ है सरकार के पास धरती है और सरकार और कई काम करती है जिस की बहुतसी आमदनी प्रजा के काम आती है॥

१०४–बिशेष कठिनता॥

इसी के साथ यह भी न भूलना चाहिये कि हिन्दुस्थान में कुछ बिशेष कठिनाइयां भी हैं जिनके कारण कभी कभी हिसाब बिगड़ भी जाता है। कौन जाने कब ईश्वर बरसात बिगाड़ दे। सरकार की मालगुज़ारी और किसान का जीना बरसात के आसरे रहता है। जब काल पड़ता है तो भूखों की सहायता का काम ऐसा भारी हो जाता है कि सरकार को उधार लेना पड़ता है। ऐसे संकट से बचने के लिये जो उपाय किये जाते हैं उनका ब्यौरा आगे लिखा जायगा॥

दूसरी कठिनता का कारण बट्टा है। हिन्दुस्थान में रेल बनाई जाती है और रेल का सामान यूरोप में सस्ते से सस्ता मिलता है

वहीं से मोल मंगाया जाता है। सरकारी कामों के लिये, म्यूनिसिपल कामों के लिये और कभी व्यापार के लिये भी यूरोपही से रुपया उधार लेना पड़ता है। अङ्गरेज़ी गोरे सिपाही रक्खे जाते हैं और लड़ाई का सामान यूरोप से आता है जंगी और मुल्की कामों में जो अङ्गरेज नौकर हैं उन्हें पिनसन देना पड़ती है। इन कामों का ख़र्चा सोने के सिक्के में दिया जाता है क्योंकि पच्छिम में सोने का सिक्का चलता है। हिन्दुस्थान में चांदी का सिक्का चलता है। कर का धन रुपयों में जमा होता है इस से सोने का सिक्का मोल लेना पड़ता है या बट्टा देकर चांदी के बदले ले लिया जाता है। सोने का भाव बाजार में ऐसेही घटता बढ़ता है जैसे बाजार के और सौदे का दाम घटता बढ़ता रहता है। यह तो सब जानते हैं कि चावल का भाव घटता बढ़ता है जैसी आमदनी आई वैसा भाव हो गया। ऐसेही सोने का दाम भी घटता बढ़ता रहता है।

गवर्नमेंट बजट में रुपये का दाम निश्चित कर देती है पर बाज़ार भाव इस दर से घट जाता है और तब बट्टे का घाटा होता है १८९४-९५ में बजट में रुपये का दाम १४ पेन्स लगाया गया था परसाल का औसत लगाने से रुपये का दाम १३ पेन्स से कुछ ही ज़ियादा रहा—रुपये के दाम में १ पेनी घटजाने से सरकारी ख़ज़ाने पर दो करोड़ बारह लाख का धक्का लग गया।

तीसरी बात एक और है हिन्दुस्थान की दोनों ओर लड़ाकी जाति के लोग रहते हैं जो कभी कभी सिवाने को बिगाड़ देते और सन्धि को तोड़ डालते हैं। इनके ऊपर चढ़ाई करने में रुपया लगता है, असबाब ले जाने में और लड़ाई की सामग्री जुटाने में बड़ा ख़र्चा पड़ता है। अगले दिनों में एक चौथी भी आपत्ति थी। अफ़ीम का दाम घट जाया करता था पर आजकल अफ़ीम की आमदनी ऐसी कम रह गई है कि उसके घट बढ़ से कुछ ऐसी हानि नहीं होती॥

१०५—काल में सहायता और अकाल रोकने के उपाय ॥

जो आपत्तियां ऊपर लिखी गईं उनमें अकाल सब से कठिन है। रेल फैलाने, जंगल बढ़ाने और आबपाशी की नहरैं निकालने से बहुत कुछ किया गया है जिस से दुख घटै और ख़र्चा भी घटै। पर कैसाही चतुर राजा क्यों न हो देश की आब-हवा नहीं बदल सकता। इस लिये उचित है कि कभी कभी अकाल पड़ने की सम्भावना मानी जाय और उसके रोकने का उपाय होता रहै जैसे चतुर लोग अपने घरों को आग से बचाने या अपनी देह को रोग से बचाने का यत्न करते रहते हैं। इसी लिये बजट में सरकार हर साल कुछ रुपया अकाल के लिये रख छोड़ती है जब अकाल पड़ा तो यह सारा रुपया और इस से अधिक भी सहायता में ख़र्च हो जाता है। न पड़ा तो यह रुपया इसी रीति से लगा दिया जाता है जैसे बंकों में रिजर्व (बचत) का रुपया अलग रख कर सूद पर चलाया जाता है।

उधार का रुपया घटाने या आगे किसी अवसर पर उस से बचने के लिये रख लिया जाता है। घटाने की रीति यह है जो रुपया पहिले उधार लिया गया है वह चुका दिया जाय और उस से बचाने का उपाय यह है कि यह धन ऐसे कामों में लगा दिया जाय जिस से आगे अवसर पर बचाव हो। जैसे एक ऐसी रेल की सड़क है जिस से मुसाफ़िरों के आने जाने में विशेष लाभ नहीं है पर अकाल पड़ने पर इस राह से ऐसी जगहों में अन्न पहुंच सकता है जहां कभी कभी पानी न बरसने से अकाल पड़ जाता है ऐसी सड़क बनाने में अकाल का रुपया लगाना परम चतुराई है। ऐसे कामों में रुपया लगाना कैसा अच्छा है। अकाल के लिये कर लगाकर रुपया जमा करने और जब तक काम न पड़े उसे बन्दकर रखने से सूद का नुकसान होता है। काम पड़ने से पहिले रेल बनाने से सरकार अकाल के समय उसका सामना करने के

लिये सदा तैयार रहती है और जैसे रुपया सूद पर चलाने से फ़ायदा होता वैसेही बरन उस से भी बढ़कर लाभ होता है क्योंकि महाजनी रीति से सरकार "अमानत" के रुपये के सूद से बचती है और अकाल के लिये ज़ियादा रुपया उसके हाथ में रह जाता है। साल के चिट्ठे में "अकाल का रुपया" भी ख़र्च की एक "मद" है॥

१०६—टिकस का भार॥

हम ऊपर लिख चुके कि सरकारी धरती की मालगुज़ारी पोत समझी जाय तो हिन्दुस्थान की जमा का ६६½ करोड़ रुपया जिसको टिकस कहते हैं उस रीति से नहीं मिलता। १८९४–९५ के हिसाब में ९५ करोड़ के बाक़ी का ब्यौरा बिचार करके देखना चाहिये॥

नमक की आमदनी		८·७	करोड़	रुपया
इस्टाम	,,	४·६	,,	,,
आबकारी	,,	५·५	,,	,,

अबवाब	,,	३.६	,,	,,
चुंगी (कस्टम)	,,	३.९	,,	,,
टिकस	,,	१.८	,,	,,
रजिस्ट्री	,,	.४	,,	,,
		२८.५	,,	,,

ऊपर लिखे हुए टिक्कसों का कुछ हिस्सा रजवाड़ों की प्रजा भी देती है जैसे कस्टम पर १८९१ में अङ्गरेजी हिन्दुस्थान की जो आबादी थी उसमें १ सैकड़ा साल बढ़ी आबादी मिलाने और टिकस का परता लगाने से हर एक आदमी पीछे १ रु० ३ आ० १० पाई कर पड़ता है। मालगुजारी जोड़कर टिकस का परता फैलाने से आदमी पीछे २ रु ५ आ० ७ पा० कर पड़ता है। यूरुप के देशों में यह कर बहुत ही हलका समझा जायगा पर पूर्व और पश्चिम के प्रजा समाज में इतना बड़ा अन्तर है कि दोनों की तुलना करने से कोई लाभ नहीं ॥

१०७—खर्चा ॥

हिन्दुस्थान की जमा का ख़र्चा विचारने की दो रीतियां हैं एक तो यह है कि जैसे मोटी मोटी बातें ९५ करोड़ आमदनी की जांची गई थी वैसेही खर्चा भी देख लिया जाय। दूसरी रीति यह है कि मुख्य खर्चा ही देखा जाय। दोनों का अन्तर एक छोटे से उदाहरण से समझ में आ जायगा। डाकखाने और तार से २.६ करोड़ रुपया खजाने में आया पर उसी साल २.४ करोड़ इन पर ख़र्चा भी बैठ गया। पूरी आमदनी और पूरा खर्चा तो यह हुआ पर सरकार के २० लाख रुपये बच रहे। ख़र्च के चार महकमें (डाक, तार, रेल, और नहर) ऐसे हैं जिन में सरकार को खर्च के बदले जिनकी सेवा की जाती है उन से बहुत कुछ मिल रहता है। खर्च के नकशे में यह "व्यापारिक काम,, कहलाते हैं। पहले यह देख लेना चाहिये कि १८९४—९५ में जो ९५ करोड़ रुपया आया वह क्या हुआ। इसमें से

७१.५ करोड़ सरकारी तामीरात, देश की रक्षा के काम और "साक" में खर्च हुआ। देश रक्षा के काम यह हैं जल और थल सेना का खर्चा और पुलिस का खर्चा। यह सब मिल कर २९ करोड़ हुआ। तामीरात सरकारी (रेल, नहर, सड़क और मकान) में ३.½ करोड़ लग गया। सरकारी करजे का ५ करोड़ सूद दिया गया। डाक, तार और टकसाल में ८½ करोड़ लग गया। अस्पताल के महकमें और विज्ञान के महकमें जो प्रजा के तन्दुरुस्ती के लिये जारी हैं १.५ करोड़ और इतनाही तालीम (शिक्षा) में भी लग गया। "वापसी" और "मालिकाना" आदि में १.७ करोड़ खर्च हो गया और १६ करोड़ रुपया बचा जिस में से आधा मालगुज़ारी, अफीम, आबकारी नमक और कस्टम की तहसील में लग गया। बाकी ८ करोड़ में आधा कचहरी अदालत में २ करोड़ राज्यप्रबन्ध और राजनीतिक कामों में और बाकी कागज़, कलम, छापा और और मुत-

फरिंक में खर्च हो गया। खर्चा देखतेही विदित हो जायगा कि देशरक्षा, तामीरात, कचहरी, अदालत और तहसील वसूल के खर्च में आमदनी का बहुतसा रुपया खर्च हो जाता है। बहुतेरे यह समझते हैं कि खर्चा का ब्यौरा समझने के लिये मालिकाना और वापसी का रुपया महकमों की आमदनी और अफ़ीम की तक़ावी का रुपया निकाल डालना चाहिये। इस रीति से हिसाब करने पर १८९४–१८९५ की जमा ६०.६ करोड़ रुपया थी और खर्च ६० करोड़ हुआ जिसका ब्यौरा यह है॥

करजा	४. २ करोड़
सेना का खर्चा	२४. २
मालगुज़ारी तहसील	६. ३
व्यपारिक काम	२. ८
मुलकी महकमें	१३. २
तामीरात अकाल का उपाय आदि	९. १
कुल	५९. ९ करोड़

१०८—बिलायत का खर्चा ॥

ऊपर जो दो तरह के ब्योरे लिखे गये उन में यह खर्चा भी मिला हुआ जो हिन्दुस्थान के लिये इङ्गलिस्तान में होता है। इनको "होम चार्जेज" कहते हैं और इनको यहां लोग ठीक २ समझकर बुरा न कहते होते तो ब्यौरा लिखने की कोइ आवश्यकता न थी। हिन्दुस्थान में निरे देशबासियों का कोई ऐसा कारखाना नहीं, कोई ऐसी कोठी नहीं जिस में सदर कोठी के नाम कुछ न पड़ता हो। हिन्दुस्थान के रज-वाड़े अफगानिस्तान के अमीर और यूरोप के सारे देश लड़ाई का सामान कलें और और चीजें इङ्गलिस्तानही में मोल लेने में अपना लाभ समझते हैं और इङ्गलिस्तान के सिक्के में बाजार भाव से उसका दाम देते हैं। इङ्गलिस्तान के सारे आश्रित देशों के यूरुप के बहुत से देशों के और हिन्दुसथान की बहुतसी रेलवे कम्पनियों के और खान खोदने की कम्पनियों के गुमास्ते लण्डन में रहते हैं।

ओर उनका काम काज करते हैं। ये लोग अङ्गरेजी कारीगर नौकर रखते हैं और बहुतों को भाग्य से बिलायत में रुपया उधार मिलता है जिस से वह अपना काम चलाते हैं और जिसका वह सूद देते हैं। अङ्गरेजी सरकार के "होम चार्जिज़" में सब तरह के असबाब रेल और लड़ाई के सामान, तामीरात के लिये कलों के दाम, छुट्टी और पेनशन का खर्चा और उस रुपये का सूद है जो लण्डन में हिन्दुस्थान के लिये उधार लिया जाता है। "होम चार्जिज़" को हिन्दुस्थान पर बोझ या इसे "चूसनी" कहना उतनाही ठीक है जितना अङ्गरेजी चाकू और अङ्गरेजी किताब मोल लेकर हिन्दुस्थानी निज के खर्चे को "चूसनी" कहें। अङ्गरेज़ लोग चीन की चाह छोड़कर हिन्दुस्थान की चाह इस कारण लेते हैं कि यह चाह अच्छी और सस्ती है। ऐसेही हिन्दुस्थान की सरकार और हिन्दुस्थान की समझदार प्रजा इङ्गलिस्तान में हिन्दुस्थान के काम की चीज़ें मोल लेती है॥

१०९—हिन्दुस्थान का "स्टाक" ॥

किसी देश की अवनति या उन्नति का एक पक्का लक्षण है। दिवालियों को कितनेही सूद पर कोई समझदार उधार न देगा चाहै वह आदमी कङ्गाल हो या राजा हो। जिसका दिवाला निकलने चाहता है उसे भी रुपया देने में बड़े भारी सूद की दर लगाई जायगी। पर हिन्दुस्थान की अङ्गरेज़ी सरकार को संसार के धनी करोड़ों रुपया देने को तैयार हैं और यूरोप में बहुत से राजाओं को जिस दर पर रुपया नहीं मिलता उस दर पर इसको मिल सकता है। यह सब जानते हैं कि रुपये का दाम घटने, काल पड़ने, और सिवाने में लड़ाई होने से हिन्दुस्थान का ख़ज़ाना कैसे सङ्कट में पड़ जाता है। पर वह लोग यह भी जानते हैं कि हिन्दुस्थान की गवर्नमेण्ट का हिसाब सच्चा है और यह भी जानते हैं कि हर साल लाखों रुपया "तामीरात" में लगाया जाता है जिस से देश का धन बढ़ता है और उनके उधार का पटना

निश्चित हो जाता है। ख़जाने का हिसाब जांचने के लिये जो बरस हमने चुना था उस में उधार का १ करोड़ रुपया पटा दिया गया था और ९२ करोड़ का सूद ४ रु० सैकड़े से ३½ रु० कर दिया गया, हिन्दुस्थान के ख़जाने के "स्टाक" का इस से बढ़कर क्या प्रमाण हो सकता है। पर और कुछ देखा चाहो तो देश को देखो और उन्नति के उन प्रत्यक्ष लक्षणों का बिचार करो जिसका बयान आगे किया जाता है॥

बारहवां अध्याय ।

शिक्षा की शक्तियां ॥

११०—लाभ के बिचार में अपनी अपनी रुचि ॥

तीन चार बरस हुये जब ठाणे के पास ग्रेटइण्डियन प्यनिंशुलर रेलवे की सड़क बाढ़ से टूट गई थी । सरली वार्नर साहेब पूना से बम्बई को जाते थे । उसी गाड़ी में तीन भले मानस और भी बैठे थे इन में से एक ब्राह्मण सरकारी नौकर था दूसरा पारसी वकील और तीसरा बम्बई का एक प्रसिद्ध मुसलमान ब्यापारी था । उस समय अङ्गरेजी सरकार के प्रबन्धों पर बात छिड़ गई और यह प्रश्न उठा कि बिशेष प्रबन्धों से क्या लाभ है और उन में सब से बढ़कर लाभकारी कौन सा है ? ब्राह्मण सज्जन ने कहा कि "शिक्षा और बिशेष करके ऊंची शिक्षा का प्रबन्ध सब से बढ़कर है और सरकार ने जितने काम किये हैं सब से ज्यादा

इसी से देश को लाभ पहुंचा है” वकील का मत यह था कि “अङ्गरेजी अदालत और इनसाफ़ से देश का जो हित हुआ है वह पाठशालाओं और बिद्यालयों से नहीं हुआ” ब्राह्मण ने इस बात पर जोर दिया कि जब सरकार ग़दर के पीछे देश में शांति स्थापन कर रही थी उसी समय पहिला विश्वविद्यालय स्थापन करने का उसको अवकास मिला। पारसी साहब यह कहते थे कि देखो बड़े से बड़े अङ्गरेजी हाकिम कानून का कितना आदर करते हैं। हिन्दुस्थानी लोगों के आगे सब से अनोखी बात और अङ्गरेजी इन्साफ़ की महिमा जनाने का सब से बड़ा उदाहरण यही है कि गवर्नर जनरल और गवर्नर भी हाकिमों के फैसले को टाल नहीं सकते चाहे यह फैसले गवर्नमेण्ट की नीति के बिरुद्धही क्यों न हों और बिना गवर्नमेण्ट की सहायता फैसले व्यर्थही पड़े रहैं। जब हम लोग यह बातें कर रहे थे एक इञ्जन भागता हुआ देख पड़ा। इसके

साथ खुली गाड़ियों में मज़दूर, हथियार, एक बड़ी बालाकुप्पी रेल, और सिलीपट थे और एक अङ्गरेज इञ्जिनियर भी साथ था। देखतेही मुसलमान रईस उछल पड़ा और गाड़ी को दिखाकर बोला "यह देखिये अङ्गरेजी सरकार ने हिन्दुस्थान के साथ बड़ा उपकार यह किया है" देखिये बन्दोबस्त करने और सामान जुटाने की शक्ति इनकी सी किसी में नहीं है। आजही सबेरे सड़क टूटी और दोही चार घंटे पीछे एक ऐसे अङ्गरेजी अफ़सर के साथ मज़दूरों की एक पल्टन चली जा रही है जो अपना काम जानता है और कुलियों को अपना काम सिखा सकता है। हिन्दुस्थान की "सरकारी तामीरात" इस बात को अच्छी तरह सिखा रही है॥

१११—शिक्षा देने के उपाय॥

सरकारी हिन्दुस्थान में ४५ लाखसे कुछ कम लड़की लड़के स्कूलों में पढ़ते हैं। मदरसे में आने के जोग १०० लड़कों में ८७ आतेही नहीं।

पर इस से यह न समझना चाहिये कि जिसने स्कूल में नहीं पढ़ा उसने कुछ सीखाही नहीं। जब सरकार अपना धर्म निबाहै तो समझदार प्रजा सारे प्रबन्ध से कुछ न कुछ सीख सकती है। सरकार यह चाहै कि प्रजा को पड़ोसियों के साथ और हाकिमों के साथ सहानुभूति सिखावै तो उसे इस बात का भी प्रमाण देना चाहिये कि आप भी प्रजा के साथ सहानुभूति कर रही है। सरकार की हर एक प्रजा को यह प्रश्न करना चाहिये "क्या सरकार हमारे साथ अपना धर्म निबाह रही है?" इस किताब के भागों में इस प्रश्न के उत्तर देने का यत्न किया गया है "क्या सरकार अङ्गरेज़ी ने प्रजा के जान माल की रक्षा का प्रबन्ध किया है?" हम देख चुके कि सरकार जलसेना और थल सेना और पुलिस रखने में क्या ख़र्च करती है। किताब बहुत बढ़ जायगी नहीं तो हम बताते कि आग बुझाने की पलटने कैसे बनाई गई हैं घनी आबादी में भीड़ रोकने, गोहना से

हानि का प्रतीकार करने, झील की बाढ़ (जो पहाड़ को तोड़कर गंगा में कट पड़ी और किसी को हानि न पहुंची क्योंकि उसके टूटने से पहिलेही प्रबन्ध हो चुका था और तार दिये जा चुके थे) के यत्न लिखे जाते। (२) "क्या सरकार प्रजा की तन्दुरुस्ती के लिये कोई उपाय कर रही है। देश भर में फैले हुये अस्पताल और दवाखाने, सफ़ाई का महक़मा, टीका लगाने का बन्दोबस्त, लेडी डफ़रिन के अस्पताल, इस प्रश्न का उत्तर दे रहे हैं इन्हीं को देखकर स्त्री पुरुष सब जान सकते हैं कि सरकार इस बिषय में क्या कर रही है। (३) क्या सरकार लोगों को भूखों मरने देती है?" उन लाखों आदमियों से पूछो जो अभी थोड़े दिन हुए "कहतसाली के कामों" पर से घर गये हैं। पुतलीघरों के कुलिसियों को देखो जो अङ्गरेज़ों के रुपये से चलाये जाते हैं, चाह के बगीचों के मज़दूरों मिर्च के देश आदि को जो कुली भेजे जाते हैं उनको देखो और समझो

कि जो लोग काम कर सकते हैं उनके लिये सरकार भले और बुरे दिनों में काम देने को क्या उपाय कर रही है। "क्या सरकार कोई ऐसा भी काम कर रही है जिस से प्रजा किफ़ायत से रहना सीखे और खेती बारी के कामों के लिये उधार पा सके?" यह प्रश्न कठिन है। पर इसके उत्तर पाने की रीति बताई जा सकती है। डाकख़ाने में एक "सेविङ्गज़ बैंक होता है जिसमें लोग रुपया जमा कर सकते हैं और उनको सूद मिलता है उस बंक में ७ लाख आदमी ११ करोड़ रुपया जमा किये हुए हैं। यह बड़ी जमा नहीं है। पर एशिया में कोई और भी देश है जिस में एक आदमी ने भी ऐसे बैंकों में कुछ जमा किया हो? हिन्दुस्थान के किसान सरकार से तक़ावी लेने की रीति और उसके लाभ को भली भांति समझते हैं और दक्खिन और और सूबों में प्रजा के उधार से बचने और भारी सूद देने की आपत्तियों को दूर करने का यत्न हो रहा है।

ज़ाब्ता दीवानी का जब जब संशोधन हुआ है तब तब लोगों ने देखाही होगा कि सरकार रुपया बचाने की रीति सिखाने और लोगों को दिवालिया होने से बचाने के लिये कैसे कैसे बिचार करती है। पाठक चाहैं तो अपने मन से ऐसेही और प्रश्न पूछ सकते हैं। पर इस छोटी किताब के बढ़जाने के डर से हम यहीं इस बिषय को समाप्त करते हैं। यहां इतनाही लिखना बहुत है कि सरकार जो काम करती है और जिस काम में भूल करती है। उन में से एक एक प्रजा के लिये शिक्षा की एक शक्ति है॥

इस भाग में हम केवल नीचे लिखी बातों पर बिचार करेंगे: अदालत, "तामीरात," डाक, और तार छापेखाने और मदरसे। पाठकों को याद होगा म्युनिसिपलटियों और लोकल बोर्डों आदि के द्वारा (Self Government) स्यल्फ गवर्नमेंट "आत्मशासन" सिखाया जाता है जो सब मिलाकर ९ करोड़ रुपये के जमाख़र्च

का बन्दोबस्त करते हैं। इस से अब जो पांच बातें ऊपर लिखी गई हैं उन्हीं के द्वारा जितनी शिक्षा मिलती है उसी का ब्यौरा लिखा जायगा॥

११२—अदालत॥

हिन्दुस्थान में अंगरेज़ों के आने से पहिले ऐसा कोई कानून न था जो हिन्दू मुसलमान और फ़िरंगी तीनों पर बराबर चल सकै। हिन्दुस्थान का पिनलकोड (दंडसंग्रह) कितनी बातें सिखा रहा है। बहुत से लोग नहीं जानते कि इसमें क्या क्या सज़ायें हैं पर देश का ऐसा कोई रहनेवाला नहीं है जो यह न जानता हो कि ऐसी कचहरी ज़रूर है जहां हानि पहुंचने पर न्याय की प्रार्थना की जा सकती है। यह भी सब जानते हैं कि बड़ा से बड़ा हाकिम पिनल-कोड के अधिकार के बाहर नहीं है और पक्ष-पात रहित मजिस्ट्रेटों और जजों के बीच में "अपील" और "निगरानी" की भी रीति जारी है जिनके कामों में इकजिक्युटिव छेड़

छाड़ नहीं कर सकती। १८९५ ई० में २२९४४३१ आदमी फ़ौजदारी अदालतों के सामने आये और १७३२३६० की रूबकारी हुई। निरे फ़रीक मुकदमा और उनके भाई बन्दही नहीं बरन लाखों गवाह और असीसर लोग सब इस बात को आप देख सकते हैं कि कैसे धीरज से और कैसा पक्षपात छोड़कर काम किया जाता है। मजिस्ट्रेट लोग कभी कभी झूठी गवाही से धोखा खा जाते या भूल कर जाते हैं तो भी जो लोग यह जानते हैं कि हिन्दुस्थान के सिवाने पर अब भी जुर्मों की "तहकीकात" जातिही की पंचायतों में हो जाती है उन्हें सरकारी हिन्दुस्थान में अदालत का गौरव प्रगट रहेगा॥

११३—तामीरात॥

सरकार अङ्गरेज़ी ने जो "तामीरात" रेल पुल, पक्की सड़क, नहर आदि बनवाई हैं उन से राजप्रबन्ध की रीति समझ में आ सकती है और लोग यह जान सकते हैं कि हिन्दु-

स्थान को इंगलिस्तान के अधिकार में आने से क्या क्या फ़ायदे हुए हैं। यूरोप के किसी कारीगर ने ऐसा मकान नहीं बनाया जो दिल्ली की कुतुबमीनार या आगरे के रौज़े से सुन्दरताई में बढ़कर हो। बीजापुर के खंडहल, अजेय और एलौरा की गुफा के मन्दिर, आगरा और दिल्ली के महल देखने के लिये इङ्गलिस्तान से लोग आते हैं और उन्हें देखकर अचरज करते हैं। पर रेल, जहाज़ बनाने के कारख़ाने, नहर और पुल से जो लाभ हैं उसमें किस को सन्देह है सब जानते हैं कि जो पत्थर और संगमर्मर की बड़ी इमारतें यहां के अगले हाकिमों ने बनवाकर हम लोगों के लिये छोड़ी हैं उनसे कोई लाभ देश को नहीं है। जो इमारतें अङ्गरेज़ी सरकार ने प्रजा से रुपया लेकर बनवाई हैं उनसे प्रजा का धन बढ़ता जाता है। उन से आने जाने लाने ढोने का खर्चा घटता है और लोगों को नमक कपड़ा और माल असबाब सस्ते दामों में मिल सकता है।

उन्हीं से किसान लोग अपनी कपास और अपने खेतों की और उपज अच्छी हाटों में भेज सकते हैं जहां अच्छे दाम खड़े हों और उन से कई प्रकार के जीवन को सुख बढ़ता है। उन तामीरात की लागत और उनके बनाने में सरकार ने क्या बिचार रक्खा है इसके देखने से एक बात सीखी जा सकती है। बम्बई शहर के हाईकोर्ट और विश्वविद्यालय के मकान न्याय और बिद्या के दो मन्दिर जो ऐसे सुन्दर बनाये गये हैं इस में भी एक अभिप्राय है इनको देखकर हज़ारों कारीगर और इंजिनियर मकान बनाना और संवारना सीखते हैं। और बनानेवालों ने जो कारीगरी सीखी है वह देश के रहनेवालों के मकान बनाने में काम आ सकती है॥

इस बिषय के बिचार में "रेल" सब से उत्तम है। लोग कभी कभी कह बैठते हैं कि भिन्न भिन्न मत और जाति के लोग जिस राजा के अधिकार में हों वह उनके रसम और बिचार

को नहीं बदल सकता पर रेल धीरे धीरे यही काम कर रही है। १८९६ के अन्त में २०११० मील रेल की सड़क जारी थी और ४२८२ मील सड़क बन रही थी या बनाने को मंजूर हो चुकी थी। जारी रेलों में २४८.६ करोड़ रुपया
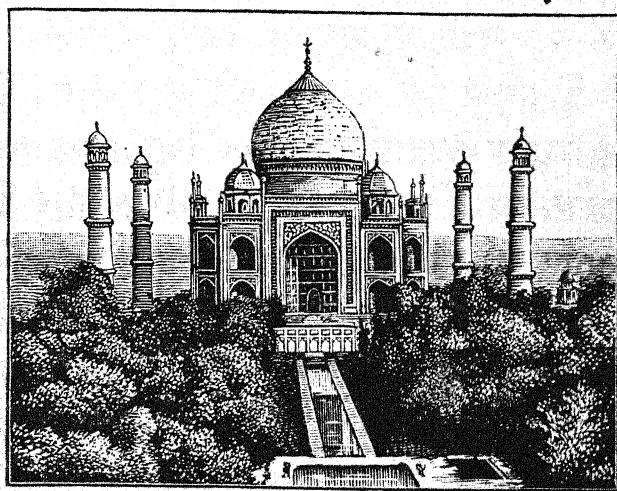
आगरे का ताज़महल ॥

ख़र्च हो चुका था। इस ख़र्च में से हिन्दुस्थान की प्रजा बहुत कुछ पा जाती है बहुतसी रेलें सरकार अङ्गरेज़ी की हैं या रजवाड़ों की हैं और बाकी रेलें कम्पनियों की हैं

जिनसे यह शर्त है कि एक बंधी दर से घट कर सूद न दें या कुछ रुपया सरकार को दिया करैं। जिस किसी ने रेल का सफ़र किया है उसने देखाही होगा कि कैसी कारीगरी से रेल चलाई जाती है और रेल लड़जाने की आपत्ति बचाने के लिये कैसे कैसे उपाय किये जाते हैं और कैसे ठीक वक्त पर रेल आप चलती और मुसाफ़िरों को ठीक समय पर काम करना सिखाती है। इसमें सन्देह नहीं कि प्रजा की शिक्षा के बिषय में रेल को एक बड़ी शक्ति समझना भ्रम नहीं है॥

"आबपाशी" नहरों और ताल का भी अलग ब्यौरा लिखना उचित है। अंगरेज़ी राज्य से पहिलेही यहांवाले ताल और कुओं के गुनों को जानते थे पर जितनी नहरें पचास बरस के भीतर इस देश में बनाई गई हैं उनके लिये देश में बड़ी भारी शान्ति की आवश्यकता थी और विज्ञान और चतुराई का काम था जो हिन्दुस्थान के भाग्य कभी रहे

ही नहीं। इसका उदाहरण " अपर गंगा नहर " है जो हरद्वार से निकली है। इसके बनाने में ३ करोड़ रुपया लगा है और इस में ४४० मील बड़ी नहर और २६१४ मील बम्बे और रजबहे हैं और इन से ७५९८९७ एकड़ धरती को पानी पहुंचता है । सरहिन्द नहर में ३.८ करोड़ रुपये लगे हैं इसमें ५४२ मील सदर नहर और ४६५५ मील बम्बे और रजबहे हैं । इस समय ४०००० मील नहर जारी है और १ करोड़ एकड़ से अधिक धरती की इससेही सिंचाई होती है। इन नहरों में ३७ करोड़ रुपया लगा है और सरकार को १.५ करोड़ रुपया सालाना की आमदनी इन से होती है। नहरों का गुण इतनाही नहीं है कि इनसे रुपये का लाभ है बरन इनसे किसानों को कितना फ़ायदा होता है बिशेषकर जिस साल पानी नहीं बरसता॥

"सड़क और सरकारी मकान" भी हिन्दुस्थान की तामीरात के भाग हैं। एक एक बच्चे ने सरकारी मकान और सड़कें देखी होंगी जिन्हें

सरकार ने बनवाया है और जिन की सरकार मरम्मत करती है। स्कूल, अस्पताल, कचहरी, जेलखाने, दफ़्तर, अजायबखाने, कचहरियां चारोंओर बनी हैं और बनती जाती हैं और नक़्शों के देखने से यह देख सकते हो कि गावों और शहरों के बीच में कैसी कैसी पक्की सड़कें बन रही हैं जो बरसात में भी चलने जोग बनी रहती हैं। इस काम में सरकार हर साल ४·५ करोड़ खर्च करती है और इस से छोटीसी छोटी प्रजा को फायदा होता है। अङ्गरेज़ी सरकार दिल्ली और बीजापुर सँवारने में बड़े बड़े मकान नहीं बनवाती तो भी ऐसी ऐसी वस्तु बना रही है जो साधारण प्रजा के काम की हैं और जिन से उनको सुख मिलता है॥

११४—डाक और तार॥

हिन्दुस्थान इतना बड़ा देश है कि डाक का पूरा पूरा प्रबन्ध करने में कई बरस लग

जायंगे। पर जितना कुछ हो चुका है उसी से हिन्दू समाज के बूढ़े लोगों को अचम्भा हो सकता है कि अङ्गरेज़ी सरकार ने देश में शान्ति रखकर कितना बड़ा काम किया है। हिन्दुस्थान के इतिहास में कभी यह भी लिखा है कि कभी एक छोटा किसान या दूकानदार इतनी जल्दी आध आने में एक चिट्ठी लाहौर से कलकत्ते भेज सकता था? अङ्गरेज़ी सरकार १२२२८२ मील तक डाक ले जाती है और ३०४५१ डाकख़ाने और लेटरबकस खोले हुए है। देश के मनीआर्डरों में २१ करोड़ रुपया बेडर बिना झगड़े बखेड़े के जाता है। वैलूपैयबिल पारसल (कीमत तलब पार्सल) में १८७:००० पारसल जाते हैं और २ करोड़ से अधिक रुपया वसूल करके भेजनेवालों के पास पहुंचाया जाता है। तार के द्वारा भी चटपट १½ करोड़ रुपया भेजा ज़ाता है। डाकखानेही में ग़रीबों के हाथ कुनैन बेंची जाती है और कालीपलटन के पिनसिनदारों को पिनसन

बांटी जाती है । डाकख़ाने के साथ ही साथ ४६३७५ मील तार भी है। तार के ४०४६ दफ़्तर हैं जिन से साल में १० लाख ख़बरें भेजी जाती हैं॥

सूबे सूबे और प्रजा प्रजा के बीच में हिन्दुस्थान और बाहिरी देशों के बीच में परस्पर पत्र व्यवहार बातचीत करने के इस बड़े यत्न जाल को देखकर ऐसा भी कोई है जो

इसे शिक्षा देने की बिधि मानने में किसी तरह का सन्देह करे? डाक और तार के द्वारा करोड़ों ख़बरें चिट्ठी और पाकटों से क्या जाने क्या झूठ सच लोगों में भी फैलाई जा रही है। विजली की छटा की नाईं झूठी रायें इधर से उधर फैलाई जाती हैं और पहिली बातें जो हर जाति और हर आदमी को सिखाई जाती हैं वह यह है कि बिना सोचे बिचारे सुनी या पढ़ी बात का बिश्वास न करना चाहिये। मनुष्य को समझ और बुद्धि दी गई है उनसे काम लिया जाता है और गांव के लोग जो सैकड़ों बरस से ताल के पानी की नाईं थिर रहे हैं अब डाकिये के आने जाने से कुछ चौंक से पड़ते हैं जिसने डाक के हरकारे के घुंघुरुओं की झुंझुनाहट सुनी है और उसे कनारा के सुनसान जङ्गलों में पशुओं को विचित्र ध्वनि से चौंकाते देखा है उसने जानाही होगा कि डाकिया भी इस देश में एक बड़ा शक्तिमान अधिकारी है॥

११५—समाचार पत्र और साहित्य ॥

इनको हम अभी शक्तियां नहीं कह सकते पर किसी न किसी दिन ये भी होही जायंगी। यह बात सच है कि हिन्दुस्थान में २०४ अख़बार और सामयिक पत्र जारी हैं। पर जो काम इङ्गलिस्तान के लिये चासर ने किया है उस काम का करनेवाला कवि अभी इस देश में पैदा नहीं हुआ। जिन देशों में बरसों से स्वतंत्र अख़बार जारी रहे हैं वहां पाठकगण झूठी ख़बरों या व्यर्थ दलीलों को देख नहीं सकते। समझदार लोग जो पढ़ भी सकते और समझ भी सकते हैं ऐसे अख़बारों का रहना जिनका सम्पादन अच्छी रीति से होता हो परम आवश्यक मानते हैं और सभ्य देशों में अख़बारों के सम्पादकों को ऐसी तनख़्वाहें मिलती हैं जो बड़े बड़े सरकारी नौकर नहीं पाते। जब हिन्दुस्थान की ऐसी दशा हो जायगी कि अख़बार लिखने के लिये कालिजों और स्कूलों के चुने हुए लोग मिल सकें; जब साधा-

रणा लोग देशी अख़बार चाव से समझकर पढ़ेंगे उस समय अख़बारों में शिक्षा देने की शक्ति को सब अनुभव कर सकेंगे ॥

आज कल बहुधा दोनों बातों की कमी है पर हम यही आशा कर सकते हैं कि समय और सरिश्तेतालीम का महकमा कुछ दिन में यह घटी पूरी कर देगा ॥

११६—सरिश्ते तालीम ॥

जिस सरकार ने प्रजा का उद्यम बढ़ाने और नये नये काम सिखाने के उपाय किये हैं वह स्कूल और कालिजों को कैसे घटकर समझ सकती है । हिन्दुस्थान के टिकस और माल-गुज़ारी देनेवाले इतना रुपया दे सकैं कि जहां अब एक इब्तिदाई मदरसा है वहां बीस खुल जांय तो सब को खुशी होगी ॥

पर आज कल सरकार तीनही बातों पर ध्यान दे सकती है और दे रही है । बड़े बड़े उद्यमों और सरकारी नौकरियों के योग्य पढ़े

लिखे लड़के तैयार करने के लिये थोड़े से कालिज खोल रक्खे हैं। इन कालिजों के जारी करने में सरकार का मुख्य अभिप्राय यह है कि ऐसेही और भी कालिज खोले जाय॥

दूसरा काम यह है कि जो लोग स्कूल या कालिज खोलकर प्रजा को शिक्षा देना चाहते हैं उन्हें ग्रैण्ट (मदद) दी जाती है॥

तीसरी बात यह है कि अबवाब और टिकसों से भी कुछ रुपया देकर म्युनिसिपलटियों और लोकल बोर्डों से इब्तिदाई तालीम का बन्दोबस्त कराया जाता है। सरिश्तेतालीम की आलोचना करने में यही तीन बातें देखनी चाहिये॥

११७—तालीम के नमूने॥

पाठक जानतेही होंगे कि हिन्दुस्थान में शिक्षा के प्रबन्ध में इब्तिदाई मदरसे हैं जिन में देश भाषा पढ़ाई जाती हैं। सिकंडरी स्कूल हैं जिनमें अङ्गरेज़ी पढ़ाई जाती है औरयूनीवर्सिटी के (विश्वविद्यालय) प्रमाणित कालिज

हैं जिनमें पास होने पर डिगरी मिलती है। स्कूल ग्रौर कालिजों में या तो कोई बिशेष हुनर सिखाया जाता है या वह शिक्षा दी जाती है जिसे यूनीवर्सिटी का ग्रार्टकोर्स (गुण शिक्षा) कहते हैं। शिक्षा में कई प्रकार करने की ग्रावश्यकता है केवल इस बिचारही से नहीं कि लोगों की रुचि ग्रौर उनकी बुद्धि में भेद होता है बरन यह भी बिचार है कि समाज की ग्रावश्यकता कई तरह की है ग्रौर शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जिस से लड़के देश के सब कामों के योग्य निकलें। इसी बिचार से सरकार ने डाकूरी ग्रौर इञ्जिनियरी के कालिज, सलोत्री ग्रौर खेती बिद्या के कालिज, हुनर ग्रौर कारीगरी के मदरसे भी खोल रक्खे हैं। शिक्षा में जब कभी नई बात लाने का बिचार होता है तो सरकार पहिले उसे करके दिखा देती है। बिशेष करके स्त्री शिक्षा ग्रौर विज्ञान शिक्षा में इसकी ग्रावश्यकता थी। क्योंकि इसके बिना यह काम कोई करताही नहीं॥

११८—देशबासियों का उद्योग ॥

पर सरकार का मुख्य अभिप्राय शिक्षा देने में भी वही है जो उद्यम सिखाने और कहतसाली के काम जारी करने में है और वह यह है कि जितने आदमी और जितनी समाजें ऐसे काम में जिसमें सैकड़ों साथियों की सहायता का काम है ऐसे प्रयत्न में लग सकैं उतनेही इसमें हाथ लगाने को बुला लिये जांय। लोकल बोर्डों का उचित धर्म यह कर दिया गया है कि जिन से वह अबवाब ले उनके लड़कों को इब्तिदाई तालीम देने का भार अपने ऊपर लें। जो समाजें कि प्रजा का हित चाहती हैं और जो लोग पढ़ाने का काम करना चाहते हैं वह स्वागत किये जाते हैं और उच्च शिक्षा देने के लिये उनको ग्रेण्ट (मदद) दी जाती है इस उपाय से बहुत से सहायक हो जाते हैं। पर ये लोग ऐसे होते हैं जो तन मन से इस काम को करते हैं और ऐसा काम दिखाते हैं जो सरकार किसी रीति से

करही नहीं सकती। जब शिक्षा हिन्दुस्थान में पहिले जारी की गई तो राह बताने और प्रजा को विद्या के गुण सिखाने दोनों का भार सरकार ने अपने ऊपर लिया था। पर काल बीतने से अब देखा जाता है कि जो रुपया शिक्षा के लिये रक्खा गया है वह इमदादी मदरसों और कालिजों को देने से विशेष लाभ-कारी होता है। प्रजा के लिये मदरसे खोलना बहुत अच्छी बात है पर उनका इस बात में उत्साह बढ़ाना कि वे आप देश भर में स्कूल और कालिज खोलें इस से बढ़कर है। नमूने की रीति से कुछ मदरसे खोलकर और शिक्षा फैलाने के काम में जो लोग सहायक होना चाहते हैं उनको उत्साह दान करने से पिछले ५० बरस में शिक्षा में बड़ी उन्नति हुई है॥

११९—इब्तिदाई तालीम॥

इब्तिदाई तालीम के फैलानेवाले लोगों को कोई ऐसा लालच नहीं है जैसा अङ्गरेज़ी

स्कूलों और कालिजों में पढ़ाने में होता है। जिस आदमी को डिगरी मिली या किसी हुनर और कारीगरी के मदरसे का सार्टीफिकट मिला उसके पास एक ऐसी चीज़ आ गई जो आगे उसे रोटी कमाने का सहारा होगी। इस काम के लिये सब रुपया खर्च करने के लिये तैयार हैं और ऐसे मदरसे और कालिज खोलने में जहां अच्छी खासी फ़ीस की आमदनी है लोगों का स्वार्थ सिद्ध होता है। पर जो लोग इब्तिदाई तालीम के आगे नहीं चढ़ते वह बहुधा गरीब होते हैं और पढ़ने की क़दर नहीं जानते। उनको पढ़ना लिखना सिखाना हो तो सरकार को बन्दोबस्त करना चाहिये और सरकारी रुपया अबवाब का हो या टिकस का बहुत दिनों तक इब्तिदाई तालीम में बहुतसा लगना चाहिये। पश्चिम के देशों में लोग यह समझते हैं कि राजा का धर्म है कि प्रजा को इब्तिदाई तालीम सेंत में जहां तक सस्ता पड़ सके दे।

हिन्दुस्थान में टिकस देनेवाले इस बात को जानने के लिये अभी तैयार नहीं है पर इसे भी भूलना न चाहिये क्योंकि कोई समझदार प्रजा न पड़ोसी के साथ न राजा के साथ अपना धर्म निबाह सकती है जब तक कि उसे पढ़ना लिखना और हिसाब करना न आता हो ॥

१२०—संख्या ।।

जितने लड़कों की उमर स्कूलों में जाने की है उनमें कुल सैकड़ा पीछे बारह मदरसों में आते हैं । सब स्कूल और कालिज मिलाकर चालीस लाख लड़के पढ़ते हैं पर लड़कियां चारही लाख हैं । इस संख्या में से ३,४०००० लड़के इब्तिदाई मदरसों में हैं और ५३४००० सेकंडरी मदरसों में पढ़ते हैं । यह संख्या सन्तोषदायक नहीं है पर इसमें टिकस, अबवाब, फीस आदि सब मिलाकर ३·६ करोड़ रुपया खर्च होता है हम इतनाही कह सकते हैं कि हिन्दुस्थान अभी

इस से अधिक ख़र्च करने के योग्य नहीं है। पर विशेष उद्योग और अधिक रुपया ख़र्च करने की आवश्यकता सब लोग मानेंगे ॥

१२१—उपसंहार ॥

तौ भी शिक्षा हिन्दुस्थान के लाखों रहने-वालों में भी फैलाई जा रही है जो कभी मदरसे के भीतर नहीं आये और न आना चाहते हैं। बहुतसी शक्तियां जो ऊपर लिखी गईं उनका असर धीरे धीरे और चुपचाप हो रहा है और स्कूलों की तरह हम इसकी संख्या बता नहीं सकते। पर जब तक लोगों के देखने और समझने की शक्ति है रेल, अस्पताल, डाक, कचहरी, कहत के काम और नित्य के तज-रुबे की कितनीही बातें उनके चित्त पर अपना प्रभाव जमा रही हैं और उनका ज्ञान बढ़ाती रहेंगी। शिक्षा का बड़ा भारी लक्षण यह है कि लोग अपने को समझदार प्रजा समझैं और दास न जानैं और यह समझैं कि प्रजा

होने से उनको राज्यप्रबन्ध में हाथ लगाना उचित है और उसके वह अंग हैं। हिन्दुस्थान के करोड़ों लोगों पर इस महाप्रकाश की कुछ छटा पड़ी है और जो लोग समझदार प्रजा का धर्म समझते हैं उनसे यह कहना चाहिये "तुम जन्मही से अङ्गरेज़ी हिन्दुस्थान की समझदार प्रजा हो, यह बड़ा भारी अधिकार है, अपने हक और अधिकार को न भूलो अपनी ज़िम्मेदारी को भी न भूलो। तुम्हारे ही कामों पर देश का आगम निर्भर है"॥

कै डरपावत दूरसों, गरजि गरजि घन घोर।
कठिन अंधेरे में फिरत, डाइन कुटिल कठोर?
चित दृढ़ करि जगदीस में, करो सदा बिश्वास।
घन सब आप बिलाइ है, ह्वै है डाइन नास॥
जोति धर्म औ ज्ञान की, फैलत ही चहुँ फेर।
उदय होय आनँद अरुण, छटिहै सकल अंधेर॥

इति॥